जंगलपुरी का हैडमास्टर

(शिक्षा प्रहसन)

चौ० मालसिंह

एजेन्ट:—
श्री शिवरतन डागा
आलोक प्रकाशन
बीकानेर

आप और मैं

इस किताब को आप हाथी न समझें। यह हाथी की एक टांग मात्र है।

पक्ष, विपक्ष, नकारात्मक, सकारात्मक, विश्व साइकिल के दो पहिये हैं जो मिल कर इस विश्व को प्रगति प्रदान करते हैं। नकारात्मक अगला पहिया है और कल का सकारात्मक है।

अंतर्राष्ट्रीय बुराई अगर नम्र निवेदन से दूर न हो तो हिंसा का सहारा लेना पड़ता है। इसीलिये सेना है। सामाजिक बुराई जब ढीली भाषा और ढीली अभिव्यक्ति से दूर नहीं होती है तो तीखी अभिव्यक्ति का सहारा लेना पड़ता है। इसीलिये व्यंग है, satire है।

जगलपुरी को आप मगलपुरी न समझलें। जगलपुरी अपने राजस्थान में है। मगलपुरी करोड़ों किलोमिटर दूर अंतरिक्ष में है। मंगलपुरी में रूस ने सात दिसम्बर १९७१ को एक यान उतारा था। जंगलपुरी में आपका लेखक १७ जुलाई १९६१ को पहुंचा था।

इस किताब में पेज १३९ पर बाड़ो का जिकर आया है। १४ और तैतीस ४७ बरस पुराने बाड़े को एक जुलाई १९७१ को छोड़ दिया। जी नहीं लगा। वे साथी कहां, वह मोड़ कहां, वे सुबह श्रोतागण कहां? जीवन भवन का ऊपरी भाग superstructure पूरा का पूरा गया। जी लगने का आधार ही परे हो गया। अब मैं पाठकों के रूप

में, आपके रूप में नई शान छा रहा हूं। आशा करता हूँ छाया ।
जायेगी। पूरे कोड-चार्ज में आपके पोस्ट कार्डों की उडीक कर रहा हूं
अपनायत की अपेक्षा है।

आपकी इस किताब की बोडी (Body) को अशोकचन्द्र
गुप्त और उनके कम्पोजीटर सहयोगी, प्रेमरतनजी (कोडिया महाराज
शकूर मोहम्मदजी, पाबूदानजी, और मशीन मैंन सरदार इन्द्र वीर सि
ने पूरी ममता से गढा है। प्रूफ की मामूली गलतियां रह गई हैं,क्योंकि
मुझे अनुभव नहीं था। मैं ही प्रूफ पढता था।

मास्टरों में चौथमलजी जैन, गजाननजी शर्मा, आनन्द
वल्लभजी जोशी, क्लर्कों में मांगेलालजी शर्मा, जेटमलजी जैन ने जू
१९७१ के बाद भी मेरे साथ बाडापना निभाया है। डॉ. विजयकुमार
चौधरी की माताजी श्रीमती नारायणीदेवी ने आपकी पुस्तक के लिये
धन जुटाया, इन्होंने मोटा खाया, मोटा पहना और यह बचत की। ऐसे
ही कामों के लिये पहले भी इन्होंने मुझे धन बचा कर दिया था।
मास्टर भगवानाराम और रामचन्द्रजी भी धन्यवाद के पात्र हैं। अच्छे
मास्टरों और हैडमास्टरों का विवरण अगली किताब में दिया जायेगा।

दिनांक आपका चाहा, अनचाहा, लेखक, Author,
१२ जनवरी, १९७1 (चौ०) मालसिह

••

जंगलपुरी में प्रवेश

कभी डरते, कभी हिम्मत करते, कभी हां करते, कभी ना करते, अन्त में १५ जुलाई १९६१ की रात को दस बजे जंगलपुरी में जा जूनी भड़काई। किसी सियाने समझदार आदमी को मेजर ओपरेशन के लिये होस्पीटल प्रवेश का हुक्म मिलता है तो उसका दुविधा में पड़ जाना, घर में दो मन हो जाना मचल विकल्प का रूप लिए से जाना है। समझदार आदमी का साथ पेशंट पड़ जाता है। पेशंट अपने मकान की ईंटें देखता है, खिड़की कमरें देखता है घर की वस्तुयें देखता है, बच्चों को और अन्य सदस्यों को देखता है। आंसू छलकाता है, क्या वापिस आऊंगा। समझदार घर वाले सवाल करते हैं ओपरेशन नहीं कराना क्या? पेशंट कुछ सोचकर जवाब देता है आपरेशन तो कराऊंगा। विडीत रूप से सहमत होते हुये भी सिमकता है.

। बोले दो महीने की छुट्टी जाऊगा । थोड़ी देर सोच कर
डमास्टर बोले ग्रच्छी बात है । इस प्रकार जगल पुरी के
डमास्टर ने १७ जुलाई १९६१ को सोमवार के दिन ग्रपने सिर
र चार सीनियर टीचर दो क्लर्क , एक कैशियर का
ाम लिया । बारह ग्रगस्त १९६६ तक वह इस काम
ो अपने गले डाले फिरा । जिसमें उसने १७ जुलाई १९६१
ो प्रवेश किया उसमें उसे बरस मे ३६५ दिन रहना पड़ा ।
क दिन भी उसे खाली नही छोड सकता था । दिन मे कहीं
ाता तो शाम को वापिस आ जाना । डेढ महीने और पन्द्रह
देन के वैकेशन मे उसे उसी कमरे मे, उसी स्कूल मे रहना
ड़ा । चार सिनियर टीचर के साथ तीन गाईस के टीचर का
ाम भी गले में पडी उस झोली मे आ घला । अब जगल पुरी
ा हैडमास्टर ग्रपनी गले पडी झोली मे चार सीनियर टीचर
मैनिटीज के ग्रौर तीन सीनियर टीचर विज्ञान के घाले फिरता
ा। गले में पड़ी इस झोली मे एक यू० डी० सी०, एक कैशियर
एक क्लर्क भी पड़े रहते थे। इस के एक कौने मे क्राफट टीचर,
दूसरे में संस्कृत टीचर, तीसरे मे जनरल साइंस टीचर पड़े
रहते थे । गले में पडी इस झोली मे कुछ खाली स्थान थे ।
इन खाली स्थानों पर वे टीचर ग्राते थे जिनके स्थान समय समय
पर अचानक खाली हो जाते थे । ट्रेनिंग मे चले जाते, कुछ
महीनों के सेमिनार में चले जाते, टूर्नामेंट में चले जाते, घबरा
कर लम्बी छुट्टी पर चले जाते थे । जंगलपुरी के हैडमास्टर के
हमदर्द जानना चाहेंगे कि लड़कों की हाजरी कौन लेता था ।
उन्हें कमरों में कौन बैठाता था । रोला मचाने से कौन रोकता
था । प्रार्थना स्थल पर उन्हे घेर कर कौन लाता था । प्रार्थना
स्थल पर लाइन में कौन खड़ा करता था । लडके कितने थे ।
स्कूल में क्यों आते थे । समय पर आने को कौन कहता था ।

फीसें कौन उगाहता था ? फीसें लड़के क्यों देते थे ? बेती दिनों में भी उजड़ती मेंनी को छोड़ कर आठ किलोमिट चलकर स्कूल क्यों आते थे । गांव वालों ने और लड़कों शासन के विरुद्ध विद्रोह क्यों नहीं किया । क्या यह बात सही है कि मास्टर नहीं थे ? क्या यह बात सही है कि क्लर्क न थे । क्या बात सही है कि स्कूल में पांच सौ लड़के थे औ स्कूल आते थे । क्या यह भी सही है कि जनता ने आवा नहीं उठाई ? क्या यह बात भी सही है कि छात्रों की हाज के रजिस्टर, मास्टरों की हाजरी के रजिस्टर सबके-सब य मौजूद थे । छात्रों के स्कोलर रजिस्टर जिनमें छात्रों की उम्र वल्दियत आदि लिखी रहती थी, वहां सही सलामत थे क्या टेस्ट कौन लेता था ? स्थानीय परीक्षा कौन लेता था । क्यू म्‍ लेटिव रेकर्ड कौन भरता था या आंतरिक मूल्यांकन का रेक कौन भरता था और कौन रखता था । क्या छात्र बोर्ड के परीक्षा में बैठते थे ? क्या पास भी होते थे । ये सब रहस्य की बातें है । राज की बातें हैं जो आगे के पृष्ठों में पढ़ी ज सकती हैं ? जानकार लोग यह प्रश्न भी शायद उठायेंगे कि शिक्षा निदेशक कोई था कि नहीं ? इस प्रश्न का उत्तर त जंगलपुरी के हैडमास्टर की तरफ से दिया जा सकता है कि व अफसर तो था । करता क्या था, यह तो आगे के पृष्ठों में हैं पढ़ा जायगा ।

जब तक निभा, निभाया । जब तक पार पड़ी, बेचार जंगलपुरी का हैडमास्टर झोली को गले में डाले लिये फिरा । झोली भारी होती गई । बढ़ती गई । विस्तार खाती गई । कठिनाइयों का, दु:खों का, अपमानों का, घड़ा भर गया और फूट गया । आगे के विवरण को ज्यों दुनिया पढ़ेगी, रहस्य खुलता जायेगा ।

जंगल पुरी का हैडमास्टर आठ बरस तक कठिनाइयों

दुखों से लड़ता रहा । कभी रोते, कभी हंसते । नवें बरस में प्रवेश होते ही उसने हार मानली, घुटने टेक दिये । आठ बरस की कमाई पर पानी फिरते देखा, तो पत्र पर पत्र देकर उसने अपनी बदली करवाली । अफसर ने सोच समझकर उसे जंगल पुरी नम्बर दो दे दिया । जिस रास्ते से जंगल पुरी के हैडमास्टर ने पच्चासों मास्टरों को भेजा था, उस रास्ते से अब वह खुद निकला । बारह अगस्त १६६६ को उसने बरसते मेंह में वह वह कमरा छोड़ा, वह दफ्तर छोड़ा, वह स्कूल छोड़ी, उन छात्रों को छोड़ा, उस जनता को छोड़ा । एक बरस तक वहां कोई हैडमास्टर नहीं आया । अगस्त १६६६ से अगस्त १६७० तक स्कूल बिना हैडमास्टर के रहा । और स्टाफ ? स्टाफ फुल रहा । यह अनोखा रहस्य ? जंगल पुरी के हैडमास्टर के समय में कोई मास्टर नहीं और बाद में मास्टर पूरे थे और हैडमास्टर नहीं । जंगल पुरी की विचित्रताओं में यह भी एक विचित्रता है जिसका आधार आगे के पृष्ठों में मिलेगा । १६७० की जुलाई में सब मास्टर भाग गये और बाबूलाल जी अग्रवाल हैडमास्टर के पद पर आ गये । १६७१ की जुलाई में बाबूलाल अग्रवाल हैडमास्टरी से धाप कर चले गये ।

जिस दफ्तर में वह आठ पहर बत्तीस घड़ी रहता था, उसमें बिना किवाड़ की आठ खिड़की थी और एक दरवाजा था । दरवाजे पर स्थानीय पेड़ जाटी के दो फाटके लगा रखे थे जिन्हें किवाड़ कहा जाता था । चौखट नहीं थी । कोई भी आदमी उन्हें आसानी से एक क्षण में उतार सकता था । गुस्से में हो तो लात की मार कर तोड़ सकता था । कबीर के जिस पद को स्थानीय लोग बार-बार दोहराया करते थे, उसे उस दिन सही होते देखा ।

नव द्वारे का पींजड़ा, तामें पंछी पौन,
रहे वो अचरज है, गये अचम्भा कौन ।

२

टीचिंग स्टाफ

उसी दिन दुर्गादत्तजी दुर्गादृढ़िया आ गये । कुछ सहारा पहुँचा । दुर्गादत्त से सीमित सहारे की ही आशा थी । उनके अन्य में एक अच्छे मित्र थे । कहना मानकर साथ काम कर रहे, ऐसी हैडमास्टर के नहीं जची । अगले महीने ७ अगस्त १९५१ को अंग्रेजी के रामेश्वर दयाल श्री गुप्ता आ गये । उनसे यार थे अच्छे थे । मित्र भी थे । पर वही सीमित सहारा दे सकते थे । कुछ दिन बाद यानी २१ अगस्त को हनुमान जी आये । मिलना हुआ। बातचीत हुई । जी सोहरा हुआ । दिन प्रति दिन हैडमास्टर के जचती गई कि हनुमान के रहते दूसरे किसी सहारे की जरूरत नहीं, अध्यापकों का छात्रों का नेतृत्व उनके हाथ में था । गांव समुदाय में भी उन्होंने अच्छी छाप, अच्छी इमेज जमा दी थी । हिम्मत बंधी, आशा उठी । काम में ममता आई भवन में ममता आई, स्कूल की

सम्पत्ति से मोह हुआ । छात्र अच्छे लगने लगे, गाव वासियों से भाई चारा शुरु हुआ । आनन्द आने लगा । चार साल का कार्य क्रम बना हैडमास्टरा डाट फट कार लगा देता, हनुमान जी ठंडा मीठा कर देते । घर कूचा और घर मन्जला बैलगाडी चलने लगी । द्वितीय ग्रेड में रामकरण जी आगये । तृतीय ग्रेड में बन्नाराम जी पहले से ही थे । बन्नारामजी की अटल आज्ञा कारिता आज भी वह हैडमास्टर याद करता है ।

स्टाफ की विषयवार स्थिति आगे दी जाती है :—

हिन्दी

१. श्री जटाशंकर अगस्त १९६० में आये और १५ जुलाई १९६१ को चले गये ।
२. दुर्गादत्त जी १७ जुलाई १९६१ में आये और १६ जुलाई १९६२ मे गये ।
३. श्री राम जी यादव १ अगस्त १९६२ में आये और ११ मई १९६३ में गये ।
४. दुर्गादत्त जी दूसरी बार आये और सितम्बर १९६४ मे चले गये ।
५. रामेश्वरलाल जी मिश्रा ६ नवम्बर १९६४ में आये और दिसम्बर १९६४ में गये ।
६. लक्ष्मी नारायण चौहान २२ फरवरी १९६५ को आये और १ जुलाई १९६५ में चले गये ।
७. रघुनाथ प्रसाद मिश्रा १० नवम्बर १९६५ में आये और २५ सितम्बर १९६६ को चले गये ।
८. अशोक कुमार पंत ७ मार्च १९६७ में आये और १६ अगस्त १९६७ में चले गये ।

६. कुंअरपालसिंह जी २० अक्टूबर १९६७ में हाजिर हु
कोशिश करने चले गये और जनवरी १९६८ में आये।

सितम्बर १९६४ के बाद हिन्दी के पीरियड में नवीं, द
और ग्यारहवीं के छात्र कमरे में कभी बैठे ही नहीं, हिन्दी f
ने पढ़ाई ही नहीं। रामेश्वरलाल जी सिर्फ २० दिन ठहरे मो
जाते रहे, कोशिश करते रहे, भाग्य को कोसते रहे। रोना रोते र
मेहरबान अफसर ने सुनी और उद्धार किया। लक्ष्मीनारायण
२२ फरवरी को आये। उस समय दसवीं, ग्यारहवीं कक्षायें
गई थीं। हाजरी नहीं तो छात्र नहीं। यह फॉर्मूला लागू है हैं
लक्ष्मीनारायण जी की किसी ने सुनली और समाज में जा मिले
पाँच महीने हिन्दी का टीचर जगल पुरी के लिये उपलब्ध नहीं
सका। नवम्बर में रघुनाथ प्रसाद जी आये। दुख के मारे, किस
के मारे, दुनिया को और अफसरों को कोसते हुये लाठी के सह
लगडाते, हिलते डुलते जगल पुरी मे बड़े। कुछ स्वभाव से चिड़चि
कुछ जंगलपुरी से चिड़े, कुछ हैडमास्टर से चिड़े, पढ़ाई क्या होती
अन्त में स्कूल के हित में उन्हें राजी भी किया गया। पर इन
में मेहरबान अफसर ने उनकी सुनली। गये। इस बरस भी पढ़ा
नहीं हुई। जुलाई, अगस्त मे रघुनाथ जी बदली के लिये भा
दौड़ करते रहे। सितम्बर मे चले गये। फिर ? फिर क्या !
बस। रघुनाथ जी चले गये। हैडमास्टर पछताया कि उसने एक
अच्छा आदमी खो दिया है। क्या था। स्वभाव ही चिड़चिड़ा
था। आदमी लाखों में एक था। ईमानदार था। राष्ट्र भक्त
था। अच्छा वातावरण होने पर पढ़ाई का काम भी कर सकने की
योग्यता थी। चिड़चिड़े स्वभाव को सहने की आदत हैडमास्टर
में होनी चाहिये, यह पाठ जंगल पुरी के हैडमास्टर ने रघुनाथ जी
को खोकर, कहना चाहिए साल खोकर सीखा।

रघुनाथजी जाने के बाद हैडमास्टर कामले उड़ाता रहा।
 आये, कल आये । देर से आये दुरुस्त आये । पर नहीं ।
ों तरफ से आवाज आने लगी, हैडमास्टर, ६४-६५ का बरस
, ६५-६६ आ गया और ६६-६७ का भी तेरे देखते-देखते जा
 है । हैडमास्टर ने लेटर पर लेटर लिखे आखिर एक आदेश
आया । कुछ शान्ति हुई । दस अक्टूबर १९६६ का आदेश
। श्री उमरावसिंह जी पचेरी बड़ी से २८ अक्टूबर को रिलीव
गये । उमराव जी की जगह रामस्वरूप जी शर्मा पाचेरी बड़ी
 गये । इसलिए उमराव जी को पाचेरी बड़ी से कार्य मुक्त होना
। उधर जगलपुरी में खुशी की लहर दौड़ गई कि पाचेरी
 से उमराव जी आ रहे हैं । वातावरण में शान्ति आई ।
मास्टर कागजे उड़ाने लगा । छात्र लोग हैडमास्टर से राजी
कि हैडमास्टर ने कोशिश की और छात्रों की बात सुनी ।
 नवम्बर को हैडमास्टर ने डाक खोली । उमरावजी ने लिखा
जुकाम बिगड़ कर बुखार बन गया । उमरावजी ने निवेदन किया
पांच नवम्बर तक की छुट्टी देने की कृपा करें । जगलपुरी के
मास्टर को बहुत गुस्सा आया और सोचा कि इन्हें छुट्टी नहीं
गा । बिना वेतन की छुट्टी हो जावेगी और छठी का दूध याद
 जावेगा । ये मास्टर लोग कितने अनुशासनहीन हो गये हैं ।
त्रों का, कर्त्तव्य का कुछ नहीं सोचते । खैर, आयेगा पांच
म्बर । मैं उन्हें छुट्टी नहीं दूंगा । हैडमास्टर ने घमड़ में छात्रों
सामने कहा । छात्र कुछ शान्त हुए कि हैडमास्टर में छात्रों के
ये हमदर्दी है ।

कोई बात नहीं हैडमास्टर जी, फिर देख लेते हैं । देखते
ठ किलोमीटर दूरे रहने से आते हैं । साइकी दौड़ कर आते हैं।
तीन पीरियड पढ़ाकर छोड़ देता है । हमारा सारा दिन खराब

लया है, इतनी कठोर वचन बद्धता Commitment कर ली है, रात पार नहीं पड़ी तो क्या होगा । क्या अनहोनी नहीं हो सकती ? हो क्यों नहीं सकती ? अनहोनी क्या हो सकती है । श्री उमरावसिंह अब पचेरी बड़ी वापिस नहीं लिये जा सकते, क्योंकि श्री रामस्वरूप शर्मा वापिस श्यामपुरा मनाना नहीं जावेंगे क्योंकि वे पाचेरी बड़ी के ही रहने वाले हैं । और यह बात भी है कि श्यामपुरा मनाना में दूसरा टीचर आ गया है । तो वे तीसरी जगह नहीं जा सकते क्या ? लेकिन तीसरी जगह कोई खाली नहीं है । नवम्बर खतम हो रहा है, खाली जगह कहां हो सकती है ? झुन्झुनू में, सीकर में, चूरू में, आदि में पड़ोसी जिलों की जानकारी तो है ही । दूरस्थ जिलों में भी कोई खाली जगह दीखती नहीं है । भय की लहर ऊंची चढ़ती, शिखर पर पहुँचकर फिर नीचे उतरती । भय की तरंगों का उतार चढ़ाव चलता रहा । हैडमास्टर उठा । इस आश्वस्तकारी विचार ने उसे उठाया कि उमरावजी कहीं नहीं जा सकते । उन्हें यहीं जगतपुरी में आना ही पड़ेगा । हां आना ही पड़ेगा । विद्यालय के बीचों बीच एक आम रास्ता था । रात के अन्धेरे में जनता के सदस्य बात करते जा रहे थे यह हैडमास्टर कमजोर है । सरकार और अफसर इसकी बातों पर ध्यान नहीं देते । अपनी कमजोरी ने इसने स्कूल बिगाड़ दिया । दूसरे ने कहा कि आज कहा बताते है कि स्टाफ पूरा कर दूंगा । सुन कर हैडमास्टर घबराया कि जनता का ध्यान उसकी वचन बद्धता की तरफ हो गया है । कहीं अन होनी तो न हो जाय । तेरह नवम्बर भी गया, कल आ जावें, परसों आ जावें । आज नहीं आवें । कोई बात नहीं । कल जरूर आजायेंगे । बस का या ट्रेन का तो रवाज नहीं था । जगत-पुरी में कहां ? इस लिये किसी के आने का कोई बंधा समय नहीं था । कोई किसी भी समय आ सकता था । लड़के इधर से उधर

बरंडों में मैदान में, छतरी के पेड़ों तले फिर रहे थे। हैडमा
छाती पर मूंग दल रहे थे। अधिकारी का एक स्वाभाविक भय
है। निकला सो निकला। गड बड के समय या अधिकारी
किसी कमजोरी के क्षणों में नीचे वाले, मातहत लोग जब
बार स्वच्छन्दता से अधिकारी के सामने घूम फिर लेते हैं, अनु
हीनता कर लेते हैं तो वह प्रवृत्ति चालू रहने की स्थिति में हो
है। स्वाभाविक आदर प्रदानता समाप्त हो जाती है। S
taneous response to authority's Presence सम
जाता है। अधिकारी की विद्यमानता के प्रति स्वय स्फूर्ति भय
रूकता की तीव्रता कम जोर पड जाती है। प्रशासन में अधिका
प्रति स्वाभाविक समादारता की भावना ही काम करती
समादरता गई तो कुछ नहीं बचा। हैडमास्टर को देखते ही
कर्मचारी आदि यथा स्थान चले जाते है। यथा योग करते हैं,
योग स्थिति धारण कर लेते हैं। बस यही हैडमास्टरी है। ज
पुरी के हैडमास्टर की यह हैडमास्टरी क्षण प्रति क्षण समाप्त हो
थी। एक एक क्षण मूल्यवान था। एक एक क्षण हैडमास्टर
समादरता के कण छीन रहा था। आज स्कूल टाइम में ही उमराव
अगर आ जाते हैं तो कल ही छात्रों की उपस्थिति सुधर जायेगी
यदि आज नहीं आते हैं तो उपस्थिति की हालत और भी खरा
जायेगी। जनता भी इतनी जाग्रत हो गई थी कि आर पार ज
रास्ते में औरतें भी कमरों में देखती जाती छोरे नहीं हैं।
खाली पड़े हैं, दो दो चार चार छोरे बैठे हैं। देखो वे छोरे
फिर रहे हैं। स्कूल बिगड़ गया। वे कहती जाती। तेरह
चौदह गई, पन्द्रह गई सोलह गई। तारीखें ही नहीं। सब कुछ
रहा था।

१८ नवम्बर को उमरावजी का फिर लेटर आया, कि
कि कुशाम ठीक नहीं हुआ है। उन्नीस नवम्बर तक हो छुट्टी बढ़ा

हैडमास्टर को क्या गुस्सा आया ? क्या चिन्ता हुई ?
प्रतिक्रिया हुई ?

समुदाय के सदस्य इसकी कल्पना करें। १६ नवम्बर २०
ही गया। २७ नवम्बर को आदेश आया। श्री उमराव
बारे में आदेश आया। यह आदेश क्या था। उसमें क्या
? क्या यह लिखा था कि जगलपुरी का हैडमास्टर दुर्गा
जो के स्कूल को दशा खराब है, इसलिये श्री उमरावसिंह
स्थान हो, अन्यथा उन पर अनुशासन की कार वाई की
नहीं। ऐसा आदेश नहीं था। तो क्या था ? तो क्या
कि यदि जगलपुरी उन्हें पसन्द नहीं है तो किसी दूसरी
ह जायेंगे। नहीं यह भी नहीं था दूसरी कोई जगह राज-
स्वासी की ही नहीं। तो क्या था ? क्या यह था कि उम-
उनके इच्छित स्थान पचेरी बड़ी में रहेंगे और श्री रामस्वरूप
। पचेरी बड़ी में जोइन हो गये थे, जगलपुरी जायेंगे ? नहीं
नहीं था। श्री रामस्वरूप शर्मा भी हार मानने को तैयार
। उन्होंने भी घोषणा कर दी थी कि यदि मुझे पचेरी से
गया तो अधिकारी लो। और सरकार अपनी कुर्सियों
पर नहीं रह सकते। तो फिर आदेश क्या था ? तो सुनो।
न लिखा था कि हिन्दी के दोनों टीचर रामस्वरूप जी शर्मा
उमरावसिंह जी यादव पचेरी बड़ी में ही रहेंगे। हिन्दी के दो
टीचर पचेरी में रहेंगे। ग्यारवीं क्लास में पचेरी में छात्र
थे ? जगलपुरी से थोड़े थे और एक ही सेक्शन था। क्या
बात है कि पचेरी में दो सीनियर टीचर कर दिये ? हां
यह बात सही है। [illegible] नहीं बात थी ? किसी
ही।

[illegible] पचेरी में
[illegible] था ? क्या

होता ? क्या होना चाहिये था ? आगे कुछ कल्पना की होती पर यह कल्पना गलत है। जंगलपुरी के विषय में कोई कल्पना नहीं हो सकती। जंगलपुरी के बारे में यह था कि २३ अक्तूबर १६६ वाला आदेश रद्द किया जाता है। श्री उमरावसिंह के लिये पचेरी मे नई अधिक यानी प्रतिरिक्त पोस्ट दी जाती है। और जंगलपुरी के लिये ? एक भी नहीं। तो क्या कोई दूसरा आदेश था क्या जिस जंगलपुरी के लिये कोई टीचर भेजा हो। नहीं। कुछ नहीं।

तबियत को सम्भाल कर, हिम्मत भेजी करके, हैडमास्टर ने गांव वासियों की और छात्रों की सभा की। उसने समझा कर बताया कि मास्टर की बदली पर मेरा कोई कट्रोल नहीं है। मास्टर भेजना सरकार का विभाग का काम है अधिकार है। हैडमास्टर इस विषय में कुछ नही कर सकता। वह बोला मै दोषी और अपराधी नही हूँ। जनता के सदस्यों की तरफ से कहा गया कि सरकार विभाग से टीचर लेने की हैडमास्टर में ताकत होनी चाहिये। हमारा लीडर में ताकत थी और स्कूल खुलवादी। यह सही बात है कि हैडमास्टर की सुनी नहीं जाती। हैडमास्टर को चाहिये कि बदली कर वाले। बदली बदली की आवाज में सभा समाप्त हुई। कई इधर उधर से आये। आगे की कहानी समाज की कल्पना पर छोड़ी जाती है।

क्या जंगलपुरी मे टीचर नही आया ? आया होगा। खाली तो कैसे रहता। खाली गया। कोई नही आया। लेकिन घाव पर नमक न छिड़का जाय तो बात पूरी कैसे हो। सात मार्च १९६७ को श्री अशोक कुमार पत बिना मांगे और बिना बुलाये आगये। सरकारी स्कूल जो था। हैडमास्टर की क्या ताकत कि अशोक कुमार को डियूटी पर न लें। दसवी ग्यारहवीं दोनो कक्षायें बोर्ड की परीक्षा देने परीक्षा केन्द्र पर ३२ किलो मीटर दूर चली गई थी। अशोक कुमार जी खाली बैठे रहते। जगलपुरी मे अशो

जी का मन नहीं लगा। जल्दी बैकेशन आगई । अशोक जी घर चले गये। स्कूल खुलने पर जब छात्र आये तो अशोक जी बदल कर चले गये। कस्बों में जा मिले। अच्छे शहर में अशोक जी चले गये जहाँ उनका मन लग गया और उनको बदल कर शिक्षा निदेशक खुश हुआ कि उसने एक और व्यक्ति की इच्छा पूरी की। अफसर ने सोहरी मांग लो कि उसने अपना फर्ज निभाया। समाज बड़ा या व्यक्ति? समाज का हित पहले या व्यक्ति का? यह विश्व के सामने है। राष्ट्र संघ के १६० सदस्यों के सामने है। व्यक्ति को लाभ पहुँचाने के लिये व्यक्ति की सनक पूरी करने के लिये समाज को किस प्रकार नुकसान पहुँचाया जाता है, उदाहरण प्रस्तुत है। व्यक्ति और समाज के हितों में कहाँ विरोध है, यह तथ्य सामने है। अधिकारी की सनक पर Subjectivity पर समाज की तरफ से रोक लगाना कितना जरूरी है, यह जनता जनार्दन के सामने है।

अशोक जी गये, पर जाते जाते हैडमास्टर की बची खुची इज्जत को ठेस पहुँचा गये। छात्र और उनके माइन स्कूल में आ जमा हुये। कहने लगे हैडमास्टर मुक्ति पत्र रिलीविंग लेटर मत दे। एल.पी. सी मत दे। अब की बार अगर तूने हमारा कहना नहीं माना तो देखले तेरी क्या गत बनती है। हैडमास्टर ने उनकी बात उचित समझी और वचन दिया कि अच्छा नहीं छोड़ूंगा। परन्तु जीवन इतना सरल नहीं है कि कठिनाइयों का समाधान जो आपने दूंडा है सही है और लागू होने लायक है। घटनाओं के बहुत पक्ष होते हैं हैडमास्टर का निर्णय मनोरंजन यानी एक पक्षीय साबित हुआ। हैडमास्टर खुश हुआ था कि आखिर वह भी अब शिक्षा निदेशक को एक पाठ पढ़ा-येगा। पर खुशी ज्यादा देर तक नहीं टिक सकी। मास्टरों की टोली आ पहुँची। घेराव, हड़ताल, कलम रोको हड़ताल चाक रोको हड़ताल, सामाजिक बहिष्कार, सविनय अवज्ञा, असहयोग आदि

सभी विषय के आंदोलनों का साथ मास्टरों ने दिया । अर्जेन्ट ी को छोड़ना पड़ा । जनता को कैसे खुश किया गया, हाथों के नि निपटा गया, यह कल्पना पर छोड़ा जाता है । सातवां मास्टर भाया ? श्री कुमार पाल जी २० अक्तूबर को आये । कुछ का गये । छुट्टी की अर्जी भेज दी । १९६८ के जनवरी में आये । य केवल हिन्दी के मास्टरों की स्थिति पर है । अन्य विषयों के टीच की स्थिति कैसी रही आगे पढ़ें ।

निदेशालय के अधिकारी और शिक्षा मंत्री आदि कहें कि जगतपुरी का हेडमास्टर क्यों बनता है कि टीचर रहे ही नहीं। आंकड़ों से और तथ्यों से पता चलता है आधे समय यानी १० ए संट दिनों के लिये मास्टर रहे परन्तु कभी कभी और बीच बीच में मास्टर आते रहे वे हानि पहुँचा कर जाते । नहीं आते तो आने से कहीं ज्यादा अच्छा होता । इस हानि का स्पष्टी करण यह है :—

१. खाई खुदाने वाले इस चार्ज और पढ़ाई कराने वाले इस चार्ज में फर्क कम नहीं है । जब जब खोदने वाला आयेगा, खुदाई इस चार्ज खाई खुदवायेगा और खोदने वाला राजी खुशी खोद देगा । शाम को अपनी दैनिक मजदूरी लेके चला जायेगा खाई भी राजी खुशी खुद जायेगी । खाई इनकार नहीं करेगी । खाई का खुदने में मन न लगने का सवाल नहीं और खोदने वाले का मन न लगने का सवाल नहीं टालने का भी सवाल नहीं । अधकचरा काम करने का भी सवाल नहीं। खोदने वाला फावड़ा मारेगा और मिट्टी कटेगी ।
२. कभी कभी मास्टर आयेगा, बदल बदल कर आयेगा, बीच बीच में आयेगा, आदत की भिन्नता, तरीकों की भिन्नता, जान कारी की, ज्ञान की भिन्नता, मुश्किल में आया हुआ आज कल में वापिस जाने वाला, परिवार विहीन, मकान

विहीन, मास्टर नही पढ़ायेगा। लड़कों के समझ में नही आयेगा, मन नही लगेगा। पढ़ाई में मनोवैज्ञानिक परिस्थिति का निर्णायक प्रभाव पड़ता है।

कभी कोई मास्टर आयेगा, कभी दूसरा आयेगा, कभी तीसरा आयेगा, उसे लड़कों के पूर्वज्ञान की जानकारी नहीं होगी। लड़कों को गुणा नहीं आता। मास्टर भाग सिखा गया। कड़ी टूट जाने के कारण पढ़ाई आगे नही चलती। कड़ियों की अटूटता पढ़ाई का अटल सिद्धांत है।

जंगलपुरी में प्रोमोशन पाये नये मास्टर आते हैं, कोर्स की जानकारी नही होती। कुछ का कुछ ही पढ़ाये चले जाते हैं। नई प्रणाली के पठन पाठन और परीक्षा प्रणाली को जानने का सवाल ही नही ?

हैडमास्टर कहता है, मास्टर जी क्लास मे जाओ। मास्टर कहता है बस अब ओर्डर आने वाला है, बस अब छुट्टी लेके जाऊंगा बदली करवा लूंगा, अजी कोर्स का तो पता नहीं क्या पढ़ाऊ, लायब्रेरियन को कहा है मिलेबस वाली किताब दे। वह कहता है कोई ले गया है। अजी साहब क्लास कॉपी नहीं मिली। किताब बिना कैसे पढ़ाऊं। मैं लड़कों से नहीं मांगता। लड़कों से किताब मांग कर पढ़ाना सिद्धांत विरुद्ध है। अजी साहब भूखा मरता हूं। रात की नींद बाकी है। पानी नहीं है, लकड़ी नहीं है, चूल्हे के लिये ईंटे नहीं हैं। आटा पीसने के लिये चक्की नहीं।

हैडमास्टर कहता है मास्टर जी लड़के रोला करते हैं। इन्हें पढ़ाओ जिससे रोला बंद हो। यह जवाब मिलता है, अजी

साहब यहाँ के लड़के खराब हैं। म्रुग नहीं रहते औ
हुये विना मैं पढ़ाऊंगा नही।

७. हाथा जोडी करके किसी को परीक्षा के रिकार्ड का इ
बनाया। नये भरती हुये लड़कों के स्कोलर रजिस्टर
चढाने का इन चार्ज बनाया। कल बदली का आदेश
बीच मे ही कागज पटक भाग गया।

इस प्रकार आ आ कर जल्दी ही चले जाने वाले
के दुश्मन होते है, हैडमास्टर के दुश्मन होते है। हा मि
महोदय के मित्र होते है।

जंगनपुरी में होने वाली इस बरबादी का विस्ता
आन्यत्र विवरण दिया जायेगा।

साहब यहां के लडके खराब हैं। चुप नहीं रहते और चु
हुये बिना मैं पढाऊंगा नहीं।

७. हाथा जोडी करके किसी को परीक्षा के रिकार्ड का इन चा
बनाया। नये भरती हुये लडकों के स्कोलर रजिस्टर में ना
चढाने का इन चार्ज बनाया। कल बदली का आदेश आया
बीच में ही कागज पटक भाग गया।

इस प्रकार आ आ कर जल्दी ही चले जाने वाले स्कू
के दुश्मन होते है, हैडमास्टर के दुश्मन होते है। हां निदेश
महोदय के मित्र होते है।

जंगलपुरी में होने वाली इस बरबादी का विस्तार
आन्यत्र विवरण दिया जायेगा।

●●●

३

नागरिक शास्त्र

१९६० मे शाला शुरु हुआ। १९६१ मे भवन बना था। जंगलपुरी के हैडमास्टर को स्कूल खाली मिला था। १९६१ में कुछ अध्यापक आये थे। लेकिन नागरिक शास्त्र का टीचर नहीं आया था। १९६२ के जुलाई अगस्त में जोर लगाया। हैडमास्टर निराश होकर बैठ गया। अपने ढंग से उसने काम शुरु कर दिया। अचानक ही २६ अगस्त १९६२ को छोटे लाल शर्मा रात को नौ बजे खट खटाने लगे। मिले। गले से मिले। उसी दिन की हाजरी लगा दी। बोले सिपाही बैठा रहा। सोचा कोई सवारी गधा, भैंसा, ऊंट आदि मिल जाये, पर कुछ नहीं मिला। बोले परिवार

दी है। १९६७ से आज तक यही ३१ दिसम्बर है। मास्टर के आने पर मानों जंगलपुरी में बिरमा हो जाती है। इसीलिये कु होकर हैडमास्टर आगे पीछे हाजरी कर दिया करता था आर० एस० आर० की जगह आठ बरस में बी० एस० आर बन गया।

छोटे लाल जी के आ जाने के बाद हनुमान जी की टी पूरी हो गई थी। सबका भोजन एक जगह हो, सब लोग ए जगह रहें, यह आयोजन भी हनुमान जी ने कर दिया। कोठड़ी ढंग से बने कच्चे कमरों में सब लोग रहने लगे। फर्श की मिट्टी पानी छिड़का तो वह कुछ जम गई।

लेकिन काम कोई जमने थोड़े ही देता है। शांति से र वाले, बसने वाले कबीलों को हमेशा खदेड़ा गया है। छिन्न-भि किया गया है! दस जुलाई १९६५ को हनुमान जी के जाने बाद १९ जुलाई १९६५ को श्री छोटे लाल जी भी चले गये टीम बिखर गई, स्कूल बिखर गई।

चार महीने स्कूल खाली रहा। सोलह अक्टूबर १९ को बृजमोहन तिवाड़ी आये। हाजरी देकर चले गये। फिर नवम में आये। पांच सितम्बर १९६७ को बृजमोहनलाल जी भी गये सितम्बर में वेट किया और अक्टूबर में वेट किया। मास्टर आये, पर आदेश बहुत आये। २८ सितम्बर १९६७ के एक आ के अनुसार श्री महेश स्वरूप भटनागर जंगलपुरी के लगाये गये। भटनागर जी ने इनकार कर दिया। साफ दिया कि जंगलपुरी नहीं जाऊंगा। महेश जी की बात मान

कि प्रोमोशन तो चाहता हूं और इसलिये कार्य मुक्त हुआ हूं, पर जंगलपुरी नहीं जाऊंगा । दूसरी जगह चाहे कहीं भी भेज दो, जैन जी बोले । जैन जी की बात सही पाई गई, मान ली गई । उन्हें फिर देसूरी जिला पाली में, उनके जिले भरतपुर से बहुत-बहुत दूर लगा दिया गया । सोचा गया जंगलपुरी के लिये उपयुक्त कौन है । श्री ओम प्रकाश कुमावत सही पाये गये । ओम प्रकाश जी कुमावत २८ अक्टूबर १९६७ को शाम के समय जंगलपुरी पहुँचे । उस दिन दिवाली की वैकेशन हो गई थी । सब टीचर, सब बाबू, चले गये थे : चपरासी आदि अपने अपने खेतों में चले गये थे । जंगलपुरी का हैडमास्टर एक मात्र स्कूल में था । फिर भी हैडमास्टर ने उन्हें ड्यूटी पर ले लिया, जिससे कि दिवाली वैकेशन की तनखा उन्हें मिल जायें, दो बरस पहले बृजमोहनलाल जी को भी इसी प्रकार आखिरी दिन की शाम को ड्यूटी पर लिया था । जंगलपुरी का हैडमास्टर हर समय स्कूल में रहता था । वह वैकेशन में भी स्कूल में ही रहता था । वह कहीं नहीं जाता था । जा भी नहीं सकता था । सो ओम प्रकाश जी की कहानी यह है ।

देसूरी जिला पाली में सिविक्स की जगह खाली हुई । महात्मा गांधी हायर सेकंडरी स्कूल जोधपुर के सेकड ग्रेड टीचर जेठमल पुरोहित का सिविक्स में प्रोमोशन का नम्बर आया । उन्हें देसूरी जाने का आदेश हुआ तो जेठमल जी बोले मैं देसूरी में नहीं रहना चाहता । उनको सेकड ग्रेड में उतार दिया और देसूरी में जगह खाली हुई । इस खाली जगह पर ओमजी गये । ओम जी बायलोजी में बी० एस० सी० थे ।, साभर में साइंस के टीचर थे

कि मैं देसूरी में रहने के लिये तैयार हूं और मेरा उतारने क
आदेश वापिस लिया जाय। जेठमल जी की बात मही मान
गई। उतारने का आदेश वापिस लिया गया। जेठमल जी देसू
पहुँचे। ओमजी उतार दिये गये और माण्डर बील में भे
दिये गये।

इधर रामेश्वर प्रसाद शर्मा जालिया दो जिला अजमे
के कहने लगे कि उन्हें जालिया पसन्द नहीं है। उन्हें मसूद
जिला अजमेर पसंद है। सो वे मसूदा गये और ओमजी जालिय
दो में पहुँचे।

इधर देसूरी जिला पाली में एक नई बात कि
हो गई। श्री जेठमल पुरोहित घटना नायक फिर बन गये
कहने लगे कि मैं सिनियर टीचर भी रहना चाहता हूं। और
जोधपुर में महात्मा गांधी हायर सैकंडरी स्कूल में ही रहना चाहत
हूं। दूसरी जगह देसूरी आदि मुझे नहीं जचती। लेकिन जोधपु
में कहीं भी खाली जगह नहीं थी। अब क्या किया जाय? जोधपु
के महात्मा गाधी हायर सैकंडरी स्कूल मे एक नई जगह दी गई
यानी मिविक्स के अनेक टीचर कर दिये गये। पुरोहित जी
जोधपुर गये। देसूरी खाली हुई। ओम जी देसूरी गये।
दिनांक १७ अक्टूबर १९६७ के अनुसार ओमजी परिवार सहित
देसूरी दूसरी बार पहुँचे। परन्तु जैसा कि पहले बताया जा चुका
है कि फूलचन्द नदवई से कार्य मुक्त हो चुके परन्तु जंगलपुरी
नहीं जाना चाहते थे। फूलचन्द जी का निवेदन सही पाया गया और
उन्हें देसूरी जाने का आदेश दे दिया गया। दिनांक २३ अक्टूबर
का आदेश और दिनांक २४ अक्टूबर का तार ओम जी के पास

पश्चिम से सुदूर उत्तर पूर्व में लुहारू के पास पहुँचना था । परिवार को वहीं छोड़ा और दौड़े । शाम को पहुँचे । बोले हैडमास्टर, आज की हाजरी कर । हैडमास्टर ने कहा अच्छा आओ । ओमजी हाजरी लगाकर चल दिये । दिवाली के बाद आये । भले आदमी थे । छः महीने रहे । दस जुलाई को चले गये । दस जुलाई १९६८ को फिर कुये मे पड़ गई स्कूल । पाच महीने कोई नहीं आया । इस बरस जयलपुरी का हैडमास्टर अपार और बेइलाज कठिनाइयों मे फंस गया था कि नागरिक शास्त्र की बात ही भूल गया । नागरिक शास्त्र के मास्टर का न होना तो मानो कुछ कठिनाई है ही नहीं । इस विषय पर छात्रों का रौला, उनके माइतों का रौला तो मानो झूठी शिकायत है, मानो अनुचित बोलना है । इन लोगों की मानो झूठी बकवास है । यह वह बरस था जब हैडमास्टर दु:खों के प्रति बेसुध हो चुका था ।

कौन सी छोटी चिन्ता है, कौनसी बड़ी चिंता है, कौनसी वस्तु गत है, कौनसी मनोगत है, यह निर्णय लेने मे मानव असमर्थ है । आज की बड़ी चिंता कल की छोटी चिंता हो जाती है क्योंकि एक नई चिंता आ आसीन हो गई है जो कहती है बड़ी मैं हू । इधर देख, मेरी सुन, सावधान हो जा । लेकिन दो दिन बाद तीसरी आती है और कहती है, सुने हे मानव, आज तक मजे किये हैं । अब बोल क्या कहता है । समय पर क्यों नहीं चेता । अपने आप पर यह दुस्साहस क्यों किया था ? अब भुगत अपनी करनी को । १९६८ की ये क्या घटनायें थी जो किसी भी महारथी को हिला सकती थी आगे के पृष्ठों में खुलती जायेंगी ।

सो नागरिक शास्त्र के मास्टर जी ओमजी गये। और ओमजी

बहुत सम्पन्न स्कूल बना रखा है। मसूदा में खाली जगह कैसे मिली कि श्री चांद बिहारीलाल श्रीवास्तव मसूदा आना नहीं चाहते थे। श्री चांद बिहारीलाल श्रीवास्तव पोद्दार हायर सेकण्डरी स्कूल जयपुर में द्वितीय श्रेणी में अध्यापक थे। इनका प्रोमोशन आया। ये बोले, प्रोमोशन लेना चाहता हूं, पर मसूदा नहीं आना चाहता। पोद्दार स्कूल जयपुर की तुलना में मसूदा स्कूल हल्का पड़ता था। शिक्षा विभाग ने चांद बिहारी जी की बात तो नहीं मानली, पर जयपुर में सिविक्स मास्टर की जगह नहीं थी। पहले से ही वहां पोद्दार में, दरबार में, मानक चौक आदि में बहुत अधिक अतिरिक्त पोस्टें दी जा चुकी थी। लेकिन उनकी बात नहीं मानी गई इसलिए जयपुर के पास ही सांगानेर उन्हें लगा दिया गया, इस वचन बद्धता के साथ कि जल्दी ही उन्हें पोद्दार आदि में जयपुर में ही ले लिया जायेगा।

● ★ ●

४

अंग्रेज़ी का टोना

१. रामेश्वर दयालजी गुप्ता ७ अगस्त को आये
इनकी बात नहीं मानली गई और ये बदन कर निपाना
गये। १० जुलाई १९६२ के दिन जारबुरीवाले की माँ
है कि ये और इनका परिवार गधों पर बैठ कर नहीं आना च
थे। बहुत कोशिश की, पर दूसरी सवारी नहीं मिल सकी
उन्हें गधों पर ही आना पड़ा। अन्य लोग जो गये उन्होंने
विशेष आपत्ति इस सवारी पर नहीं उठाई थी।

२. प्रेमसिंहजी ८ जुलाई १९६२ को आये थे
२२ नवम्बर १९६५ को बस्ती में बसने चले गये। प्रेमसिंह
हनुमानजी की टोली के आदमी थे। उनके जाने के बाद इन
मन नहीं लग रहा था। अच्छे मास्टर और अच्छे व्यक्ति थे। प्रेम

के जाने के साथ ही हनुमानजी की परम्परायें खतम थी। १९६५ का अत स्कूल के विकास का शिखर था।

३. अर्जुनप्रसाद गुप्ता २२ दिसम्बर १९६५ को आये और २६ अगस्त १९६६ को बस्ती मे जा मिले।

४. मोहनसिंहजी उदावत २६ अगस्त १९६६ को आये और ४ मार्च १९६७ को ट्रेनिंग मे चले गये। श्री मोहनसिंह जी के ट्रेनिंग मे जाने का जगलपुरीवाले ने बहुत विरोध किया। उनके इस विरोध का मास्टरों ने और अधिकारियों ने दूर दूर तक और जोर जोर से बहुत प्रचार किया। कहा गया यह जगलपुरी वाला गवार है। इसको क्या पता ट्रेनिंग क्या होती है और इससे क्या लाभ है ? खुदने कभी ट्रेनिंग ली नहीं। दूसरों की ट्रेनिंग का विरोध करता है। विभागीय अधिकारियों से सहयोग नहीं करता है। शिक्षा और शिक्षा विभाग का विरोधी है। विभाग को बदनाम करता है।। मजाक उड़ाने के सदर्भ मे हैडमास्टर के उस विरोध का बार बार शिक्षा जगत मे जिकर होता रहा। जंगलपुरी वाले की सुनने वाला कोई नहीं था। वह गला फाड़ता था, रोता था। चारो तरफ से तिरस्कार, चारों तरफ से व्यग्य, ताना कसी। सब जगह ही उसकी शिकायतों पर उसकी Grievances पर बदले मे उसे मजाकबाजी Ridicule, ही मिलती थी। वह कहता था यह ट्रेनिंग मेरी स्कूल के काम नहीं आयेगी। मेरे छात्रो को अब कौन पढायेगा, उनको कौन सम्भालेगा। खाली हो कर अब ये बच्चे उत्पात मचायेंगे, स्कूल को खराब करेंगे, व स्कूल बिगडने से मेरी बदनामी होगी। मास्टर की मेहनत, लगन, और छात्रों मे ममता की जरूरत है, ट्रेनिंग की नही। सात महीने तक दूसरा मास्टर नहीं आयेगा और शायद मोहनजी खुद भी नहीं आयें। मोहनजी को कार्य मुक्त करना पड़ा। मोहनजी राजी थे। अजमेर मिलेगा,

बस्ती मिलेगी, सरमग मिलेगा और आगे बढ़ने के लिये सम्पर्क और ट्रेनिंग मिलेगी।

हैडमास्टर का विरोध सिद्धांतों पर तो था ही। मोहनजी एक ऊंचे स्टैण्डर्ड के आदमी थे। ऊंचे विचार थे। मानवता थी, उनमें चरित्र था। वे उनके विद्यालय के गौरव थे पर जंगलपुरी के भाग कहां जो वे टहरते। गये।

५. मोहनसिंहजी दूसरी बार:—आखिर ३ अक्टूबर १९६ को मोहनजी आ गये। जंगलपुरी वाला फूला न समाया। उनके आने से स्कूल का वजन *Stature* बढ़ गया। हनुमानजी की कमी कुछ मात्रा में कम हुई। पर सुख से कौन रहने देता है। १९ दिसम्बर १९६७ में मोहनजी चले गये। मोहनजी बिना घटना के नहीं गये। थोड़ा पहले हिन्दी टीचर को कार्य मुक्त करके हैडमास्टर पछताया था। उसने अब जनता से और छात्रों से और अपने खुद से यह वचन कर लिया था कि अब से आगे वह किसी टीचर को रिलीव नहीं करेगा। हैडमास्टर ने मोहनजी को रिलीव करने से इनकार कर दिया।

उनकी बदली का आदेश दिसम्बर के शुरु में ही आ गया था। कुछ दिन हैडमास्टर ने बताया ही नहीं कि ऐसा आदेश आया है। पर निदेशक ने तार पर तार भेजे कि उन्हें रिलीव किया जाये। मोहनजी खुद जा कर निदेशक महोदय से आग लेटर ले आये। अनुशासन की कारवाई की डांट फटकार भी उसमें थी। पर हैडमास्टर अड़ा रहा। मोहनजी ने अपना आखिरी हथियार बरता। मास्टरों ने आ घेरा, हैडमास्टर ने घुटने टेके। चारों तरफ तालियां बज गई। सारे गांव में चर्चा फैल गई कि हैडमास्टर स्कूल का दुश्मन है। मास्टरों से डर कर स्कूलों को और लड़कों को नुकसान पहुंचाता है, इनको समझाते हैं। मदद का वचन देते

हैं। पर हर बार मास्टरों से डर जाता है। जो हैडमास्टर मास्टरों से डरेगा वह क्या पढ़ाई करवाएगा। मास्टर हैडमास्टर से डरें या हेडमास्टर मास्टरों से डरे। कभी भूला भटका मास्टर आता है तो उससे पढ़ाई नहीं करवा सकता। छुट्टी दे देता है। बदली का मुक्ति पत्र दे देता है। यही नहीं। गाजे बाजे के साथ मास्टरों को बीहर करता है।

हुआ वही। मोहनजी को गाजे बाजे के साथ बीहर किया गया। छात्रों सहित हैडमास्टर खुद एक मील पहुँचाने गया। जगल मे अन्तिम विदाई मिटिंग की। मोहनजी चले गये।

६. भंवरलालजी दइया आये। सितम्बर १९६८ मे भंवरलाल जी बदल कर चले गये। अच्छा आदमी था पर चला गया। इनके विषय में किसी दूसरे गभीर संदर्भ मे लिखा जाएगा। यहां इतना ही काफी है।

फिर मुसीबत आई। कोई मास्टर नहीं। लाख जतन किये पर पार नहीं पड़ी।

७. ३० सितम्बर १९६८ के आदेश के अनुसार श्री शंकरलाल बागता स्कूल चूरू से आने तय हुये। चारो तरफ खुशी की लहर दौड़ गई कि बागता स्कूल चूरू से आरहा है। लगन वाला आदमी होगा।

हैडमास्टर ने कहा चूरू की स्कूल का आदमी जंगलपुरी आ रहा है। धन्य घड़ी, धन्य भाग। हैडमास्टर का खुद का क्षेत्रीय लगाव था उस इलाके से। कुछ बातें होंगी, साथ होगा। शंकरलालजी नहीं आये। बोले नहीं जाऊंगा। वे बोले कि यह बात नियमानुकूल और शिष्टाचार के अनुकूल नहीं है कि बिना कसूर किसी आदमी को जंगलपुरी भेजा जाये। इतना कहकर लगा दिए

और अपनी छुट्टी लेकर और अपना काम सौंप करके जगलपुरी का हैडमास्टर पुनः निरंजनानन्द पहुँचे। ३० अक्टूबर १९६८ को गुरु के इन्सपेक्टर को तार दिलवाया कि शंकरदासजी को रिलीव करो। तीन अक्टूबर आये तार का असर हुआ। गुरु के हैडमास्टर ने ६ नवम्बर १९६८ के दिन शंकरदासजी को रिलीव कर दिया फिर खुशी की लहर उठी। पर शंकरदासजी नहीं आये। उनकी युक्ति साफ थी कि जगलपुरी इन्सानों और मास्टरों के लायक नहीं है। अंत में उनकी दलील सही मान कर स्वीकार कर ली गई और उनकी बदली का आदेश कैंसल हुआ। जगलपुरी का हैडमास्टर जगलीपुरी के नेताओं के सामने क्या मुंह लेकर पहुँचता, प्रार्थना स्थल पर किस मुंह से छात्रों के सामने खड़ा होता, यह कल्पना का विषय है। आपस मे धीरे धीरे चर्चा होती, मैं कह रहा था कि इस हैडमास्टर से कुछ नही होगा। इसकी कोई नहीं मानेगा, यह अपनी बदली भी नही करवा सकता। दूसरों को यह क्या छात्रों को क्या निहाल करेगा आदि आदि।

८. आठवें मास्टर आये रिछपालसिंहजी। २५ नवम्बर १९६८ को, भंवरलालजी के जाने के तीन महीने बाद श्री रिछपालसिंहजी प्रोमोशन पा कर आये। २५ नवम्बर १९६८ की वह रात। दस बजे थे। हैडमास्टर का दफ्तर। हाँफते हुये आये। बोले आज ही ड्यूटी पर लो। यह हनुमानजी का लैटर है। आपके नाम। हां, ले लूंगा, हैडमास्टर बोला। दस्तखत हो गये रिछपालजी ठहरें कहां, सोवें कहां ?

रिछपालजी २२ नवम्बर १९६८ को आये और १० मई १९६९ को चले गये। पांच महीने ठहरे। रिछपालजी के जाने का आदेश मार्च में ही आ गया था। जगलपुरीवाले ने किसी को भी बताया नही। वह अनुभव से जानता था कि दूसरा आदमी आयेगा नहीं।

६. २८ मार्च १६६६ का तार और इसी दिनांक का एक पूरा आदेश आया था कि श्री रामरतन हर्ष जंगलपुरी अंग्रेजी सिखाने जायेंगे। श्री हर्ष ने हैदराबाद में अंग्रेजी की विशेष ट्रेनिंग और सिलाई ली थी। आखिर हैडमास्टर ने यह रहस्य खोला कि रामरतनजी हर्ष आयेंगे और उन्होंने हैदराबाद में विशेष ट्रेनिंग पाई है। किसी ने नहीं माना कि रामरतनजी यहां आयेंगे। आखिर १४ अप्रैल १६६६ को आदेश हुआ कि रामरतनजी की बदली केंसल की जाती है। उसमें यह भी था कि रामरतनजी जंगलपुरी तो जाना नहीं चाहते और दूसरे किसी स्कूल में अब जगह नहीं है। इसलिये रामरतनजी को विशेष प्रकार की छुट्टी दी जा सकती है। श्रीरामरतनजी ने निदेशक को बताया कि जंगलपुरी का सुनते ही उनकी तबियत खराब हो गई। विभाग ने उनकी बात को उचित ठहराया। और उन्हें विशेष छुट दे कर जंगलपुरी में पैर रखने से बचाया। रामरतनजी के प्रति उदारता के लिये विश्व-समाज, राष्ट्र संघ उन्हें धन्यवाद नहीं देंगे। विभाग की उदारता और सहानुभूति का यह पन्द्रहवां उदाहरण था। रामरतनजी १६६१ के बाद नये अंग्रेजी के मास्टर थे।

१०. मातूरामजी—ये दस मई को आये। इनके आने का कारण यह था कि इनका हैडमास्टर इनसे नाराज था। वह हैडमास्टर निदेशक महोदय का सम्बन्धी था। इसलिये वे जंगलपुरी आये। ये १० मई १६६६ में आये और जुलाई १६७० में चले गये।

शिक्षा निदेशक, शिक्षा मंत्री आदि कहेंगे कि बहुत मास्टर आये। आठ बरस और २७ दिन में दस मास्टर आये। फिर और क्या चाहिये ? जंगलपुरीवाला क्यों कहता है कि मेरे पास मास्टर

नहीं रहे । जंगलपुरीवाला कहता है कि इस प्रकार आने जाने वाले का सकारात्मक रोल नहीं हो सकता । सही अर्थ में इनका रोल नकारात्मक, विध्वंसात्मक, विनाशात्मक, खंडनात्मक रहता है। यह यों है:—

१. जंगलपुरी में आने वाले को बदली करवा लेने की पूरी आशा रहती है । वह प्रोमोशन सही करने के लिए आता है दो दिन ठहरता है । कम्यूटेड लीव लेता है । कभी जयपुर, कभी बीकानेर, कभी चालूमूल्यवाले नेता आदि के यहां चक्कर काटता है । कभी बीच बीच में जंगलपुरी में आ जाता है । अंत में सफलता मिलती है और टीचर चला जाता है । हैडमास्टर कहता है मास्टरजी, क्लास में जाओ । जवाब मिलता है, अजी साहब क्यों कटे पर नमक फेंकते हो । पहले से ही दुखी हैं । आप ही बताइये पढ़ाने का मन लग जायेगा ? बस अब आदेश आने वाला है।

२. अजी साहब नया प्रोमोशन पा कर आया हूँ, तैयारी नहीं है, कोर्स—पाठ्य-क्रम की जानकारी नहीं है । किताबें पाठ्यपुस्तक भी नहीं है । लायब्रेरी आपकी बंद है । लायब्रेरी की चाबी जिनके पास है, वे मास्टरजी कह रहे थे, किताबें अभी आई नहीं हैं । लड़कों से किताबें लेकर पढ़ाना ठीक नहीं हैं। क्लास में कुर्सी नहीं है। खड़ा खड़ा थक जाता हूँ, किवाड़ है नहीं, कोई डस्टर उठा कर ले गया । जंगलपुरीवाला चला जाता है ।

३. हैडमास्टर खाई खुदाने वाला फार्म मैनेजर नहीं होता कि इतनी गहरी, इतनी मोटी, इतनी चौड़ी खाई खोद दी गई और सामको दैनिक मजदूरी दे दी गई । मास्टर सरकारी नौकर है, जानता है, खाली बैठना निभ सकता है । बिना मन लगे आदमी खाई खोद सकता है, बिना मन लगे खाई खुदाई जा सकती है,

और सही बात यह भी है कि खाई खुद भी सकती है। खाई खुद भी इनकार नहीं कर सकती। लेकिन किन्हीं दिये हुये नियमों का पालन न करने से पढ़ाई की क्रिया, पठन पाठन की क्रिया इनकार हो जायेगी, पढ़ाई खुद ही नष्ट जायेगी। क्रम का टूट जाना, बीच की कड़ी का उल्लंघन हो जाना, बच्चों में पूर्वाग्रह का होना आदि बातें बाधक हैं। जंगलपुरी में ये बाधायें रोज की बातें थी। बच्चों के मन में बैठी हुई थी यह मास्टर आज यह पाठ शुरू करता है कल चला जायेगा। अधूरी पढ़ाई दिमाग से निकल जायेगी। आज गुणा सिखाना शुरू किया, कल आया ही नहीं। आज भाग सिखाने की भूमिका दी, कल बदली की कोशिश पर चला गया, बदल कर चला गया।

४. खाई खोदने वाले को खाई से ममता की जरूरत नहीं पर मास्टर के केस में जरूरी है कि उसे छात्रों से ममता हो, स्थान से ममता हो, स्थानीय जनता से ममता हो, हैडमास्टर से ममता हो। परन्तु जंगलपुरी में मास्टर को किसी से ममता नहीं। वह जंगलपुरी को नर्क मानता है वह उसे सराय भी नहीं मानता। सराय और सराय वाले से दो दिन की ममता हो जाती है।

५. जंगलपुरी का हैडमास्टर सब का अनखावना बन जाता है। सब का अप्रिय बन जाता है। सब की घृणा का पात्र, किसी की सहानुभूति नहीं। सारे दिन वह सब को टोकता रहता है। लड़को, रौला मत करो, इधर उधर मत फिरो, मास्टरजी, क्लास में जाओ, गाववालो, आप हर समय हस्तक्षेप
बातें हर दम चलती हैं। हैडमास्टर के
सहानुभूति की भावना नहीं
स्कूल की

विद्यालयी सदर्भ में जिसे अनुशासन कहते हैं और अन्य सदर्भ में जिसे कानून और व्यवस्था कहते हैं, वह अवश्य हैडमास्टर के प्रति आदर से जुड़ी हुई है। फलस्वरूप, उखड़ी हुई व्यवस्थाओं में हैडमास्टर कुम्हलाया हुआ, दुखी और अस्थिर मन रहता है शांत वातावरण में ही, सशक्त और परिपूर्ण जलवायु में ही प्रेम और स्नेह की भावना उगती है। असामान्य जलवायु में, तू तू मैं मैं, तेरा मेरा, पारस्परिक दोषारोपण हुये बिना नहीं रह सकते जब जंगलपुरी में हैडमास्टर और मास्टर में ये ही सम्बन्ध होते हैं विद्यालयी सम्बन्धों के विरुद्ध क्या इस पर विचार करेंगे ?

६. जंगलपुरी में परीक्षा परिणाम की किसी को चिन्ता नहीं मास्टर कहता है मैं दिसम्बर में आया हूं, जनवरी में आया हूं फरवरी में आया हूं। और फरवरी के दूसरे पखवाड़े में दसवें ग्यारहवीं क्लासें बोर्ड की परीक्षा के लिये चली जाती हैं। दिसम्बर से पहले जंगलपुरी में कभी मास्टर नहीं आया। फरवरी में क्लासें गई। मास्टर आया। माना। पर उसने किया क्या ? इसीलिये जंगलपुरी वाला कहता था कि जंगलपुरी में मास्टर कभी आया ही नहीं।

७. पढ़ाई का काम जहां खाई खोदना नहीं है, वहां ओफिसों की कागज रगड़ाई भी नहीं है। ओफिस का स्टाफ या ओफिस के स्टाफ का कोई सदस्य लेट आता है तो कोई हर्ज नहीं। राजधानी के सचिवालय के सचिव चौंकेंगे, कि दफ्तर का बाबू लेट आये और कोई हर्ज नहीं ! यह कैसे कहा ? फिर कहेंगे रिमार्क देंगे कि जंगलपुरी का हैडमास्टर और कहता ही क्या ? मास्टर लेट आया, छात्रों की हाजरी नहीं हुई, प्रार्थना स्थल पर लड़के लाइन में नहीं आये, प्रार्थना स्थल पर आने के लिये उन्हें कोई कहने वाला नहीं। क्लास में बैठे रहते हैं। हैडमास्टर जा कर, फटकार

लगाता है। छात्र कहते हैं साहब, हाजरी होने का वेट करते रहे। बाट देखते रहे। हल्ला होता है आज दो मास्टर नहीं आये। घटे पिरियड पूरे नहीं लगेंगे, चला जाये। कुछ भाग जाते हैं, कुछ वरडो में, मैदान में फिरने लग जाते हैं। सारा स्कूल बिगड़ जाता है। अनुशासन उड़ जाता है। कानून और व्यवस्था Law and order बिगड़ जाते हैं। देर से आने की इस घटना को थोड़ा आगे बढ़ाओ। मानलो २० मास्टरों में से दस मास्टर एक महीने नहीं, दो महीने नहीं आये, तीन महीने नहीं आये। तो क्या हुआ? हुआ क्या, अनर्थ हो गया! यह यों है—

जनता संदर्भ में जिसे Law and order कहते हैं, विद्यालयी संदर्भ में उसे अनुशासन कहते हैं। जनता संदर्भ में पुलिस, पुलिस की गोली, मजिस्ट्रेट का लिखित आदेश, आदि कानून और व्यवस्था यानी अनुशासन बनाये रखते हैं। परन्तु विद्यालयी संदर्भ में हैडमास्टर का दफ़्तर के बाहर आना और छात्रों का क्लासों में भाग जाना, रौला बंद कर देना, यही चलन है। यही प्रक्रिया है, प्रोसीजर Procedure यही है। बड़ा सूक्ष्म और कोमल डोरा है, धागा है। इस सूक्ष्म कोमल डोरे की रक्षा करना आवश्यक है। हैडमास्टर प्रयत्न करे कि यह धागा न टूटे। विभागीय अधिकारी और विशेष कर शिक्षा निदेशक कोशिश करें कि यह डोरा सुरक्षित रहे। लेकिन हैडमास्टर और छात्रों के ये स्वाभाविक, परम्परागत सम्बन्ध कायम रहते हैं क्या?

लड़के एक दिन बाण कायदा रखेंगे, दो दिन रखेंगे, तीन दिन रखेंगे, सप्ताह भर रखेंगे, छोटी छोटी जंगलपुरियों से आठ दस किलो मीटर चल कर जंगलपुरी आते हैं। मास्टर हैं नहीं। छात्रों की निराशा और क्रोध से मोटे मोटे नारियल के, बांस के, रस्से टूट जाते हैं। धागा तो नगण्य है। विद्यालयी अनुशासन आंखों की

निहाज पर चलना है। लिहाज गई रिगार्ड Regard गया, सब कुछ गया। एक महीने खुल्लम खुल्ला, बेरोकटोक के जब छा हैडमास्टर के सामने नाच लेते है तो अगले महीने मास्टर के जाने पर भी वह तागा जुड़ेगा नहीं। टूटा सो टूटा। बेचा हैडमास्टर गांठ लगाता है। लगती नहीं है।

बाबू लेट आता है, कागज रौला नहीं मचाते। शाम देर तक ठहर कर कागज रगड़ लेगा।

८. कभी कभी थोड़े थोड़े समय के लिये मास्टर आ भी है तो वे जंगलपुरी वालों की ज्यादा सहायता नहीं करते परदेसी से क्या प्रीत, आज है कल जायेगा। क्या काम आयेगा इस प्रकार आने वाले मास्टरों का काण कायदा, आदर सम्मा यथा योग नहीं हो सकता।

६ कायदेकायदे में आदर सम्मान के क्षेत्र में पुरान परिचय, पुरानी जानकारी, नाम की जानकारी, क्लास की जा कारी, आदतों की जानकारी का स्थान सबसे ऊपर है। यह नहीं तो अनुशासन नहीं। लम्बे समय तक अध्यापक छात्र के साथ रहे में पारस्परिक लाभ के सम्बन्ध कायम हो जाते हैं। उसने उसकी मदद की और उसने उस की, एक प्रकार से बिजीनस सम्बन्ध कारोबारी ताल्लुकात हो जाते हैं जो जलवायु को सुखद बनाते हैं।

१०. ऐसी स्थिति में मास्टर लोग क्रोध का प्रदर्शन करते हैं, वे जिम्मा पर शिकायत करते हैं कि जंगलपुरी के छात्र जंगली हैं, उद्दंड हैं, असभ्य हैं, मुहज्जब नहीं हैं। जंगलपुरी निवासी भी जंगली हैं। दूध नहीं पालते हैं, छाछ नहीं पालते हैं, साया नहीं देते है आदि। वे जानते हैं यह मास्टर रात को चला जायेगा और मांके को डावरा रस्सी तोड़ कर सामान बांध लेगा और सच्चा मैदान के सूना करके जायेगा।

११. टिकाऊ मास्टर कोई नहीं होने से आये गये मास्टरों को ही काम सौंपना पड़ता है । हैडमास्टर कहता है, लो मास्टरजी हाजरी का रजिस्टर लो, सम्भाल कर रखना, लो मास्टरजी, छात्र रेकार्ड के रजिस्टर लो और नये छात्रों के नाम चढ़ा दो । पुराने छात्रों के रिजल्ट चढ़ादो । लो मास्टरजी, परीक्षा के टैस्ट आदि के रजिस्टर और कागज सम्भालो, सामान सम्भालो । लो मास्टर जी स्काउटिंग का सामान सम्भालो । क्राफ्ट मास्टर जी, लो यह क्राफ्ट का सामान है । जनरल साइन्स का मास्टर तो नहीं है । सामान तो हमें सम्भालना ही पड़ता है ।

मास्टर पूरा जोर लगा कर हैडमास्टर का सामना करता है । कहता है जाऊंगा, नहीं लूंगा । हाथा जोड़ी करके न्योहरे खा कर हैडमास्टर चार्ज सौंपता है । सचमुच ही, देखते ही देखते मास्टर की बदली का आदेश आ जाता है । मास्टर सामान पटक कर भाग जाता है । कुछ जमा देता है । कुछ चोर ले जाता है । कुछ बिगाड़ देता है ।

१२. कुछ मास्टर विभाग में अनचाहे भी हैं । वे मारे-मारे फिरते हैं । इस प्रकार के मास्टर ज्यादातर जंगलपुरी के कोटे में हिस्से में आते हैं । उनकी दौड़ धूप पार नहीं पड़ती और हार कर जंगलपुरी में ही पड़ जाते हैं । फिर वह क्या करते हैं कि जंगलपुरी में दूसरे लाभ उठाते हैं । परीक्षा में बैठने का कोटा मांगते हैं । कहते हैं तेरे बजट में २० मास्टर हैं । तू चार को परीक्षा की अनुमति दे सकता है । हैडमास्टर कहता है मेरे पास तो दस ही हैं । झगड़ा होता है । सेमिनारों की तलाश करते हैं । कोई न कोई विभाग का कोई न कोई सेमिनार उनके हाथ लग जाता है । गरीब का आटा गीला हो जाता है । टूर्नामेंट में जायेंगे, रिवेट में सांस्कृतिक कार्यक्रम में लड़कों को ले जायेंगे । विभागीय

अधिकारी इन मास्टरों का साथ देते हैं । जंगलपुरी वाला चिल्ला है कि गरीब का आटा गीला हो रहा है । अभी काम उम अभी काम उगड़ गया, बिगड़ गया । पर जंगलपुरी वाले की सु कौन है । राजकाज, पंच बकायन में जंगलपुरी वाला ही पड़ता है ।

इस प्रकार देखते हैं कि आया गया मास्टर सहायक है, असहायक है, बाधक है । वह पढ़ाई में सहायता नहीं कर अनुशासन में सहायता नहीं करता, विभिन्न प्रकार के रेकर्ड र में सहायता नहीं करता । जंगलपुरी वाला यही कहता है कि अकेला ही रहा । आया गया मास्टर पूरी हानि पहुँचाकर, टी० ए०, डी० ए० लेकर चलता बनता । वह साथ में अकेला था । यह विरोधाभास जगलपुरी की विशेषता है ।

● ¥ ●

५

इतिहास

हनुमान जी का प्रवेश

जंगलपुरी के इतिहास मे जैसे १७ जुलाई १९६१ अमर है, ठीक उन्ही कारणो से २१ अगस्त १९६१ भी चिर स्मरणीय हैं। श्री हनुमानसिंह चार बरस रहे। दस जुलाई १९६५ को ये अपने जिले सीकर चले गये। जङ्गलपुरी के लिये यह एक कीर्तिमान है। शायद यह सब जंगलपुरियों के लिये कीर्तिमान हो।

श्री हनुमानसिंह जी के नेतृत्व गुण ने हैडमास्टर की मदद की। कभी श्री रामजी यादव नाराज हुये, कभी दुर्गादत्त जी कुल्हड़िया नाराज हुए, कभी रामेश्वर जी, कभी बन्नाराम जी नाराज हुये, कभी रामकरण जी शर्मा नाराज हुये, हनुमान जी उन्हें ठठा मीठा कर देते थे। श्री नारायणसिंह, श्री छोटेलाल आदि भी नाराज हो जाते थे। मास्टरों के सन्दर्भ में स्कूल सचालन के सीमित कामों में, किसी मास्टर के द्वारा नेतृत्व प्रदान करना आसान

आर० एम० आर० के विरुद्ध, पर बी०एस० आर० के अनुकूल था ।

इस शताब्दी का वह सातवां दशक था—१९६१-६६ का काल था । चीनी के दर्शन नहीं होते थे । कारण यह था कि इस दशक के शुरू के बरसों मे गावों को चीनी सप्लाई नहीं होती थी । अन्तिम बरसों में सप्लाई होने लग गई थी । पर इतने लम्बे समय के बाद और इतनी थोड़ी मात्रा मे गांव वाले लाते थे कि मास्टरों को टाल देते थे । कह देते थे कि हमारे कोटे में मास्टरों का नाम नहीं है । इन कठिन बरसों में हनुमान जी ही दौड़ धूप करके गेहूं चीनी का इन्तजाम करते थे । सच पूछो तो मरने से बचाते थे । गहरे कुये से पानी मंगवाते थे । जंगल से बलीता मगाते थे ।

खेती के दिनों मे खेतों से गुंवार फली मुफत मे मगवा देते थे । कढ़ी के लिये छाछ मुफत मे मंगवा देते थे । उनकी रसोई भरपूर थी । हैडमास्टर भी अपनी कढ़ी वहीं से पी लाता था । उस दशक के शुरू में जब वे लोग उस उपनिवेश में नये थे, ग्रामीण लोग दूध नहीं बेचते थे । हनुमान जी ने उन्हें दूध बेचने के लिये राजी किया और वे हर छुट्टी के रोज क्षौर बनवाते थे । बलीता बेचने का उस समय सवाल ही नहीं था । हनुमान जी के जाने के बाद स्कूल का पतन शुरू हुआ और जंगलपुरी का पतन शुरू हुआ । १९६९ में जाकर पतन के पैंदे के पर सबकुछ बैठ गया था ।

हनुमान जी छात्रों के नेता थे । पैन खोया गया, किताब कापी खोई गई, कोई झगड़ा हो गया, विवाद हो गया, छात्र हनुमान जी के पास पहुँचते थे और मदद पाते थे । कोई समाचार मालूम करना होता था, छात्र उन्हीं के पास पहुँचते थे । इस बात में वे दूसरे मास्टरों से बिलकुल भिन्न थे । मास्टर की आदत क्या

होती है कि वह हर बात के लिये कह देता है कि जाओ हैडमास्टर के पास । यह खोटी आदत है । पास फैल के संदर्भ में, आगे पीछे भरती होने के संदर्भ में, उमर छोटी बड़ी करने के संदर्भ में, आगे पीछे प्रमाण पत्र लेने, कोशन मनी देने, आदि के बारे में मास्टर कह देता है कि हैडमास्टर सब कुछ करवा सकता है । गैर हाजरी लग गई, फीसे माफ करनी हुई, मास्टर कह देता है हैडमास सब कुछ कर सकता है । यह खराब आदत है । हनुमानजी सही म दर्शन करते थे । छात्रों के माइतों से भी उनका सम्पर्क था । माइ की तरफ से होने वाली छात्रों की कठिनाइयों पर वे माइतो मिलते थे । छात्रों में जब-जब छोटा मोटा चन्दा करना होता वे माइतों से मिलते थे । बच्चों के पास किताब नहीं है, कापी न है, पैन नहीं है तो वे माइतों से मिलते थे । जंगलपुरी के हृद में वे इसीलिये आज भी विराजते हैं ।

परीक्षा रेकर्ड के प्रभारी हनुमान जी ही थे । दशक के उ शुरू के वरसों में मासिक टेस्ट का नियम था । टेस्ट एक ही पीरिय में खतम हो जाय, आज यह विभागीय नियम बन गया है, प उस समय जंगलपुरी में एक ही पीरियड में टेस्ट खत्म हो जाने का नियम बना दिया था । यह सचमुच हनुमानजी क काम था । टेस्ट के अङ्क वे समय पर मास्टरों से मांग लेते थे और रजिस्टरों में अंकित कर देते थे । वार्षिक परीक्षा के लिये टेबु-लेशन इनचार्ज वे ही थे । समय पर रिजल्ट निकलता था और अंक सूची छात्रों को समय पर मिल जाती थी । बोर्ड की परीक्षा वाली अंक सूची के अंक उतारना, रिजल्ट अंकित करना वे ही करते थे । उस समय बोर्ड ने क्यूम्यूलेटिव रेकार्ड रखने का नियम बना रखा था । उन लम्बे-लम्बे फोर्मों को वे ही भरते थे । उनके जाने के बाद यह सब बिगड़ गया । काम एरियर में पड़ गया ।

स्कूल में सबसे अधिक महत्व का काम होता है छात्रों का हिस्टरी सम्बन्धी रेकार्ड जिसमें से टी० सी० दिया जाता है। यह रजिस्टर स्कॉलर रजिस्टर कहलाता है। यह काम हनुमान जी को सौंपा गया था। उन्होंने १९६० से १९६५ तक इस रेकार्ड को पूरा किया। छठी से लेकर छात्र की स्कूल की अंतिम कक्षा तक पूरा रेकार्ड भरा हुआ था। विशेष कर उमर उन्होंने शब्दों और अंकों में सही लिखी थी। पिछले टी० सी० और स्कूल में भरे जाने वाले प्रवेश फोर्म से मिला कर यह देखा जाता था कि उसने अपने पुराने टी० सी० से अब भरे जाने वाले फोर्म में गलत तो नहीं उतार रखी है। इस मिलान के बाद उन्होंने उसके पीछे के रेकार्ड को जगतपुरी के रेकार्ड में सावधानी से उतारा था। दूसरे किसी साथी टीचर की मदद से उमर मिलवा ली थी। उनके जाने के बाद यह काम किसी ने नहीं किया। अधूरे रजिस्टरों से टी० सी० काटने में कठिनाई होती थी।

हनुमानजी को बदली का आदेश आया तो एच० एम० को जो अखरा गया, उसकी कल्पना कर लेनी चाहिये। इस बात की एच०एम० को खुशी हुई कि उनकी बदली उनके अपने जिले के जिला हैडक्वार्टर सीकर में हो गई है। जंगलपुरी से बदली से गये। इस मोक से सरस्वती की थी, इसलिये उन्हें स्वर्ग मिला। सीकर राजस्थान का उच्च स्तरीय नगर है। हनुमान जी राजी थे। बहुत राजी थे। राजी होने की बात भी थी। जंगलपुरी वाला खुद भी ऐसे स्थानों के लिये तरसता-तरसता रिटायर ही हो गया। सो हनुमान जी राजी थे। वहां सीकर में क्या हुआ कि मन्नालाल माथुर कहने लगा कि मैं सीकर नहीं छोड़ूंगा। उसकी जगह ही हनुमान जी गये थे। विभाग ने माथुर की बात सुनी और निर्णय लिया कि माथुर सीकर बड़ा है और वह सीकर में ही रहना चाहिये।

हनुमान जी पर विभाग नाराज हुआ कि वे जंगलपुरी से क्यों भग आये । नन्दलालजी में की हुई अपनी गलती पर विभाग ने पछतावा किया । हनुमान जी के दुस्साहस पर विभाग को गुस्सा आया । सहावा नाम की एक दूसरी जंगलपुरी में उन्हें बदल दिया । सहावा झुन्झनूं जिले के उत्तर पूर्व में रेगिस्तान में पड़ा एक दूसरी जंगलपुरी है । जंगलपुरी में चार बरस रह लेने के कारण अन्य मास्टरों की तरह उन्हें भी निम्न कोटि का और अनाथ मान लिया गया था । पर हनुमान जी अनाथ नहीं थे, जंगलपुरी में तो वें जंगलपुरीवाले के कहने से चार बरस टहरे थे । किसी असहाय अवस्था से नहीं। उन्होंने अपने प्राक्रम काम में लिये। विभाग को हार माननी पड़ी । इधर माथुर भी कमजोर नहीं पड़ता था । और फिर माथुर लोग जंगलपुरी गये भी कब है? अब क्या होगा ?

विभाग ने फिर दूसरी बार नन्दलालजी की बदली सहावा करदी । माथुर फिर नट गये । फिर हनुमान जी की सहावा करदी । हनुमानजी फिर नट गये । विभाग ने इस पर विचार किया और इस परिणाम पर पहुँचा कि हनुमान जी और माथुर साहब दोनों ही प्राक्रमी व्यक्ति हैं । इनके साथ झगड़ा विभाग के वश की बात नहीं है । हिस्टरी की एक पोस्ट तो सीकर में है ही । जंगलपुरी से हटा कर एक फालतू पोस्ट भी इन दो महारथियों के लिये देदी जाय । तनाव दूर हुआ और शिक्षा जगत ने दोहरी सांस ली । यह एक और उदाहरण है जहां सत्य व्यक्तियों के सामने हारी है । यह एक अगली घटना है जहां सत्य और सिद्धांत की उपेक्षा की गई है। समाज बड़ा या व्यक्ति ? यह प्रश्न शिक्षा विभाग से पूछा जाय और उससे जो उत्तर मिलेगा, उसकी कल्पना मुश्किल नहीं है ।

हनुमान जी जाने लगे तो जंगलपुरी वालों को आश्वासन दे गये थे। इस आश्वासन के अनुसार पांच दिन बाद ही उनके भाई श्री बीरबलसिंह आ गये। श्री बीरबलसिंह हनुमान जी जैसे सूझ बूझ वाले नहीं थे। जंगलपुरी से तंग आ गये। विभाग ने देखा कि बीरबल जी दुखी हैं। ३१ जुलाई १९६७ को बीरबलजी चले गये। पिछले छः वर्ष से इतिहास के मास्टर की तरफ से हैडमास्टर नियुक्त था। पर अब यह पद भी खाली हुआ। दो महीने बाद एक आदेश आया कि गंगानगर जिले से कोई मास्टर आयेंगे। गंगानगर वालों ने कहा कि वे हराभरा स्थान छोड़कर रेगिस्तान में जाना नहीं चाहते। उनकी बात सही मान ली गई। आदेश वापिस लिया। विषय पर विचार किया और सारांश निकाला गया कि जंगलपुरी में कोई नया प्रोमोशन वाला ही भेजा जाय। प्रोमोशन के मामले में ही कोई मास्टर वहां जायेगा। चार महीने बाद ग्यारह नवम्बर १९६७ को श्री नियामत अलीखां आये। उन्हें देखते ही उनके साथ हमदर्दी उमड़ पड़ी और जंगलपुरी वालों ने उन्हें छाती से लगाया। नियामत साहब भी कुछ आश्वस्त हुये। नियामत साहब से हैडमास्टर को बहुत सहारा था। बड़े ही निर्दोष और भोले। १९७१ की २१ जून को नियामतअली खां जी जंगलपुरी वाले को मिले थे। जयपुर की किसी अच्छी सड़क पर। जोग संजोग है। मिनख मिनख से मिल जाता है। कुआं कुवे से नहीं मिलता। जंगलपुरी के दो हमजोली जयपुर की सड़क पर मिले। जंगलपुरी वाले को वे दिन याद आये जब वे गणना किया करते थे कि कब कभी जयपुर की सड़कें देखने को मिलेंगी। बारह जुलाई १९६८ को नियामत साहब गये। तीन मन उन्हें और उनके सामान सहित बच्चों को पहुंचा के आया था। गई बात। बड़े मन्दर की कोई आशा क्यों करे? जंगलपुरी वाले ने धारणे रखनी बंद करदी थी। ऊंटों और गांवों वालों के

सामने अब वह सिर्फ रो सकता था। उसकी और उसके दफ्तर की गरिमा Dignity जा चुकी थी। गिरे हुये स्वर में वह सहानुभूति की माग किया करता था।

पांच दिसम्बर १९६८ को आबू रोड से जनाब मोहम्मद हुसैनखां आये। आते ही घबराये। हाजरी लगाई और बे छुट्टी देदो। अच्छा लेलो। चले गये। सात दिसम्बर को च गये। बोर्ड की परीक्षा देने के लिये जब छात्र चले गये त पन्द्रह फरवरी १९६९ को खान साहब आ गये। अब बोर्ड का तो था नहीं। टी० ए० डी० ए० और पिछले महीनों की तनखा के बिल बनवाने के लिये हैडमास्टर के पास ओफिस में बैठे रह थे। शायद किसी घटना विशेष के प्रसग में इसका जिकर अन्य आये। आये गये मास्टर क्या काम आते हैं चौथे पाठ के अन्त देखा जा सकता है। दूसरे पाठ के अन्त में भी इस पर कु लिखा है। आया गया मास्टर स्कूल का बैरी होता है। वह स्कू का हितैषी नहीं हो सकता।

• • •

६

जनरल साइंस, क्राफ्ट और संस्कृत के मास्टर

जनरल साइंस में १९६०–६१ में एक वरस कोई मास्टर नहीं रहा। २९ जुलाई १९६१ को बाबूलालजी शर्मा आये। वे १५ अगस्त को १८ दिन बाद चले गये। २९ अगस्त १९६१ में वीरीसिंहजी आये। ७ अक्टूबर को ४० दिन बाद वीरीसिंहजी गये। १९६१ से १९६५ चार साल तक सामान्य विज्ञान में कोई भी मास्टर नहीं रहा। जगह खाली रही। दुर्भाग्य यह था कि कोई भी ऐसा मास्टर इस पिरियड में नहीं था जिसने मेट्रिक में भी कभी साइंस पढ़ी हो। साइंस किसने पढ़ाई? छात्रों ने, उनके माइतों ने, कोई आंदोलन नहीं किया? साइंस का सामान कैसे मंगाया गया? या मंगाया ही नहीं? क्या बजट की रकम लैप्स हुई? शिक्षा बोर्ड ने आपत्ति नहीं की? वार्षिक विवरण में सही बात भरी जाती थी क्या? यह सब रहस्य है जिसकी चर्चा यहां नहीं की जायगी।

संस्कृत

१९५० से १९५८ तक कोई नहीं आया। १७ मई १९५८ को श्री जगदीशप्रसाद शास्त्री आये। वैकेशन के लिये डेढ़ महीने थे निगे। स्कूल उस दिन बंद हो गया था। पर हैडमास्टर सदा की तरह यहीं थे। उनको ड्यूटी पर लेना जरूरी हो गया जिससे कि उन्हें डेढ़ महीने की तनखा मिल जावे। जुलाई में स्कूल खुला। विभागीय अधिकारी को शास्त्री जी ने कहा श्रीमन्, स्थान उपयुक्त नहीं है। जगमपुरी में मेरा स्वास्थ्य बिगड़ जायेगा। मैं सब कुछ भूल जाऊंगा। साथ ही यह भी है कि यहां के लड़के अनुशासन-प्रिय नहीं हैं। इंसपेक्टर बोला यहाँ मास्टरों की कमी है। पंचायत समिति के प्रधान जयकरणजी रोज शिकायत ले कर आते हैं कि कम से कम तीसरी ग्रेड के मास्टर तो इंसपेक्टर भेज सकता है। शास्त्रीजी तर्क में कम नहीं थे। झटपट बोले, श्रीमन्, यह स्थान निवास योग्य और पढ़ाने योग्य नहीं है। श्रीमन्, तनिक देखिये, शिक्षा विभाग के अध्यक्ष निदेशक महोदय स्वयं इस विषय में उदारता और सहृदयता और समवेदना से काम लेते हैं। सीनियर टीचर को स्थानान्तरण करना उनके अधिकार की बात है। इसलिये वे सिनियर टीचर यहां नहीं भेजते हैं। यदि भेजना ही पड़ जाय तो उन्हें कुछ दिन उपरान्त ही उसे वहां से वापिस बस्ती में बुला लेते हैं। इतना ही नहीं, श्रीमन्, उप निदेशक महोदय भी ऐसा ही करते हैं। द्वितीय श्रेणी के अध्यापक भेजना उप निदेशक के अधिकार में है। वे भी अपने अधिकार के मास्टरों को यहां नहीं भेजते हैं। भेजना पड़ ही जाय तो उस केस को ध्यान में रखते हैं। और बात ठंडी पड़ते ही वहां से वापिस बुला लेते हैं। तो फिर श्रीमन् आप ही अकेले क्यों हम लोगों की दुरासीसें लेते हैं। लाइये, दीजिये, स्थानान्तरण का आदेश !

इंसपेक्टर बड़ा दुविधा में पड़ा, चुप रहा। इधर प्रधान जयशरणजी की डाट फटकार, हैडमास्टर का रोना धोना और उधर शास्त्री जगदीशप्रसाद का अकाट्य तर्क। क्या करे। चुप बैठा रहा। शास्त्रीजी ने तर्क आगे बढ़ाया। शास्त्रीजी बोले, इसी बरस जनवरी महीने का केस लीजिये। प्रोमोशन की परिस्थितियों में दामोदर प्रसाद सोनी की बदली अजमेर जिले से जंगलपुरी में कर दी थी। दिसम्बर १९६७ को दामोदरजी प्रोमोशन पर गये थे। जनवरी १९६८ को उप-निदेशक महोदय ने उन्हें वापिस बस्ती में बुला लिया। यह बात आप से भी छानी नहीं है। जंगलपुरी का हैडमास्टर अड़ गया कि मैं रिलीव नहीं करता। हैडमास्टर ने १६ जनवरी १९६८ को एक रजिस्टर्ड पत्र दिया था कि दामोदरजी को नहीं बदला जाये। फिर देखिये उपनिदेशक महोदय ने हैडमास्टर को डाट फटकार लगाई थी और आपको भी लिखा था कि हैडमास्टर को चेतावनी दे दी जाये। इंसपेक्टर ने वह बात याद की और वह पिघला। इंसपेक्टर को पिघला देख कर जगदीशजी का उत्साह बढ़ा और उन्होंने आगे कहा, हाँ तो श्रीमद् हैडमास्टर पर तो विभाग नाराज है, उस पर अनुशासन की कारवाई करने की सोची जा रही है। इन मामलों में विभागीय अधिकारियों से उनका सहयोग नहीं है। जहाँ तक प्रधान जयशरणजी का प्रश्न है, वह अपने विभाग में हस्तक्षेप करने वाले कौन? आप जिले के मालिक हैं। ऊँचे अधिकारी हैं। मास्टरों के भाग्य का फैसला आप करेंगे। मास्टरों के सुख-दुख की जिम्मेदारी आपकी है। शास्त्रीजी की दुतिया निरीक्षक को जच गई। बदली का आदेश निकला और शास्त्रीजी २४ जुलाई १९६८ को चले गये।

दूसरी बंद में एक पूर्णमल गुप्ता थे। नई नियुक्ति पाकर खुश हुये और बोले कहीं भी भेजदो। जंगलपुरी में हद

ही खाली जगह रहती है। दिसम्बर १९६६ में पूर्णमलजी गुप्ता आये। बी० ए० में गुप्ताजी के पास संस्कृत थी। हैडमास्टर खुश था कि देखो भाग्य ने कैसा साथ दिया, बी० ए० पास संस्कृत का टीचर मिल गया। छात्र खुश थे, मास्टर खुश थे। सोचा गया गुप्ताजी नई नियुक्ति के हैं। ठहरेंगे। पर गुप्ताजी तो समवेदनशील अफसरों के पास पहुँच गये। आकर हैडमास्टर को कहने लगे बस अभी आदेश आने वाला है। यह सुनकर हैडमास्टर घबराया। उसने १२ अगस्त १९६७ को एक रजिस्टर्ड लेटर डिप्टीडाइरेक्टर को लिखा और एक दूसरा रजिस्टर्ड लैटर इन्सपेक्टर को लिखा कि यहां संस्कृत का टीचर कभी नहीं रहा। सौभाग्य से मिला संस्कृत अध्यापक यदि बदली होकर चला जायेगा तो छात्रों में, ग्रामीणों में बड़ा एजिटेशन हो जायेगा। स्थिति को सम्भालना मुश्किल हो जायेगा। हैडमास्टर खुद बहुत दुखी हो जायेगा। परन्तु समवेदनशील अधिकारियों ने एक नहीं सुनी। हैडमास्टर को अंगूठा दिखाता हुआ गुप्ता चला गया। बाद में क्या हुआ? क्या छात्रों ने एजिटेशन किया? नहीं। इसका रहस्य आखिर क्या है! वह अभी नहीं। पूर्णमल गुप्ता और दामोदर प्रसाद सोनी के केसिज एक बार फिर दिखाते हैं कि संस्थाओं को नुकसान पहुँचाकर, समाज को नुकसान पहुँचाकर, व्यक्तियों की इच्छा को पूरा किया जाता है। क्या यह एकबार फिर नहीं दिखाते कि महत्त्वपूर्ण बातें अधिकारियों की सनक पर नहीं छोड़ना चाहिये।

क्राफ्ट टीचर

जंगलपुरी में टेलरिंग यानी सिलाई का काम था। बड़ी बड़ी आशाओं से सिलाई का विषय खोला गया। साथ मशीनें

खरीदी गई। अन्य माल सामान खरीदा गया। बड़ी सज-धज से शुरुआत हुई। सोचा गया बच्चे बच्चियां अब अपनी सिलाई खुद करने लगेंगे। हो सकता है कुछ छात्र छात्रायें धंधे के रूप में भी टेलरिंग को अपनालें। लेकिन हुआ क्या? जो कुछ हुआ वह दुखद है। लेकिन दुखद किसके लिये? उन भूतों के लिये जो अब भौतिक रूप से भी भूत बन गये हैं? नहीं। विभागीय अफसरों को कभी दुख नहीं होगा। शिक्षा मन्त्री को दुख होगा? नहीं। वह भी खेल खेलकर गया। तो? दुख किसको हुआ और किसको होगा, इसकी कल्पना समाज हितैषी खुद ही करलें।

१६६० में घेरीलालजी नन्दवाना ने चार मशीनें खरीदी थीं। उन्होंने सोचा था कि जंगल में मंगल हो जायेगा। खटा खट खटा खट करके जंगलपुरी में मशीने चला करेंगी। घेरीलालजी नन्दवाना १७ जुलाई १६६१ को चले गये। १६६१ में दूसरा हैडमास्टर आया। तीन मशीनें उसने खरीदी। सात मशीनें आगईं। तेल आ गया। सुइयां आ गईं। तागे आ गये। सब कुछ आ-गया। १६६० में कोई मास्टर नहीं आया। १६६१ में भी क्राफ्ट टीचर नहीं आया।

रोने धोने के बाद २० जनवरी १६६२ को श्री प्रभाती लाल आये। ये भी हनुमानजी की टोली के आदमी थे। उन्ही की वजह से ये ठहरे रहे। १६६५ में हनुमानजी गये और १६६६ में प्रभातीलालजी भी गये। १६६६ से १६६६ तक तीन बरस तक कोई क्राफ्टर टीचर नहीं आया। प्रशासनिक चितेरों को याद रखना चाहिये कि मास्टर के नहीं होने से दो नुकसान होते है। उस विषय की पढ़ाई नहीं होती, दुनिया बस इतना ही जानती है। हैडमास्टर की छाती पर जो दूसरा पत्थर पड़ता है उसे कोई नहीं जानता। उस पीरियड में लड़के खाली हो जाते हैं, रौला करते हैं, बरांडों में घूमते हैं, मैदान में घूमते हैं।

एक दिन मिजाज गरम है तो दिन मिजाज गरम है । उन्हीं से हैडमास्टर को मिजाज गरम हो जाती है । दूसरे के करने से बहुत से दिन हो कर घूमने लगने लगती है । यह मामला बिगड़ है । यह तो हुआ ही । मास्टर के सम्बन्ध में एक तीसरी मुसीबत खड़ी हो गई । यह मुसीबत भी हैडमास्टर के लिये जीवन मरण का सवाल बन गई । मास्टर नहीं दे सकता तो फीस ले ले । पच्चास पैसे प्रति माह के हिसाब से डेढ़ रुपया मासाना के हिसाब से फीस लगती है । ये फीसें सरकार ने लगाई है । सरकार ही इन्हें छोड़ सकती है । हैडमास्टर कुछ नहीं सका । छात्र कहने लगे सिलाई नहीं तो फीस भी नहीं । ब तरफ एजिटेशन हो गया । एक दिन की बात नहीं, दो दिन बात नहीं । लगातार तीन वर्ष तक यह चलता रहा । य निभा कैसे ? क्या ड्राफ्ट फीसें ली गई ? उत्तर है ली गई कैसे ली गई । कौनसे पावर काम में लाये गये ? अनेकानेक रहस्यों में, यह भी एक रहस्य है जो धीरे धीरे पाठकों को मालूम होगा ।

एक चौथा नुकसान भी हुआ । छात्र हिसाब लगाते अच्छा, सिलाई मास्टर नहीं, संस्कृत मास्टर नहीं, जनरल साइंस का मास्टर नहीं, वह भी नहीं और वह भी नहीं । बस एक हिस्टरी वाला है । सात घंटे खाली होंगे । कल नहीं आयेंगे। तो क्या ? नहीं आये। हाजरी का क्या रहा ? हाजरी लगी या ग़ैर हाजरी लगी। यह भी एक रहस्य है । अभी नहीं बताया जायेगा। जगतपुरी की बातें समझने के लिये धीरज की जरूरत है ।

सात मशीनें

उनका क्या हुआ ? किसने सम्भाली ? सेवायें-सर्विसिंग हुई कि नहीं ? पहले डेढ़ दो साल मशीनें सूनी रहीं । १९६२

मे प्रभातीलालजी आये, बोले कुछ कल पुर्जे गायब है। हैडमास्टर बोला जरूर होंगे। सम्भाले कौन और जाने कौन? प्रभातीलालजी १९६६ में गये। सातों मशीने और अन्य साज-सामान हैडमास्टर की छाती पर फेंक कर चले गये। मशीने गले का नाप बन गई। हैडमास्टर जाने नहीं, समझे नहीं। चलती है या बंद हैं। किसमे पुर्जे हैं, कौनसी खाली है। यह सब तो था ही। १९६५-६६ मे कुछ मास्टर अपनी औरतों को ले आये। वे बोले हैडमास्टर, तेरी मशीने खाली और उधर हमारी औरतें खाली। मेल हो जाय। उन्ही मास्टरों मे हैडमास्टर को रहना। रोज मशीनो का जिक्र। खाली मशीन। कहते हैं जमीन, जायदाद और औरत खाली नहीं रहते। आगे क्या हुआ? कल्पना का विषय है। मशीने आज मारी मारी फिरती हैं।

संकट इतने ही नहीं थे: सिलाई कम्पलसरी अनिवार्य विषय था। बोर्ड की परीक्षा आई। अब क्या करें? लड़के पास कैसे होंगे? क्या लड़के फेल हुये? नहीं सब पास हुये। १९६६ मे पास हुये। १९६७ मे पास हुये १९६८ मे भी। और १९६९ मे भी पास हुये। कैसे हुये? यह एक रहस्य है। यहां नहीं खोला जायेगा। समझदार समझ गये, जानकार जान गये और खानी रहे शिक्षा अधिकारी। खाली रहा शिक्षा निदेशक। लड़के पास कैसे हुये, ऊपर फीसें कैसे उगाही गई, अनुशासन कैसे कायम रखा गया, ये तीनों बातें अन्योन्याश्रित हैं। एक का दूसरे से सम्बन्ध है। घनिष्ट सम्बन्ध है। पर स्पष्ट नहीं किया जायेगा।

प्रभातीलालजी सिलाई मास्टर को स्पार्टिंग की ट्रेनिंग दिलवाई थी। वह भी उनके साथ गई। जगतपुरी पधारीं।

0 * 0

७

साइंस मास्टर और साइंस का सामान

फरवरी १९६७ में लोक सभा और विधान सभाओं के चुनाव होने वाले थे । चौथे आम चुनाव होने वाले थे । उस समय के मुख्य मन्त्री ने सितम्बर १९६६ में दौरा किया । मुख्य मन्त्री का [illegible] सिवानी में कैम्प था । प्रधान जी जयकरण जी को बुलाया गया । जयकरण जी बोले तैयार हूँ । शर्त एक ही है । [illegible] में साइंस खुलनी चाहिये । मुख्य मन्त्री ने हाँ भरली । और वचन हो चुके । हैडमास्टर ने जयकरण जी को बहुत समझाया कि जयकरणजी मौजूदा पढ़ाई ह्युमैनिटी के मास्टर अपने पास ही है । साइंस के मास्टर नहीं आयेंगे । आप और हम दोनों बदनाम हो जायेंगे । विभागीय अधिकारी निदेशक, निरीक्षक आदि अलग साथ नहीं देंगे । आप साइंस मत खुलवाना । जयकरणजी गांव भर में प्रचार करने लगे कि हैडमास्टर साइंस के विरुद्ध है ।

१९६६ में चालू की गई नवीं क्लास दूसरे स्कूलों में भेजदी गई। ऐसे सेटों में एक सेट का नम्बर—४८।११ दिनांक ११-३-१९६७ स्कूल में कुछ भी नहीं था। मास्टर नहीं था, कमरे नहीं थे, मेजटाटी नहीं थी। ग्राम वालों के कहने समझाने से हैडमास्टर को लिखना पड़ा कि जंगलपुरी में सब कुछ है। बोर्ड को और विभाग को झूठ लिख देना और नियमों का पालन न करना जंगलपुरी के हित में माना जाता था। जंगलपुरी की इस उल्टी नैतिकता और सही नैतिकता के संदर्भ में हैडमास्टर को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की बारबार याद आती थी। हिन्दुस्तान पाकिस्तान के सम्बन्ध हिन्दुस्तान चीन के सम्बन्धों के जानकार लोग कहते हैं कि जो भारत के लिये सही है, पाकिस्तान में उसका उल्टा सही है। यही बात चीन भारत के सम्बन्धों में है। जंगलपुरी में इस उल्टी नैतिकता का विकास १९६० से ही शुरू हुआ था जो जुलाई १९६६ के अन्त तक अपने पूरे विकास पर पहुँच चुका था। तो बोर्ड और शिक्षा विभाग को लिख दिया कि जंगलपुरी पूर्ण रूप से साधन सम्पन्न है। किसी बात की कमी नहीं है। साइन्स की नवीं क्लास कायम रह गई।

जंगलपुरी के हित में एक जोश आया और जोश की उन घड़ियों में बोर्ड को और विभाग को लिख दिया। लिख देने के बाद जोश की वह लहर उल्टी बहने लगी, बल्कि यह कहना सही होगा कि जोश की लहर के समानान्तर एक दूसरी लहर उगी और ऊपर को चढ़ने लगी। चढ़ती गई, चढ़ती गई पहली लहर से ऊंची हो गई। बहुत ऊंची हो गई। तरह-तरह के भयों की एक जंजीर बन गई। दसवीं और ग्यारहवीं दोनों में साइंस के प्रैक्टीकल्स अनिवार्य है। पास होना अनिवार्य है। सामान एक पैसे का नहीं है। अब क्या होगा। कमरों की कमी, मेजों की स्टूलों की कमी! अब क्या होगा? पांच मार्च १९६७ को गांव की मिटिंग में हैडमास्टर

ने वचन दिया कि आई हुई ग्रांट को नहीं जाने दिया जायेगा । सोचते विचारते मार्च १९६७ हो गया । ६ मार्च १९६७ को श्री रामनिवास मास्टर को पांच सौ रुपये देकर भारत की प्रसिद्ध मार्केटों में भेजा गया । टी० ए० डी० ए० का अडवांस उसे अलग दिया गया । सब तरह का जोखिम लिया गया । साधारण विचारों के सरकारी नौकरों की आदत होती है, कि ऐसे मौकों का दुरुपयोग किया जाता है । जरूरत से ज्यादा समय लगाते हैं, जरूरत से ज्यादा खर्च बताते हैं । फिर इस यात्रा में तो दुरुपयोग की पूरी गुंजाइश थी । उसे कहा गया सामान जहां मिले वहां जाओ । एक जगह न मिले तो दूसरी जगह जाओ । श्री राम निवास ने ऐसा ही किया । खूब गये । पूरे गये । पर जंगलपुरी की नैतिकता न्यारी ! इधर मार्च का महीना खतम हो रहा था । पुराने बजट में जनरल साइंस के लिये रेकरिंग हिसाब में आई रकम के लैप्स होने का भय था । झूठा बिल बनाया गया । लिख दिया सामान आ गया । रुपया ड्रा कर लिया । सामान बाद में आ गया था । पांच सौ रुपये सइजस्ट कर दिये गये । हैडमास्टर ने सुख की सांस ली कि स्कूल में पांच सौ रुपये का सामान आ गया । रखने के लिये जगह नहीं थी । इसलिये हैडमास्टर ने अपने ही ऑफिस में उस सामान को रख दिया । सामान बहुत प्यारा भी था । अब की बार जरूर बुद्ध नीचे उतरते । वे पांच सौ रुपये जनरल साइंस के बजट में थे ।

साइंस के सम्बन्ध में हैडमास्टर के सिर पर एक दूसरी तलवार का भय सवार था । १९६६ में साइंस मंजूर हो चुकी थी । पांच हजार रुपये की साइंस ग्रांट का रुपया आने वाला था । पर आया नहीं था । शिक्षा विभाग की नैतिकता से हैडमास्टर को पूरा परिचय था । वह जानता था कि मार्च के खत्म में छः हजार रुपये आयेंगे । [illegible]

बिल पास करवाने का काम नहीं हो सकेगा । सामान की लिस्ट में अप्रूवड होकर नहीं आई थी । हैडमास्टर ने सोचा और खूब सोचा इस विषय पर चिंतन उसने जनवरी में ही शुरू कर दिया था उसने सोचा और उपाय भी झट दिमाग में आ गया । उपाय की नई खोज पर हैडमास्टर खुश हुआ । साइंस के सामान का यानी कैमिकल्स औजार आदि के मगाने का ऑर्डर तो नहीं दिया जा सकता पर फरनीचर का ऑर्डर दिया जा सकता था, क्योंकि फरनीचर की लिस्ट निरीक्षक से आ गई थी । जयपुर का कोई फर्म था । उसे स्टूलों का आर्डर दिया। सामान का बिल पहले ही मंगा लिया था । सामान नहीं आया था । बिल पर लिख दिया कि सामान आ गया । झूठा ही लिख दिया कि सामान आ गया। विवरण के अनुसार ही है। रुपया ड्रॉ कर लिया गया। बाद में स्टूल भी आ गये। बड़े अच्छे स्टूल थे । बड़ी अच्छी फर्म थी । समय पर सामान आ गया । १९६६-६७ के बाद मे इस फर्म को अप्रूवड लिस्ट पर नहीं देखा । अच्छी ईमानदार फर्म एक बार के अनुभव के बाद चीजर में पड़ना नहीं चाहती है । शायद यही कारण है । झुंझनूं की एक फार्म थी । उसे मेजों का आर्डर दिया गया । यह फर्म अच्छी भी नहीं थी और बुरी भी नहीं थी । बीच की सी थी ।

मेजों का आर्डर भी इसी प्रकार दे दिया गया । झुंझुनूं की एक फर्म थी जिसका नाम राजस्थान टीम्बर ट्रेडर्स था । रु० १०७८ का ६८ मेजों का आर्डर था । दोनों आर्डर बड़े भारी थे । ये दोनों आर्डर इस आशा पर दिये गये थे कि साइन्स की ग्रांट छः हजार रुपये आ जायेगी । आज गया, कल गया, गर्मी भी गया । ग्रांट नहीं आ रही थी । शायद ग्रांट न आये ! यह हो सकता है कि रकम न आये क्योंकि साइंस का चुनना अन्तिम रूप में तय नहीं हुआ था । आखर

ग्माग ने खुद ने सोच लिया हो कि इतनी ज्यादा स्कूलों
साइम खोलने के लिये रुपया नहीं है। तो फिर क्या होगा?
ामान हो कुछ आ गया है और बाकी का आ रहा है।
नका पेमेंट कैसे होगा, फर्म कोर्ट केस करेगी। 'विभाग बदनाम
ोगा कि इस विभाग मे ऐसे हैडमास्टर हैं जो रुपये हुये बिना
ो आर्डर देदेते है। विभाग नाराज हो कर अनुशासन की
ारवाई करेगा। जंगलपुरी के हित मे जोश में आकर हैडमास्टर
ो भारी भारी आर्डर देदिये थे। पर अब वह घबरा रहा था।
ोचता, क्या है। फर्म योंही रोती रहेगी। विभाग योंही अनुशासन
ही कारवाई करता रहेगा। बेचारे टावर और मास्टर अब
ुख पायेंगे। दस क्लासो में से केवल दो के पास फर्नीचर
ा। मास्टरों के लिये कुर्सी क्या, स्टूल भी नहीं है। गांव वाले
ोज ओलमा देते हैं कि यह स्कूल जहां सात बरस पहले था, वहीं
ा। गावो मे, बच्चो मे खुशी की लहर दौड जायेगी जब वे स्टूलों
और मेजो मे भरे गाडे और ट्रक अपने खेतों और गावो में से जाते
खेंगे। हैडमास्टर की नसो के तारो मे हो कर इस प्रकार की लहरें
ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर बहती रही। नसें, Nerves क्या
हैं, ताम्बे के सूक्ष्म तार हैं जिनमें हो कर खुशी और गम की लहरें,
तरगें निरंतर बहती हैं। एक लहर गम की, भय की चोटी से शुरू
हो कर गर्दन के पिछले भाग से होती हुई एड़ी तक पहुँचती है। शरीर
ो कस देती है, तान देती है। शरीर कड़ा हो जाता है। फिर
तिक्रियास्वरूप एक दूसरी खुशी की लहर उसी मार्ग से और उसी
जिल तक पहुँचती है और उस तनाव को कम करती है। जंगलपुरी
ा हैडमास्टर इन्हीं शोर्ट वेव, मिडियम वेव की तरंगो में, कभी जोश
े, कभी घबराहट, विद्यालय के छात्रों और मास्टरो में हाय हाय करता
फिरता था उसकी हाय हाय को बच्चे समझते थे। दूसरा कोई
नहीं समझता था। बस छात्रों का उसे सहारा था। जो वहीं टिका

हुआ था। बीस मार्च गया। इक्कीस भी गया। इक्कीस मार्च प
उसकी आशा टिकी थी। यह दिनांक जंगलपुरी वाले के लिये महत्व
पूर्ण था। उसके एक बेटे की जन्म तिथि २१ मार्च ही थी। उ
दिन, रात दिन भी बराबर होते है। पर यह भी गया। २२ ग
गया। २३ भी, २४ भी। हनुमानजी के छोटे भाई वीरबल
इतिहास के टीचर उस समय वहीं थे। वे कहने लगे मार्च मे ऐस
क्या बात है। बाद अप्रिल मे आजायेगी तब ये पेमेंट कर सकते है
हैडमास्टर बोला आप अभी सरकारी नौकरी में आये हो, आपक
पता नहीं, ३१ मार्च के बाद सारी रकम गल जाती है, लैप्स होजात
है। ३१ मार्च से पहले ही ट्रेजरी से बिल पास हो जाय और बैं
से पेमेंट भी हो जाय। इधर सरकारी नियम है कि सामान आजाये
सम्भाल लिया जाय, रजिस्टर मे दर्ज करके भंडार घर में रख दि
जाय और फर्म से आये बिल पर यह सब अंकित कर दिया जाय
वीरबलजी चौंक कर बोले, यह सब अब छः दिन मे हो जायेग
क्या? हैडमास्टर मन में सकुचाया। वह सारा भेद खोलना नहीं
चाहता था कि उसने चार हजार के बिल पहले ही पास करवा लिये
हैं। हैडमास्टर को भय यह था कि अगर कोई शिकायत कर दे
और दो चार दिन में कोई चेकिंग वाला आ जाये तो हैडमास्टर को
सजा मिले सो मिले, जंगलपुरी सामान बिना रह जाये। ऐसा मौका
सात बरस में पहली बार आया है। होली की छुट्टियां थी। सब
चले गये थे। हैडमास्टर सदा की भांति स्कूल में ही था। २५ मार्च
१९६७ की डाक से शाम को तीन बजे साइंस का बजट आया।
पूरा छः हजार का था। चार हजार का फर्नीचर आ गया था
या आने वाला था। दो हजार लैप्स जायेगा। क्या करे? छः
हजार की साइंस की ग्रांट और आया सारा फर्नीचर! यह भोलेपन
की बात बन गई। शिकायत हो जायेगी कि रकम का दुरुपयोग
हुआ है। लेकिन साइंस की लिस्ट नहीं और बड़ी बात यह कि

केमिकल्स, औजार आदि छांटने वाला साइंस मास्टर नहीं। सोचते सोचते विचार आया कि बड़ी मेज बिना प्रेक्टीकल्स नहीं हो सकेंगे। फर्नीचर लिस्ट देखी। सीकर की कोई फर्म थी। आठ सौ रुपये की एक मेज थी। २६ मार्च को भगवानाराम चपरासी को सीकर भेजा। ओर्डर उसके हाथ देदिया था। उसे समझा दिया आते समय फर्म का बिल ले आना। सामान तो नहीं आ सकेगा क्योंकि फर्में ओर्डर के बाद ही सामान बनवाती हैं। भगवानाराम २८ को आ गया।। ट्रेजरी का बिल हैडमास्टर ने बनाया, उसके साथ फर्म का बिल लगा दिया। फर्म के बिल पर लिख दिया कि सामान आ गया और रजिस्टर में चढ़ाकर भंडार घर में सुरक्षित रख दिया। भगवानाराम को बिल देकर ट्रेजरी भेजा। चाय-पानी के पैसे और खजाने को आने जाने को पैसे अगाऊ दे दिये। २६ मार्च को भगवाना आ गया रात को। ३० मार्च को पांच हजार रुपये खजाने से निकलवा लिये।

गले में सांप फिर लिपट गया। पांच हजार रुपये ! नियम कायदे भंग करके खजाने से निकाले। खजाने के बीच और जगलपुरी स्कूल के बीच ३२ किलो मीटर की दूरी ! इसमें से १६ किलोमीटर में पांच हजार रुपये लेकर इस जंगल में से पैदल निकलना ! मोटा फकीर भी घबराता था जिसके पास कुछ नहीं होता था। झुंझुनूं जिले का प्रत्येक अफसर उस मार्ग में घबराता था। हायर सैकण्डरी स्कूल का हैडमास्टर जिसके पास नियम विरुद्ध उठाई गई रकम पांच हजार ! लुटेरा मार्ग में मिल जाये तो क्या हो ? मार-काट। पांच हजार की रकम चर से जाये और अंग-भंग का भय, जान का भय। दुनियां में बदनामी। राजस्थान के एक हजार स्कूलों के हैडमास्टर चर्चा करेंगे। बरसों मिसाल पेश की जायेगी। और फिर जगलपुरी स्कूल में रुपये पहुँच भी जायें तो स्कूल में

कौनसा गढ़ है। डबल लोक वाली बात भी नहीं। दोनों च
हैडमास्टर के पास। किसी भी रात को कोई भी आकर चाबी ह
सकता है। सामान आया नहीं। फर्मों को दे सकते नहीं। आ
श्यकता आविष्कार की जननी। चिडावें के खजाने में ही चालो
में लोकल फंड के पी. डी. अकाउंट में वह रुपया जमा करवा दि
सुख की सास ली।

लेकिन जगलपुरी में सुख कहां ? बड़े दुख की चिंता
हुई तो छोटे दुखने उसका स्थान लिया। बड़ा गया, छोटा आ
छोटा गया बड़ा आया। बस यही क्रम जगलपुरी में चलता।
अड़सठ मेजें झुंझुनूं से ५० किलोमीटर से आई। हैडमास्टर
स्थानीय कारीगरों को बुलाया। रतनाराम खाती ने कहा कि
कहीं गड्ढे खोचरे हैं। कहीं कहीं दो पाट है। कहीं एक मिलि मि
नाप तोल में कम है। आदि आदि। समस्या खड़ी हो गई। गांव
सरपंच, फौजी अफसर आदि दस आदमी स्याने समझदार बुलाये गं
समस्या उनके सामने रखी। निर्णय कठिन था। सामान का
करदें तो स्कूल खाली रह जाये। फिर सामान कभी नहीं आये।
मेजें तो नाप तोल में पूरा नहीं उतरे। सामान का मालि
बजरंगलाल सामान के साथ आया था। उसने हैडमास्टर को अ
प्राइवेट में लेके समझाया कि हैडमास्टर साहब, क्यों झंझट में प
हो। सारे जिले में इसी नाप तोल का सामान सप्लाई किया है
सब हैडमास्टरों ने मंजूर किया है। वही सामान हमने आहर
भेजा है। यह इमानदारी आपको कठिनाई में फंसा देगी। हैडमास्ट
के कुछ समझ में आई। अंत में गांव वालों ने और हैडमास्टर ने
निर्णय किया कि १४ रु० की मेजें दस के भाव लेली जायें। मे
गई। सप्लाई रु० १०३८ का था। अब भाव बदलने से यह बि
८०३ का हो गया। इस प्रकार जंगलपुरी वालों ने एक

रु० २०१ का लाभ पहुंचाया । जिले की दूसरी सब स्कूलों ने चौदह रुपये प्रति मेज के हिसाब से खरीदी और जंगलपुरी के ने हैडमास्टर ने वे ही मेजें १०६० प्रति मेज के हिसाब से खरीदी। इसी प्रकार १९६२ के मार्च की बात है। अलवर की कोई फर्नीचर फर्म थी। उससे कुछ अलमारी, स्टूल आदि खरीदने का आर्डर दिया था। दिसम्बर १९६१ में आर्डर दिया और तीन महीने बाद सामान आया। बारह सौ रुपये के सामान का आर्डर दिया और आठ सौ का सामान आया। सामान नाप तोल में भी स्टेण्डर्ड से कुछ नीचा था। हैडमास्टर ने उसे पेमेंट नहीं किया। वह शिकायत करता रहा। राज्य को आठ सौ रुपये का लाभ हुआ। उस फर्म के लिये ट्रेजरी से बिल पास करवा कर हैडमास्टर ने अपने पास रख लिया। सोचा कि सामान यदि आ जाता है और संतोषजनक स्थिति में आजाता है तो बैंक से पास हुये बिल का पैसा ले आयेंगे और ऐसा नहीं हुआ तो बिल को कैंसल कर देंगे। बिल पर कैंसल लिख दिया गया और फाइल में लगा दिया गया।

अलवर वाली फर्म के लिये हैडमास्टर बाद में पछताए और आज भी पछताता है कि उस बेचारे को कुछ नहीं दिया गया वह गरीब फर्म थी। ऐसा सुना गया। झुंझुनू वाले बजरंगलाल ने बाद में भी हैडमास्टर को बताया कि उन्हें उस सौदे में बड़ा घाटा रहा। चाय पानी आदि में उन्हें कदम कदम पर पैसा लगाना पड़ता है। यह सारा खर्चा फरनीचर पर ही पड़ता है। मटियारा अपना पलीयन थोड़ा ही लगायेगी। जंगलपुरी का यह केस काफी प्रसिद्ध हुआ और आज भी है। इसका सदर्भ इसी किताब में अन्यत्र भी मिलेगा। इस प्रकार साइंस की ग्रांट से फरनीचर खरीदा गया। एक आठ सौ की मेज साइंस के लिये आई। पर उस पर उसी दिन से मास्टरों ने सोना शुरू कर दिया और आज तक सोते

यह मामला नियम विरुद्ध हुआ पर जमनापुरी के हित में था। इस लिये यह भी सी एल धारा में शामिल कर लिया गया।

सी एल धारा में एक और भी नियम शामिल हुआ। पांच सौ रुपये से अधिक का खर्च यदि हैडमास्टर करता है तो उसे अधिकारियों से मंजूरी लेनी पड़ती है। यह धारा दस हजार की थी। इसकी मंजूरी निदेशक से लेनी चाहिए थी। पर यह मंजूरी आज तक नहीं ली गई। १९६७ के मार्च की यह गरीब मास्टरों में चर्चा का विषय बन गई। इस विषय को बिंदु बना कर मास्टरों ने एक बीस पृष्ठीय शिकायत टाइप कराई और निदेशक, उप-निदेशक और सचिव को भेज दी। बीस पृष्ठीय इस गुमनाम शिकायत पर जांच हुई। इसकी चर्चा अलग की जायेगी। यहां पर इतना लिख दिया जाय कि हनुमानजी के जाने के बाद से टीम बिखर गई। १९६६ में कुछ मास्टर ऐसे आये जो पढ़ाना तो दूर रहा, उत्पात की स्कीमें बनाया करते थे। हैडमास्टर हाथ पकड़ क्लास में लेजाया करता था, ऐसी नौबत आ गई थी।

• • •

पौधे फूल आदि पिलानी से मंगाये गये । दूर-दूर से छात्र आ लगे । गांव वालों ने और बच्चों ने हैडमास्टर का साथ इसलिये दिया कि १९६८ मे दसवी क्लास साइंस की पहली बार जगतु से बैठी । मास्टरो के नहीं होते हुये भी रिजल्ट ६४ परसेंट रहा साइंस का रिजल्ट मास्टर बिना ऊंचा रहने से गांव वाले, छ आदि राजी थे ।

कोशिश करते, कागला उड़ाते साइंस खुलने के एक बरस बाद श्री जसवंतमल १८ अगस्त १९६७ को आये । बिना अखबार बिना रेडियो, बिना डाक के समाचार फैल गया कि साइंस मास्टर आ गया । २७ जुलाई १९६८ को जसवंतमलजी चले गये जसवंतमलजी के जाने का जिक्र अन्यत्र पढ़ें ।

आगे जो कुछ हुआ वह पूरी तरह बताना लेखक की सामर्थ्य से बाहर है । आगे की कहानी एक तूफान है । एक हैडमास्टर का पतन है, बच्चों और बच्चो के माइतो की उतनी आशाओं आकांक्षाओं, सुन्दर कल्पनाओं और सुखद योजना के मौत की कहानी है । लगातार तीन बरस १९६६ में, १९६७ में और १९६८ में बच्चों ने सामान खरीदने के लिये दस दस रुपये दिये थे । जनता ने पन्द्रह हजार की लागत की लैबोरेटरी बनाई थी । ऐसा लग रहा था जंगलपुरी एक इतिहास ले रही है ।

अगस्त १९६८ का महीना था । हनुमानजी और उनकी टीम के सदस्य एक एक करके चले गये थे । स्कूल उस समय खाली था । जो कुछ था वह हल्का था । कोई भी मास्टर स्टेचर Stature वाला नहीं था, जो बिगड़ती परिस्थिति और डिगमिगाती हालत में एक छोटासा शक्ति बिन्दु बन कर बिखरती, सिकुड़ती, उस छोटीसी दुनिया को थामता । हनुमानजी के बाद गोकुलसिंहजी उदाहरण आये थे, वे भी वापिस से मिले गये थे । आये नये मास्टर एक बैच

पृष्ठीय गुमनाम शिकायत कर गये उसकी विस्तृत जांच हुई थी। यह प्रचार हो गया था कि हैडमास्टर फौसँ सा गया। इस जाँच मे हैडमास्टर की प्रतिष्ठा को ठेस लग चुकी थी। इधर साइंस की ग्यारहवीं क्लास बन जाने से, पढ़ाई प्रक्रिया में गुणात्मक परिवर्तन आगया था। साइंस का मास्टर कोई नहीं था और ह्यूमैनिटीज का मास्टर कोई नहीं था। हैडमास्टर की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाने वाली एक और जबरदस्त घटना थी। स्कूल के खेल के मैदान में एक मदद्धन ने मकान बनाना शुरू कर दिया। भयंकर हड़ताल हुई। बसवंतमलजी वाली घटना के भयंकर परिणाम हुये। मैदान चला जाने के भयंकर परिणाम हुये। इन सब का वर्णन अलग आयेगा। आगे किया जायेगा, यहाँ नहीं।

१६६८ का जुलाई गया, अगस्त गया, सितम्बर गया, अक्टूबर गया। ग्यारहवीं साइंस की क्लास बिल्कुल खाली बैठी थी। जनवरी १६६६ मे साइंस के प्रेक्टीकल्स होने वाले थे। केवल दो महीने रह गये थे। फरवरी में क्लासें चली जाती हैं। इस प्रकार पढ़ाई के केवल तीन महीने थे। साइंस की क्लासें थी। डूबते समय तिनके का सहारा लेने के लिये आखिर हैडमास्टर पाच नवम्बर १६६८ का बीकानेर निदेशकजी से मिलने गया। जबलपुरी वाला यह तो जानता था कि ओफिस दस बजे खुलता है। गाड़ी से उतरते ही पूछ-ताछ भी करली थी कि ओफिस दस बजे ही खुलता है और निदेशक हैडक्वार्टर पर ही है। दिल्ली मेल से उतरते ही हैडमास्टर सीधा निदेशकालय गया और साढ़े नौ बजे ही उस के दफ्तर के सामने जा कर बैठ गया। सुनसान था। दस बजे। ग्यारह भी बजे। कोई ग्यारह बजे तक स्टाफ आ पाया। जबलपुरी-वाला बैठा था। मानो परदेशी हो। उसी के विभाग का बड़ा दफ्तर था। पर जबलपुरीवाले का इन ऊंची दुकानों से क्या काम पड़ता था। किसकी पहचान बढ़नी आ रही थी। यहां कोई सुनेगा ?

नाम बनेगा कि नहीं ? नहीं बना तो क्या होगा ? मास्टर उपलब्ध कराने के इसने प्रत्यागमन किये मात बरसों में वह दे चुका था और एक भी पूरा नहीं हुआ था। दूध का जला छाछ को फूंकता है। क्या खाली जाऊंगा ? उन उड़ीकती आंखों के सामने खाली जाऊंगा ? नहीं मैं खाली नहीं जाऊंगा। जगनपुरी में कोई घुसने नहीं देगा।

कोई बारह बजे एक सज्जन आये और निदेशक के कमरे में बढ़ने लगे। झिझकते झिझकते जंगलपुरीवाले ने पूछा, बाबूजी, डाइरेक्टरजी कब आयेंगे ? सज्जन कुछ नहीं बोले और कमरे में बढ़ गये। उनके हाथ में पैड था। हैडमास्टर ने ध्यान से देखा था कि वह एल. डी. सी. से तो ऊंचा लगता था। हो न हो, वह यू. डी. सी. होना चाहिये। जल्दी ही अन्य बाबूओं का उस कमरे में आना-जाना शुरु हो गया। पूछा निदेशक आ गये। उत्तर था आ-गये। यह भी मालूम हुआ कि एक बजे मिलेंगे। डेढ़ बजे भीतर गया तो देखा वह सज्जन जो सबसे पहले बढ़े थे निदेशक हैं। हैडमास्टरने शुरु किया:—मेरे यहा २७ सितम्बर से छः अक्टूबर तक दिल हिला देने वाली हड़ताल हुई। आपको इतना लिखा गया। अब वचन दे के आया हूं कि सात नवम्बर तक मास्टर जरूर ला दूंगा। हड़ताल में हुई घटनाओं का विवरण देने लगा तो निदेशकजी बोले कि जल्दी करो, समय नहीं है। हैडमास्टर चुप हो गया और बोला मुझे मास्टर चाहिये। नौकरी मागने के लिये आये हुये पचासों साइंस मास्टरों के उम्मीदवारों में से एक ले लेने को कहा। एक सज्जन हैडमास्टर के बहुत पीछे पड़ गया और उसी को छांट लिया। वह बड़ा खुश हुआ और आभार प्रकट करने लगा। टी. ए. डी. ए. और तीन दिन की ड्यूटी लीव के लिये जंगलपुरी-वाला निदेशक के पास पहुँचा। निदेशक बिगड़ा और बोला तुम्हें यहां किसने बुलाया, किसने भेजा ? स्कूल छोड़ने का परमीशन

भेजता है। नवम्बर १९६६ में ये बदल कर सीकर चले गये। खास विषय गणित अच्छा पढ़ाते थे, पर अन्य काम के हाथ नहीं लगाते थे।

श्री फूलाराम भी विज्ञान विभाग के सदस्य बन कर २० नवम्बर को आ गये। जंगलपुरी इनके जंची नहीं। विभाग ने इनकी सुनली। डेढ़ महीने बाद ८ जनवरी १९६६ को ये बदल कर चले गये।

तेरह जनवरी १९६६ को श्री निरंजन मालवा नाम का मास्टर भी जंगलपुरी के साइंस स्टाफ का सदस्य बना। छः महीने बाद २६ जुलाई १९६६ में यह मास्टर सिंगुरानीली में चला गया। वहां काम जमा नहीं। वहां से शायद कहीं आगे गया हो।

श्री कजोडमल सैनी भी साइंस विभाग में ७ अगस्त १९६६ को आये। ये केमिस्ट्री के अच्छे विद्वान थे। झुंझुनूं के हैडमास्टर ने शिक्षा विभाग से निवेदन किया कि कजोड़मलजी ने ऊंचे अंक प्राप्त किये हैं। उन्हें झुंझुनूं में जिला हैडक्वार्टर पर रखा जाये। झुंझुनूं हैडमास्टर की अर्ज सही पाई गई और कजोडमलजी को जंगलपुरी से झुंझुनूं के स्कूल में दिसम्बर १९६६ में चार महीने बाद ले लिया गया। बीच में आठ अक्टूबर १९६७ से ११ फरवरी १९६८ तक धर्मपाल नामक एक और मास्टर भी साइंस विभाग के सदस्य रह चुके थे। चार महीने बाद इन्हें वहीं बस्ती में नौकरी मिल गई और उन्होंने इस्तीफा दे दिया था। हैडमास्टर ने निदेशक को लिखा कि दसवीं क्लास बोर्ड में बैठ रही है, एक महीने तक इनका इस्तीफा स्वीकार नहीं किया जाय। साइंस का पहला बैच-बोर्ड की परीक्षा में बैठ रहा है। नवीं में पढाई नहीं हुई और दसवीं में केवल तीन महीने हुई। हैडमास्टर ने निदेशक को याद दिलाया कि आर.एस.आर में एक महीने के नोटिस का उल्लेख आता है। ग्यारह फरवरी को उन्होंने त्याग-पत्र की अर्जी दी है। ग्यारह मार्च को स्वीकार कर लिया जाय। जंगलपुरी का काम बन जायेगा। एक

ो निदेशक ने मानली कि जगलपुरी की आवश्यकता को देखते
ार० एस० आर० के स्पष्ट नियमों को देखते हुये ग्यारह मार्च
 इस्तीफा मन्जूर किया जाय । बीस फरवरी १९६८ को
क का तार आया कि अध्यापक को मार्च मे ही कार्य मुक्त
जाय। एक महीने के नोटिस से ही त्याग किया जा सकता है।
 २७ फरवरी को निदेशक का तार आता है कि अध्यापक का
पत्र ग्यारह फरवरी १९६८ से ही स्वीकार किया जाता है।
रवरी १९६८ तक की अध्यापक की स्कूल मे हाजरी थी।
एस० आर० मे एक और नियम जुड़ा । यह नियम जगलपुरी
ने नही जोडा। बस्ती वाले ने यह नियम जोड़ा। आर०एस०आर
उनान्तर बी० एस० आर० बनता जा रहा था। आर्ट्स का
टर साइंस पढाया करता था, क्राफ्ट पढाया करता था,
 पढे बिना संस्कृत पढाता था। अंग्रेजी, हिन्दी, नागरिक-
, इतिहास सब पढाता था। अजमेर के शिक्षा बोर्ड के नियम
कर बी० एस० आर० मे प्रवेश कर रहे थे। उस बीस पृष्ठीय
म शिकायत में बी० एस० आर-नियमों का विस्तार से वर्णन
ंभीर अध्ययन चाहने वाले पाठक मूल पढें । प्रतियाँ कुछ
तो हैं । इतनी दुर्लभ कि हैडमास्टर से जवाब मांगा और
नही दी गई। शिकायत के जाच अधिकारी बोरन गये और
स्टर उत्तर लिखता गया।

ये आये गये मास्टर स्कूल मे क्या करते थे, इसको तो
ा ही करनी चाहिये । इतना कहा जा सकता है कि हैडमास्टर
हते थे। स्थान और स्थिर स्कूल में भी कुछ मास्टर ऐसे होते हैं
हैडमास्टर से झगड़ते हैं। अस्थिर स्कूल का तो कहना ही क्या ?
 गये मास्टरों के बारे मे चौथे पाठ के अन्त मे विस्तार से
ा है।

६

ओफिस स्टाफ

यू० डी० सी० बड़ा बाबू

१ जंगलपुरी के पहले बाबू श्री संग्रामसिंह थे । ये अगस्त १९५० में आये और सितम्बर १९६४ में गये। पाठक सुखमय आश्चर्य करेंगे कि इन्होंने तो स्कूल में स्थिरता रखी होगी । ज़रा ठहरें ! लम्बे ठहरें ! इस लम्बे ठहराव का रहस्य है । ये दो महीने की छुट्टी पर रहते । आते बिल बनाकर तनखा ड्रा करते, पैसा प्राप्त करते । इस काम के लिये इन्हें महीना भर लग जाता क्योंकि एरियर बिल के पास होने में समय लगता है । टी० ओ० नम्बर मांगते हैं । अबसेंटी स्टेटमेंट लगता है । जिन पुराने बिलों में तनख्वा मांगी नहीं थी उनमें लिखना पड़ता है कि फलाने बिल में फलानी तारीख की तनखा ड्रा की गई । चार सालों में पहले बरस में इन्होंने एक भी छुट्टी नहीं ली। १९५० से १९५१ तक पेशीनामा भी है [illegible]

के समय साल भर में पूरी हाजरी थी। जगलपुरी वाला १७ जुलाई १९६१ को आया। १९६१ से १९६४ तक तीन बरसो में ये ३७० दिन तो छुट्टी लेकर रहे। गर्मी की छुट्टी और दिवाली की छुट्टी मे हर बरस दो महीने ये हाजरी तो दिखाते थे.पर वास्तव मे क्या था यह कल्पना का विषय है। शुरु के तीन बरसो मे हैडमास्टर भी जगलपुरी में नही टहरता था इसलिये इन छः महिनो की वह कुछ नही कह सकता। सग्रामजी आये गये बाबू थे। सग्रामजी के बारे मे यह लिखना जरूरी है कि वे पूरे शिष्टाचारी व्यक्ति थे। हैंडमास्टर के साथ उनका आपसी व्यवहार और बर्ताव बहुत अच्छा था। हमेशा जीकारे से बात होती थी। आपस का काणकायदा पूरा निभाया जाता था। जंगलपुरी के तनाव पूर्ण वातावरण मे यह बहुत बड़ी बात थी। भारत मे मुसलमान से बात करने का ढग होता हैं। राजस्थान मे राजपूत से बात करने का भी न्यारा ढग होता हैं। राजपूत को रेकारे की गाल, राजपूत जीकारे से राजी। बस यही रहस्य है राजपूत से निभाने का।

२. महेशचन्द्रजी २७ अक्टूबर १९६४ को आये। इन्होंने काम एक दिन भी नही किया। बदली की कोशिश मे प्राये गये रहते थे। बहुत भले आदमी थे। आज्ञाकारी थे। जानकार थे। बिमार हुये। १५ अप्रिल १९६५ को पिलानी होस्पीटल मे मरे। उनकी सज्जनता याद है। दो बरस बाद ८ फरवरी १९६७

३. को नाथूलालजी शर्मा आये। चुनावो के दिन थे। ये भी लग गये। बबई स्कूल से डिसमिस हुये। हाई कोर्ट मे केस जीत गये लग गये। खाली जगह जगलपुरी थी। जगलपुरी आ गये। केस जीत कर आये आदमी पर भरोसा आसानी से कोई नहीं करता। नाथूलाल जी स्वतन्त्र विचारो के थे। होशियार

बातुओं में से थे । भरोसा करने में इत्तजता और होशियारी भी बाधक होते हैं। जंगलपुरीवाले ने कोई स्थायी काम उन्हें नहीं सौंपा । हां औसाया काम, वे करते थे । सटते नहीं थे। औपचारिक सम्बन्ध हैडमास्टर से ठीक थे । होशियार, अनुभवी चलता पुर्जा बाबू हो और काम उसके पास हो नहीं, जंगलपुरी जैसी बोरिंग जगह हो, ऐसी स्थिति में बाबू क्या करेगा, यह कल्पना की जा सकती है । सारी बातें जान लेने पर ऐसा लगा कि कुछ मोह सोटा, कुछ सुहार सोटा था। नाथूलालजी जैसे सोकर यहन है । डेढ़ बरस की मात्रा जाई के बाद सितम्बर १९६८ में नाथूलालजी चले गये। डेढ़ बरस में नाथूलालजी आठ महीने तो छुट्टी पर रहे । फिर जंगलपुरी लाभ जो उन्हें मिले वे अलग थे । मानो, बिल बनाकर तनखा ली गये। व्यक्तिगत रूप से हैडमास्टर और नाथूलालजी के संबंध अच्छे रहे । दुनियादारी है । व्यवहार में संघर्ष और सहयोग का मेल कराना पडता है ! संघर्ष और सहयोग का सुन्दर मेल कहां नहीं है ? शांति पूर्ण सह–अस्तित्व का सिद्धान्त जीवन के सब क्षेत्रों में लागू है । कितना व्यापक सिद्धांत है! परिवार में नहीं है क्या ? अन्तरराष्ट्रीय जीवन में नहीं है क्या ?

४. नाथूलालजी के जाने के थोड़े ही दिन बाद उप निदेशक जयपुर से आदेश आया । वसंत डो. कालानी का प्रोमोशन हुआ और अजमेर से उन्हें जंगलपुरी में जाने का आदेश हुआ । यह आदेश ६ सितम्बर १९६८ का था । आदेश में लिखा गया कि २० सितम्बर १९६८ तक उन्हें जंगलपुरी पहुँच जाना अनिवार्य है । मगर यह २० सितम्बर तक नहीं गये तो दो बरस तक उन्हें प्रोमोशन नहीं दिया जावेगा । श्री कालानी जंगलपुरी नहीं गये और प्रोमोशन भी हुआ । खूब रही !

५. इसके तीन महीने बाद सिद्धमुख जिला चुरू के श्री किशनलाल शर्मा झुंझुनूं जिले में आये। उस जिले में सदा की तरह खाली स्थान जंगलपुरी में था। निरीक्षक झुंझुनूं से दिनांक १६ नवम्बर १९६८ को श्री किशनलालजी को जाने का आदेश हुआ। किशनलालजी को जिला तो पसन्द आया पर जगलपुरी पसन्द नहीं हुआ। वे निरीक्षक से मिले। दोनों के बीच में तय हुआ कि किशनलालजी छुट्टी लेलें। उन्होंने छः महीने की छुट्टी ले ली। लेने वाला राजी और देने वाला राजी! जंगलपुरी अपनी जाने। सब तरह की छुट्टी खतम हो जाने पर एक उपाय निकाला गया। मनोरंजक उपाय था। किशनलालजी की शर्त थी कि वे झुंझुनूं जिला हैडक्वार्टर पर ही रहेंगे। अन्यत्र नहीं। पर वहाँ झुंझुनूं शहर में जगह नहीं। तो? जहां चाह वहां राह। कुंदनलालजी शर्मा से बात हुई। कुंदनलालजी की बदली जगलपुरी करदी। कुंदनलालजी की जगह किशनलालजी को लगा दिया गया। और फिर कुंदनजी जगलपुरी गये क्या? नहीं। कुंदनलालजी को निरीक्षक ने अपने ही ऑफिस में डेप्यूट कर दिया। जगलपुरी का यह छठा दुरूपयोग है यू॰ डी॰ सी॰ के क्षेत्र में।

एल॰ डी॰ सी॰ छोटा बाबू

१. श्री बृजमोहन शर्मा २० नवम्बर १९६१ को नई भरती से आये और अगस्त १९६२ में चले गये।
२. श्री हीरालाल गुप्ता २७ दिसम्बर १९६२ में आये, ३ जनवरी १९६३ में चले गये—नई भरती से आये थे।
३. श्री घीसासिंह ८ जुलाई १९६५ को आये और १८ अक्टूबर १९६६ को चले गये—नई भरती से आये थे।

४ श्री कल्याणसिंह २१ सितम्बर १९५९ को आये, २१ ...
१९६७ को चले गये—नई भरती से।

५. श्री प्रेमगुप्त ७ अक्टूबर १९६६ को नई भरती से आ...
२३ अगस्त १९६७ को चले गये।

६ बनवारीलाल ... सितम्बर को नई भरती से आये। ...
अक्टूबर १९६७ को चले गये। नई भरती से आये थे।

७, रमेशचन्द्र गुप्त दिसम्बर १९६७ को नई भरती से आये
२० अप्रैल १९६८ को चले गये।

८. शिवनारायण २२ अप्रैल १९६८ को आये। ३१ अक्टू...
१९६८ को छोड़ कर मास्टर बन गये।

९. बनवारीलाल माली ७ अक्टूबर १९६८ को आये। १९७०
चले गये। नई भरती से आये थे।

१०. गदाधर २३ नवम्बर को आये। जनवरी १९७० में चले गये
नई भरती से आये थे।

११. श्री क नई भरती से आये।

नई भरती के ये जंगलपुरी भेजे-जाते थे जहां यू० डी०सी० नहीं थे। ऐसे स्थानों पर इन्हें काम कौन सिखावे? किसे पूछ कर करें, किसे देख कर करें? क्या इन दसवीं पास बच्चों को ऑफिस सौंप दिया जाय? चाबियां दे दी जाय? महत्वपूर्ण कागज और रजिस्टर दिये जायें। किसीने कही सौंपे हैं? ये बच्चे खाली बैठते थे। उधर सुदा हैडमास्टर से झगड़ते थे कि उन्हें चार्ज दिया जाये। निरीक्षक से शिकायत करते थे कि उन्हें चाबियां नहीं सौंपी जाती। वे भी सरकारी नौकर हैं! उनके भी अधिकार हैं! आदि आदि। निरीक्षक महोदय कभी कभी क्या करते थे कि बाबू को अपने ऑफिस में डेप्यूट कर लेते थे। श्री प्रेमगुप्त ऐसे ही बाबुओं में से थे। १३ जुलाई १९६७ से २३ अगस्त तक ये डेप्यूट रहे। फिर बदली करवाली।

समाज शास्त्री और प्रशासन शास्त्री लोगों के लिये यह अध्ययन का विषय है कि बोरडम Boredom की उस दुनिया मे अगर क्लर्कों के पास काम नहीं था तो इनका मन कैसे लगता था। समय कैसे बिताते थे ?

गतिमान् स्थिति

शिक्षा शास्त्री, समाज शास्त्री, प्रशासन शास्त्री और पोलिटिकल मिनिस्टरों को याद रखना चाहिये कि कोई भी स्थिति टिकाऊ नहीं रहती। एक दी हुई स्थिति किसी न किसी तरफ सरकेगी। कल्याण की तरफ नहीं सरकेगी तो बिगाड की तरफ सरकेगी। बिगाड की तरफ थोडी सरक कर रुकेगी नहीं। पहले अस्थिरता आयेगी। फिर अराजकता आयेगी, फिर अवज्ञा आयेगी और फिर आक्रमणता आयगी। Stability to instability to disorderliness to disobedience to aggressiveness. जंगलपुरी मे इसी क्रम से स्थिति बिगडती जा रही थी। हैडमास्टर की कोई नहीं सुनता था। जंगलपुरी में आग सुलग रही थी। जंगलपुरी मे हा हा कार मचा हुआ था। हैडमास्टर दबता जा रहा था—Collapsing निदेशक महोदय अपने निदेशालय के बाबुओं पर अनुशासन कायम करके खुश था कि उसके प्रशासन मे सब कुछ ठीक है। जंगलपुरी मे बदली हो जाने के भय मे बाबू डरे हुये थे और निदेशक सोचता था कि प्राक्रम और होशियारी से उसने अपने साम्राज्य मे खामोशी कायम करदी है निदेशक महोदय अनुशासन-प्रिय और प्रशासन-प्रिय इतने कि शरण में आये हैडमास्टर से यह कहे कि तुमने हैडमास्टर किसके परमोशन से छोडा ?

ध्यान देने लायक बात यह है कि एल० डी० सी० यानी छोटे बाबुओं की जगह खाली नहीं रहती थी। खाली जगह पर

नियुक्ति करके निरीक्षक एक प्रकार के लाभ लूटता था। फि जंगलपुरी से बस्ती में बदली करके दूसरी प्रकार के लाभ लूटता था इसी प्रकार चपरासियों की नियुक्ति करके एक प्रकार के लाभ लूटता था और फिर जंगलपुरी से बस्ती में बदल कर दूसरी प्रका के लाभ लूटता था। दूसरी ग्रेड के मास्टरों तक भी निरीक्षक हा चाल लेता था। इसी प्रकार यू० डी० सी० लोगों को भी टच क लेता था। संयोग से उस समय चार साल तक ऐसा रहा कि निरीक्षक जयपुर का और उप निदेशक जयपुर का और दोनों एक ही जात के थे। सयोग यहां तक था कि मिनिस्टर भी इन्हीं सब का था। शायद इसी लिये यह चार साला कार्य-क्रम निभता रहा। भारतीय परिस्थिति में यह दशा टालनी चाहिये।

चपरासी लोग

अनुभव प्राप्त और जान कार लोग पीछे के पृष्ठ पर सोचते होंगे कि कम से कम चपरासियों की दुनियां में स्थिरता होती ही। पर जंगलपुरी मे यह भी कहा! साधारण परिस्थति मे चपरासियों के स्टाफ मे स्थिरता की उम्मीद इसलिये की जाती है कि वे लोग स्थानीय होते हैं। उसी गांव के होते है। बदली का सवाल ही कहा? परन्तु स्थिति जब बिगाड़ के ढलान से लुढ़कने लगती है तो सब को समेट कर चलती है। १९६७ के जून तक हरिहरलालजी मुग्य निरीक्षक के पद पर। गभीर व्यक्ति थे। १९६७ से एक नौजवान निरीक्षक बन कर आये और १९७१ के मार्च तक रहे। इनके बारे मे बहुतसी बातें चालू थीं। चार बरसों मे इन्होने एक ... करली थी जो उनके अपने उद्देश्यों के अनुरूप थी। नियुक्ति उन्होंने अपने हाथ मे लेली। हैडमास्टरों के

इस अधिकार को छीन कर उन्होंने विभाग को क्या लाभ और हानि की, यह तो बड़े शास्त्रियों का काम है। यहां तो जंगलपुरीवाले की हालत पर लिखने के लिये यह कह देना काफी है कि चपरासी क्षेत्र में भी इन्होंने अस्थिरता कायम करदी। जिले के दूर दूर के भागों में चपरासियों की नियुक्ति करके जंगलपुरीके खाली स्थानों को भरना था। फिर उन्हें बदल कर बस्ती में भेज देता था। खाली स्थान पर फिर नियुक्ति करता और फिर बदल कर बस्ती में भेजता। यही क्रम चलता था। लीलुजी, रिछपालजी, भंवरजी, नाथाजी, गिरधारीजी, हरफूलजी, आदि सब आये और फिर बदल कर चले गये। जंगलपुरी का हैडमास्टर खुद झाड़ू निकालता, फरनीचर झाड़ता, पानी लाता, घंटी घंटे बजाता आदि—

• • •

१०

हैडमास्टर ही यू. डी. सी. और एल. डी. सी. था।

१७ जुलाई १९६१ के दिन हैडमास्टर ने कैश और कैश-बुक सम्भाले। फिर आठ बरस २७ दिन के बाद ये दोनों चीजें १२ अगस्त १९६९ को दूसरे व्यक्ति को सौंपी और दूसरी जंगलपुरी के लिये प्रस्थान कर गया। तनखा के, एरियर के, सामान खरीद के, टी० ए० आदि बिल बनाना, कैश लाना, कैश बुक में लिखना आदि काम हैडमास्टर ने शुरू किये। चपरासियों की आई गई स्थिति के कारण, चपरासियों का काम भी हैडमास्टर ही करता था। लिफाफे में पत्र डालना, गूंद लगाना, बंद करना, पोस्टेज स्टाम्प लगाना आदि। शिक्षा जगत के इतिहास में, राष्ट्र संघ के १३० सदस्य देशों के इतिहास में ऐसा कहीं भी नहीं देखा गया कि हायर सैकण्डरी के हैडमास्टर ने आठ बरस २७ दिन तक लगातार कैशियर आदि का काम किया हो। एक बाबू का नहीं, दो बाबू का काम उस जंगलपुरी-

वाले ने किया कैश बुक में लिखने, भांति भांति के बिल बनाने, फिसेशन करने, बजट बनाने सम्बन्धी कठिनाइयां आईं और खुदने ही सुलझाईं। पचास पचास किलोमीटर तक कोई जानकार आदमी नहीं था। कैश बुक के बारे मे वह खुश था कि कल के पोते बाकी में से आज का खर्च निकाल दो और इस प्रकार आज का क्लोजिंग बैलंस आ जायेगा। अगले दिन नई रकमें चढ़ाओ तो दाईं तरफ का क्लोजिंग बैलेंस बाईं तरफ लिखदो। आमदनी हुई हो तो बाईं तरफ आमदनी लिखदो। नई आमदनी पुराने बैलेंस मे पहले जोड़दो। कोई पेमेंट करना हो तो दाहिनी तरफ के टोटलो मे से घटादो। यह नया पोते बाकी आ जायेगा। फिर कैश से मिलान करदो।

हैडमास्टर खुश था कि सब कुछ ठीक चल रहा है। फिर एक रोज ध्यान आया कि बाईं तरफ से दाहिनी तरफ के सब खानो का जोड़ टोटल से मिलाना चाहिये। लोकल फंड की कैश बुक मे भरे हुये दस खाने होते हैं। हैडमास्टर ने बाईं तरफ से दाहिनी तरफ का दस खानों का जोड़ लगाया। उसने देखा कि टोटल से मल नहीं खाता। चिंता हुई। क्या बात हुई ? हाथ का कैश किताब के कैश से मिलता है तो यह बाया से दाया का जोड़ टोटल से मेल क्या नहीं खाता ? बात समझ मे आई कि ये दोनों अलग अलग बातें है। एक नहीं हैं। सुधारें कैसे ? महीनों का हिसाब किताब देखा। दो खानों की रकमें ऊपर से नीचे गलत उतरी थी। ठीक करली। आजकी रात सलवा दिन। ऐसी गलती फिर कभी नहीं आई। रोज बाईं से दाईं गिन लेता और ऊपर नीचे की बाकी देख कर कैश से मिला लेता। काम चलता रहा। एक रोज पी० डी० खाते से बैंक से रुपये लाये गये। कैश बुक मे दर्ज करने के लिये कैश बुक उठाई। फिर कठिनाई आई। कौनसे खानेमे लिखा जाये ? रिसीट साइड और पेमेंट साइड दोनों मे लिखा जायेगा या एकही साइड मे ? खूब सोचा। बहुत सोचा। मालूम हुआ कि दोनो तरफ लिखा

जायेगा। कैश इन हैंड मे जोड़ने के लिये बांई तरफ लिखा जायेगा और बैंक से घटाने के लिये दाई तरफ लिखा जायेगा। यह कौन्ट्रा एंट्री का सवाल था। एक रोज फिर कठिनाई आई। पी० डी० हिसाब मे पेमेंट के लिये किसी पार्टी को चैक दिया गया। कैश बुक मे कैसे दर्ज करें? क्या दोनों तरफ होगा? रिसीट और पेमेंट दोनों साइड मे होगा या एक साइड में ही होगा? क्या पास बुक में दर्ज किया जाए? आदि कठिनाइयाँ आई। सुलझाई। आगे चल कर एक कठिनाई फिर आई। टूर्नामेंट के लिये अग्रिम रकम अदा की गई। वाउचर आजाने पर अंत मे हिसाब पूरा करना। क्या करें? कठिनाई सुलझाई भी।

इसी प्रकार बिल बनाने मे कठिनाई आई। एक एरियर बिल बनाकर भेजा गया। ट्रेजरी ओब्जेक्शन आया कि नियम २०० का प्रमाण अंकित करो कि साबिक बोगी में लिख दिया। एराय-शुदा बिल पर लिख दिया कि सोबिक बोगी मे लिख दिया है। बरसों इसी प्रकार होता रहा। अन्त में मालूम हुआ कि यह सब गलत था। जब गलती मालूम हुई तो पुराने बिलों की वह फाइल निकाली जिसमें से उस कालिक विशेष की तनखा नहीं मगाई गई थी। उन पुराने बिलों में फिर लिखा गया कि नये बिल बाहर बनाने में हिसाब बनाने को अब यह तनख्वा दो बरसी गई है। [illegible] काम बड़ी शान के साथ चलने लगा। हैडमास्टर अपनी तनख्वाह पर खुशी में मगन रहने लगा। कैश और कैशबुक के काम में उसकी ही बहुत होशियार हो गया था। आठ बरस और २० दिन तक कभी भी एक पैसा भी कम या ज्यादा नहीं हुआ। फिजीकल वेरीफिकेशन पर हमेशा पूरा पाया गया। इस कार्य में कई सावधानियां बरती जाती हैं। इसमें पहली सावधानी यह है कि कैशियर को अपने [illegible] में बहुत ही सम्भल के किसी पैसे [illegible] अपना [illegible] रख देने चाहिये। कैश बॉक्स में से रकम निकालने का उसका [illegible]

मे अंकित होने चाहिये। 'पहले लिख पीछे दे, भूल पडे तो कागज से ले' यह पुरानी कहावत आज भी सही है। कभी कभी ऐसी हालत आ जाती है कि कैश बोक्स मे से रुपये निकालने पड जाते हैं। अभी बाजार से कोई चीज खरीद कर लानी है और पैसा कैश देना है। अभी सिवानी जाना है और जाने वाले को अगाऊ किराया चाहिये। जाने वाला शाम को वापिस आने वाला है। ऐसी सूरत मे उतनी ही रकम का एक कागज दस्तखत-मुदा बोक्स म डाल देना चाहिये। छोटे छोटे दैनिक खर्चों के लिये बीस रुपये रोज कैश बोक्स मे से निकाल कर कैशियर को अपने पास रख लेने चाहिये। बदले मे एक कागज का टुकडा कैश मे रख देना चाहिये। उसमे दिनाक लगा देना चाहिये और उद्देश्य मे Purpose मे इम्प्रेस्ट लिख देना चाहिये। इस प्रकार हैडमास्टर ने अपनी एक काम चलाऊ प्रणाली बनाली थी। परन्तु धीरे धीरे जंगलपुरी की विशेषताए हैडमास्टर के सामने आने लगी। ये विशेषता ज्यो ज्यो ध्यान मे आती गई और अनुभूति मे आती गई, हैडमास्टर की चिंताए बढ़ती। यहां के स्टेज पर अपना पार्ट निभाना इतना आसान नही था जितना शुरु मे लगा। प्रारम्भिक खुशी मुरझाती गई। १९६२ की बात है। जंगलपुरीवाला उप-शाखा विड़ावा मे स्टाफ की तनख्वा लेने गया। उस दिन तनख्वा मिल नही सकी। तहसीलदार बाहर चला गया था और अधिकार पत्र लिख नहीं गया था कि बिलो पर कौन दस्तखत करेगा? हैडमास्टर को विड़ावे ठहर जाना चाहिये था। पर रात को स्कूल सम्भालना था। इसलिये रात भर के लिये वापिस जंगलपुरी जाना पड़ा। हैडमास्टर मौरवे और हमीनपुर के रास्ते से लौट रहा था। रात को आठ बजे के आस पास वह मौरवे और हमीनपुर के बीच मे जगल मे था। मुहाल आने वाले रास्ते के पास जब वह आया तो दो आदमी अचानक आये और बोले ला रुपये दे। हैडमास्टर के कहने पर कि रुपये उसके पास नहीं है, उन्होने हैडमास्टर की तलाशी ली। रुपये नही पाय

गये। पूछा तनखा कहां गई ? उत्तर दिया मिली नहीं, कल मिलेगी। इसके बाद वे लोग सुहारू की तरफ बढ़ गये। इस घटना का हैडमास्टर के दिमाग पर और उसके आगे की गति-विधियों, हाव-भाव, शैली पर जो असर पड़ा, वह कल्पना के लिये एक अच्छा विषय है। इसके बाद उस रास्ते से वह दिन में भी नहीं आया गया। एक रोज हनुमानजी की टोली के साथ आना पड़ा, सो सात आठ आदमियों के बीचमें चलता था। उस घटना का हैडमास्टर पर कितना भय छाया था, इसका अंदाजा इस बात से किया जाता है कि नौ बरस के बाद इन पंक्तियों के रूप में वह मानव समाज के सामने आई है। उसके परिवार के सदस्य भी इन्हीं पंक्तियों में पढ़ेंगे।

जीवन यापन की प्रक्रिया में जोग-संयोग चाम का कितना बड़ा हाथ है। रुपयों का खजाने से नहीं मिलना, उन लोगों से सामना सामना हो जाना। सुखद संजोग। यदि उस दिन तनखा मिल जाती और इस प्रकार चली जाती, तो क्या होता ? सेंध लगाई होती। स्वयं पचते, मास्टर महीनों तनखा बिना रहते। आखिर हैडमास्टर को खुद को अपनी जेब से देनी पड़ती।

काम पर काम पड़ जाता है। आदमी कितनी सावधानी रख सकता है ! तहसीलदार बाहर चला गया था, बिलों पर उसके हस्ताक्षर नहीं हो पा रहे थे। पर तहसील में सभी कहने लगे कि वे अभी आने वाले हैं। थोड़ी दूर के एक गांव में गये हैं। दो बजे के बाद बैंक में पेमेंट नहीं होता है। इसलिये दो बजे हैडमास्टर को वापिस चल देना चाहिये था। परन्तु हैडमास्टर ने सोचा कि उपकोष में काम निपटारा हो जावे तो कल सीधे बैंक ही चले जावें। ज्यादा समय उपकोष में ही लगता था। समय व्यय करने का ... था। जंगलपुरीवाला आगे १९३० में जब जागीर मामली बन्दी ... तो उसने देखा कि बस्तियों में फोन द्वारा सीधा ही बैंक के साथ

प्राइंर होता है। जंगलपुरी में यह परेशानी का मरकज क्यों रख दिया था—कुछ स्पष्ट नहीं हुआ। तो इसी प्रकार उडीकते उडीकते छिडावे में छः बजा दिये। उधर ऊटवाले को पिलानी में छोड कर वह जाना था कि अगर शाम को छः बजे तक पिलानी नहीं पहुँचू तो तुम लोग जंगलपुरी चले जाना और अगले रोज बाद दोपहर फिर आ जाना। इस बातचीत के अनुसार ऊटवाला तो जंगलपुरी चला गया था। इसलिये हैडमास्टर मोटर से ही मोरवे गया और उतर कर जंगलपुरी के लिए चला। मार्ग में यह बीती।

भय में से भय की शाखायें, उप शाखायें फूटती है। भय और वहम की घनिष्टता है, दोनो पडोसी है। वह सोचने लगा कि एक मात्र कैशियर मैं ही हू। गोदरेज की साधारण अलमारी में पैसे पड़े हैं। रात को कोई लुटेरा आकर चाबी मांगले तो क्या हो ! क्या चाबिया देनी पड़ ! आखो के सामने रुपया निकालते और लेजाते देखना पडे। सरकार से लेना हो तो अग भग कराना पडे, मरना पड़े। डबल लोक का महत्व अब उसके समझ मे आने लगा। अगर डबल लोक हो तो एक लोक की दोनों चाबिया एक आदमी के पास हो, और दूसरे लोक की दोनों चाबिया हैडमास्टर के पास हो तो यह भयकर हालत नही आ सकती। हैडमास्टर को अपनी चाबिया लुटेरो को देनी पडे तो भी पैसे नही जा सकते क्योकि दूसरे लोक की दोनो चाबियाँ दूसरे व्यक्ति के पास हैं। अब हैडमास्टर के सिर पर डबल लोक लगाने का भूत सवार हुआ। पर आये कहा से ? सुने कौन ? लिखा पढी का जबाब कौन दे ? कब आये ? हैडमास्टर तो अधिकाधिक अधीर होता जा रहा था। डबल सेफ कहा मिले ? कैसे आये ? पैसे कहा से आयेंगे ? बजट मे ऐसा कोई प्रोवीजन नहीं है। सोचते सोचते, पूछताछ करते कराते मालूम हुआ कि गोदरेज की लोहे की अलमारी के भीतर एक लोकर होता है। पूरी अलमारी

निर्णय लेता कि अफसर की गलती हैडमास्टर की गलती का उचित कारण नहीं बन सकती। हैडमास्टर को अपने अख्तियार तमीजी Discretionary powers बर्तने ही पड़ते हैं। आठ बरस २७ दिन चाबियोंवाला सांप हैडमास्टर अपने गले में लटकाये फिरता था। क्षण क्षण का भय उसने क्षण क्षण करके, क्षण क्षण की हिम्मत बटोर कर निभाया। भय-ग्रस्त व्यक्ति का चिन्तन और चिंतन प्रेरित आचार विकृत हो जाते हैं। विकृति को ढकने के लिये शब्दाडम्बर रचना पड़ता है।

विचित्र विचित्र कृतियों का कारण होना कुछ है और बनाना कुछ और पड़ता है। कैश का भय जान का भय बना। भय से दूसरे भय चिपटने लगे। जगलपुरी का विद्यालय[1] किसी भी कमरे के किवाड़ नहीं थे। हैडमास्टर के ऑफिस की आठ खिड़कियों के किवाड़ नहीं थे। पर दरवाजे के किवाड़ थे। किवाड़ क्या थे ? जाटी के पेड़ के दो तख्ते जोड़ कर खड़े किये हुये थे। धन की रक्षा के लिए हैडमास्टर रात को उसी दफ्तर में सोता था। किवाड़ के आगे एक मेज लगा लेता था। मेज पर स्टूल रख लिया करता था। फिर इस मेज के आगे अपनी खाट बिछा कर सोता था। रात को एक बजे दो बजे तक जागता था। इस जागने के कई कारण थे। देर से सोने के कारण देर से उठता था। बिना किवाड़ की खिड़कियों में से यह दृश्य के कुछ स्वभाव के लोग उत्सुकता से Curiosity से देखते थे। चर्चा करते थे और दूर दूर पहुंचाते थे। कितनी ही ज्यादा गरमी पड़े, हैडमास्टर हमेशा इसी प्रणाली से भीतर ही सोता था। खुले मैदान में रात को सोने वाले लोग कमीजों से हवा करते जाते थे ज्यादा गर्मी की चर्चा करते थे और यह भी कहते कि हैडमास्टर कमरे में सोता है। इस प्रकार से सोने का एक कारण और भी था। गांव में, ऐसे लोग मालूम हो ही जाते हैं जो हैडमास्टर से नाराज होते हैं। पास फेल है, भरती है, ऐसे कैसे सर्टिफिकेट हैं, उमर का घटाना बढ़ाना है,

आगे पीछे काम कराना है, फरनीचर आदि मांगना है आदि आदि थोड़ी सी बात को ले कर पूरी टोली आ खड़ी होती है। हैडमास्टर जितना ही लम्बा वहां ठहरता है, भूल चूक उतनी ही मात्रा में भेंट होती जाती है। grievances of omissions and commission accumulate with the increasing length of stay of the headmaster. आज वह हैडमास्टरों को कई तरह की राय देता है यथा गांवों में लम्बा मत ठहरो, कैश की और कैश बुक की, वाउचर फाइल की फीसें उगाहने की सीधी जिम्मेवारी मत लो। मारे जाओगे। कोई मदद नहीं करेगा। बाबू की मदद हैडमास्टर कर सकता है, पर हैडमास्टर की मदद कोई नहीं करेगा। प्रशासन सम्बन्धी भूल चूक लेनी देनी तो होती हैं ही, मित्र अमित्र, लगाव अलगाव, समय-समय पर पारस्परिक सहायता और सहारे का जमा खर्च, Credit debit बढ़ते जाते हैं। ब्याह शादी, तीज त्यौहार के जीमन से ही हैडमास्टर लद जाता है। छोटी मोटी जलनें, ईर्ष्यायें, राग द्वेष, लाग लपेट बढ़ते जाते है। हैडमास्टर फसता जाता है, दबता जाता है। मैंदा साफ है। करणी धरणी साफ है। इन बातों से हैडमास्टर के रहने सहने में सुरक्षात्मक विकृतियां आईं।

दुख में से दुख निकलती है। भय में भय निकलता है। भय रूपी दुख आगे बढ़ने लगी। जंगलपुरी के उस बोरडम में Boredom में १९६८ में एक नया भय पैदा हुआ। बड़ा भयंकर भय ! उसने सोचा आज सात बरस से मैं इस स्कूल का कैशियर, डु० डी० सी० हैडमास्टर आदि हूं। सभी की वाउचर फाइलें, फीस उगाही सो सब रगीद बुक की सोफिस कोपियां ! अगर संयोग का दफ्तर में आग लग जाये और रेकर्ड जल जाय तो हैडमास्टर को बचाने वाला कोई नहीं। सब कहेंगे सात बरस के पाप धोये हैं। कहानी जरूर प्रसिद्ध हो जायेगी। सुनी सिड़कियां है। भारी

सिगरेट के टुकड़े अन्दर पड़ सकते हैं। होली के दिन दिवाली के दिन पटाखे खुली खिड़कियों से अन्दर फेंके जा सकते हैं। जानबूझ कर आग लगाई जा सकती है। नई विकृतियों ने जन्म लिया। दफ्तर से सब कागज हटाये गये। मेज पोश हटाया गया। कमरे के आले खाली कर दिये। दफ्तर में बीडी सिगरेट पीना बन्द किया गया। यहा तक कि मेज पर, स्टूल पर, दिया सलाई रखना बन्द कर दिया गया कि न जाने दिया सलाई आप ही जग उठे। दफ्तर में सिर्फ लोहे की अलमारी रहने दी गई। उसमे हिसाब किताब के कागज और कैश थे। हैडमास्टर उस दफ्तर का २४ घन्टे का चौकीदार बन गया। यह १९६८ का प्रसिद्ध साल था। हैडमास्टर बीसिया मुसीबतो मे फंसा था जिनका जिकर यथा स्थान और यथा समय किया जावेगा। स्कूल की बढोतरी मे Growth मे अवरोध था जिससे जनता नाराज थी। स्थानान्तर नीति पर हुये मतभेदो को लेकर निदेशक नाराज था। साइंस की पढ़ाई नही हो रही थी, इस पर छात्र नाराज थे, आये गये मास्टरो को पढाई और अनुशासन पर टोकना पड़ता था, इसलिये कुछ मास्टर वैरी का रूप धारण कर रहे थे। हैडमास्टर के पतन की Collapse की कहानी आगे पढे।

दफ्तर की सफाई क्या की गई खाली कर दिया। निनान कर दिया, Weed out कर दिया। पुराने सरक्यूलर, अनावश्यक रजिस्टर, स्टेशनरी, फोर्म सब जला दिये, कई विवटल कागज जलाये गये। मास्टर कहने लगे हैडमास्टर पाप धो रहा है। जाने वाला है। खतरे के कागज जला रहा है। Weeding out की वह घटना बीस पृष्ठीय शिक्षायतनामे मे शामिल है। बीस पृष्ठीय शिका-यतनामे की कहानी अन्यत्र पढ़ें। निनाग क्रिया पर जो डिवेट छिड़ी उसके उत्तर में एच० एम० कहा करता था:— ऐसा मालूम पड़ता है ये लोग ओफिसों मे कागज के रख रखाव Maintenance

की समस्या को नहीं समझते है । कागज को नष्ट करना इतना ही
जरूरी और महत्वपूर्ण है जितना कागज की रक्षा करना। जो
नष्ट करने के महत्व को नहीं समझता वह रक्षा करने के महत्व को
समझता । इस सदर्भ में नीचे लिखी बातें याद रखनी चाहिये।

१ अनावश्यक कागजों के आवश्यक कागजों में मिल जाने
भय रहता है । आवश्यक कागज को ढूंढने में समय न
पड़ता है फाइलों में फाइलें दबी पड़ी रहती हैं। कुछ
बाबू कागजों को सिरवाइज बहुत करते हैं। ऐसे का
ढूंढना बहुत ही कठिन हो जाता है। बाबू जितना समय
करने में लगाता है उतना ही कागज ढूंढने में लगाता है
कागज जितने थोड़े हों उतना ही अच्छा ।

२ हर ओफिस में जगह की कमी होती है । जगह करने के लि
वीड आउट जरूरी है । हर अलमारी में और हर रैक
कुछ खाली स्थान रिजर्व में रखना चाहिये जो बिना छांटे
कागजों के काम आ सके काम में लेने के लिये निकाली
फाइल थोड़े समय के लिये रखी जा सके ।

३. शिक्षा बोर्ड अजमेर के पत्र, परिपत्र आदि बहुत से बेकार हो
हैं जैसे नियम भंगकारी छात्रों को परीक्षा से वंचित कर
आदि । अधिकाश पत्र दो महीने में अनावश्यक हो जाते
क्योंकि वे ही बाते प्रोस्पेक्टस में आजाती है । परीक्षा के फो
भरने सम्बन्धी बाते भी महीने भर में अनावश्यक हो जाती हैं

४. विभाग के पत्र परिपत्र महीने में गैर जरूरी हो जाते है, क्योंकि
शिविरा नाम की विभागीय पत्रिका में सब आ जाती हैं।
यह पत्रिका पुस्तकालय में रखी जा सकती हैं ।

५. आर० एस० आर०, जी० एफ० आर० आदि नियमों के परिप
आज कल जल्दी ही अनावश्यक हो जाते हैं क्योंकि प्राइवे
फर्म इन नियमों को पुस्तकों में शामिल कर लेते हैं। यह भी

हैं कि सरकारी प्रेम जयपुर से कुछ महीनों मे लिस्टें छप कर निकल जाती हैं ।

६ स्टाफ के फिक्सेशन, बदलिशा आदि से सम्बन्ध रखने वाली फाइलें रखनी चाहिये । ये अस्टेब्लीशमेंट की फाइल कहलाती हैं ।

७. कैश सम्बन्धी वाउचर, काम मे ली हुई रसीद बुकें, कैशबुक सावधानी से रखी जानी चाहिये। इन्हे वीड आउट नहीं करना चाहिये । खर्चे की वाउचर फाइल और अक्वीटैंस रोल कैसे रखनी चाहिये, यह जानना जरूरी है । फाइल की इंडेक्स, सूची हो और इंडेक्स सूची मे वाउचर आदि, फर्म आदि का नाम होना चाहिये । इन बातो का विस्तृत विवरण अन्यत्र आयेगा ।

८. दो महीने से वीड आउट का काम कर लेना चाहिये ।

६. मेजों के दराजों का वीड आउट महीने से हो जाना चाहिये ।

१०. मेज का वीड आउट रोज होना चाहिये । इन बातों का अधिक विवरण पाठ ग्यारह मे देखें ।

• • •

११

हैडमास्टर चपरासी भी था।

जबलपुरीवाला कहता था कि जो डॉक्टर अच्छा कम्पाउण्डर नहीं है, अच्छा नर्स नहीं है, वह अच्छा डॉक्टर नहीं हो सकता। हैडमास्टर के लिये आवश्यक है कि वह एक अच्छा क्लर्क और अकाउण्टेंट account हो। विद्यालयी संबंधों के अध्ययन से पता चलता है कि मास्टरलोग, चपरासी आदि बाबू का बहुत आदर करते हैं। कहीं कहीं तो यहां तक देखने मे आता है कि हैडमास्टर से ज्यादा आदर कैशियर आदि बाबूओं का है। कारण साफ है। हैडमास्टर सिर्फ वाइने जानता है जो मास्टर भी जानते है। बाबू वह बात जानता है जो मास्टर नहीं जानते—नौकरी से और तनखा से संबंधित नियम कायदे। बाबू उन कागजों का मालिक है जिनके सहारे मास्टर की नौकरी टिकी है। लेकिन सावधानी यह रखनी चाहिये कि उसके यहां बाबू जरूर हो और उसके चार्ज में ओफिस

का काम हो। बाबू और मास्टर के विवाद मे हैडमास्टर सफलता से बीच बिचाव कर सके। कोई काम बाबू नही करता हो तो खुद कर सको। बाबू का मार्ग दर्शन कर सके। हैडमास्टर एक बाबू पर बाबू है, खजांची पर खजाची है।

एल. डी. सी. यानी छोटे बाबू का काम रिसीट डिस्पेच, पत्र पाना और पत्र भेजना होता है। नये आदमी को यही काम सौंपा जाता है। इस काम मे सिद्धांत और कार्य Theory and practice है। डिस्पेच के काम में नीचे लिखी बातों का ध्यान रखना चाहिये।

१. कागज को समेटना-सामटना इस प्रकार हो कि लिफाफे का भीतरी भाग पूरा भर जाय। लिफाफे का बन्द होने वाला भाग थोडा खाली रहे जिससे खोलते समय कागज फटे नही। कागज इस प्रकार सामटो कि अगले ठिकाने का पता ऊपर बाहर रहे जिससे कि लिफाफे पर पता लिखा जा सके या लिफाफे के पते का मिलान कागज के पते से हो सके और समेटे सामटे कागज को उधेडना नही पड़े।

२. गूंद लगा कर बंद करना —कागज भीतर पड गये, पते ठिकाने भी हो गये, अब उन्हे गूंद लगा कर बंद करना चाहिये। गूंद लगाने का काम मेज पर नहीं होना चाहिये। धरती पर होना चाहिये, यदि करना ही पडे तो नीचे अखबार बिछा लेना चाहिये। एक अखबार हाथ मे रखना चाहिये जिससे गूंद लगे लिफाफे के ढक्कन को दबाया जासके। गूंद लगा कर गूंद पर आंगली फेरने की जरूरत नही, शीशी पर लगे रबर से ही गूंद फैलाया जा सकता है। लिफाफे ज्यादा हो और लिहाई मे चेपने हो तो आंगली को ही काम मे लेना चाहिये।

३. पोस्टेज की टिकट पते के दाहिने तरफ वाले कोने पर लगानी चाहिये।

४. अपने सारे ऑफिस का पता हमेशा बाईं तरफ के नीचे के कोने पर होना चाहिए। स्टाम्प लगानी हो तो वह इतनी साफ लगे कि पढ़ी जा सके। बाबू और चपरासी मोहर को सिर्फ दस्तूर समझ कर जब चाहे तब लगाते हैं। देखा नहीं जाता है कि पढ़ी गई या नहीं इस ओर उनका ध्यान नहीं होता है यह खेद की बात है। बाँयीं ओर ऊपर भारत सरकार की सेवार्थ यह लिखना नहीं भूलना चाहिये।

५. डिस्पैच का काम करने वाले चपरासी को बार बार बदलना नहीं चाहिये।

६. स्टाम्प अच्छी नहीं लगने के कई कारण होते हैं। बड़ा कारण यह है कि स्टाम्प पैड खराब होता है। स्टाम्प पैड को हर समय ढका रखना चाहिये जिससे स्याही ज्यादा समय तक चल सके और उस पर धूल आदि नहीं पड़ सके। हर वक्त अगर स्टाम्प खुला पड़ा है तो समझो बाबू, चपरासी, हैडमास्टर, सब खराब है।

७. स्टाम्प पैड अच्छी क्वालिटी का होने ही से अच्छी स्टाम्प लगेगी, सेल्फ इंकिंग पैड होना चाहिये पानी नहीं डालना चाहिए।

८. स्टाम्प और सील—दोनों मे फर्क है। सील पीतल आदि धातु की बनती है और स्टाम्प रबर आदि की बनती है। स्टाम्प के लिये स्याही चाहिये और सील के लिये चपड़ी sealing wax चाहिये। सील करना, माइने बंद करना और स्टाम्प करना माइने पहचान की निशानी लगाना। स्टाम्प टिकिट को भी कहते हैं। रेवेन्यू स्टाम्प, पोस्टेज स्टाम्प आदि। भूल से जानकारी न होने से स्टाम्प को सील कहते हैं, बल्कि आज कल तो ऐसा खोटा चलन हो गया है कि स्टाम्प को ही सील कहते हैं।

९. पोस्टेज की बचत और समय की बचत के लिये साधारण पत्र निस लिख भेजे करने जाना चाहिये। फिर एक अरजट व म आता है। उस अरजट, जरूरी पत्र के साथ ही सब कागज भेज देने चाहियें। एक ही बार में सारे कागज लिख लेंगे ऐसा नहीं सोचना चाहिये। ऐसा सोचोगे तो ये कागज अरजट पत्र के साथ नही जायेंगे। अध्यापकों से आने वाले आवेदन-पत्र इसी प्रकार भेजे कर लेने चाहिये।

१०. हर एक प्रकार की ओफिस कोपी रखना गलत है। ओफिस कोपी एक, दो, तीन आदि उन्हीं कागजों की रखनी चाहिये जिनमें लिखी बातें एकत्र करने में समय और परिश्रम लगा हो, या जिनका कानूनी महत्व हो।

११. कागज का जवाब समय से पहले देना चाहिये जिससे कि नहीं पहुंचने की हालत में रिमाइंडर आने की गुंजायश हो। समयावधि की आखिरी घड़ी आ गई हो और रिमाइंडर आदि की गुंजायश नहीं रह गई हो तो कागज रजिस्टर्ड पोस्टेज से भेजना चाहिये।

१२. दस्तखत का मतलब इनिशियल से लिया जाता है जो साफ साफ गलत है। दस्तखत हमेशा पूरे होने चाहिये और लिखावट ऐसी हो कि सब कोई पढ़ले। पढ़ने पहचानने में नहीं आते हैं तो उन दस्तखत का मोल बहुत ही सीमित है। मास्टर, बाबू, हैडमास्टर, सभी इस दोष से पीड़ित हैं। आश्चर्य यह है कि इधर किसी का भी ध्यान नहीं गया। अपठनीय और अधूरे दस्तखतों से सभी को परेशानी है, पर बोलता कोई नहीं है।

१३. यह याद रखना चाहिये कि कागज पर और दस्तखतों पर अगर दिनांक नहीं है तो उन दस्तखतों और पत्रों का मोल अधूरा है।

१४. पत्र में या उत्तर में भूमिका की जरूरत नहीं है। आरम्भ सीधा होना चाहिये।

१५. शब्द "पूर्ति" सदा काम में आता है और सदा ही गलत लिखा जाता है। गलत इसलिए है कि शब्द "रवि" में छोटी मात्रा होती है। "रश्मि" में दोनों मात्राएँ छोटी होती हैं और 'पूर्ति' में दोनों मात्राएँ बड़ी होती है।

१६. जहाँ तक हो सके शब्द "औं" का प्रयोग टालना चाहिये। 'औं' लगा कर जो वाक्य बनाया जायेगा वह लम्बा हो जायेगा और उसमें व्याकरण का दोष तो आयेगा ही, अर्थ भी गड़बड़ हो जायेगा।

१७. बड़ा वाक्य टालना चाहिये। बड़े वाक्य ही में से शब्दों का क्रम खराब होता है। बड़ी बात यह है कि विराम चिह्नों की गलती हो जायेगी।*

१८. संस्कृत मूलक हिन्दी शब्दों में अंतिम 'ति' हमेशा छोटी होती है। यह जानकारी अधूरी और अस्पष्ट होने से लोग 'श्रीमती' में भी मात्रा छोटी लगाते है। सब 'ति' छोटी होती है, पर 'श्रीमती' की 'ती' बड़ी होती है। इसी प्रकार अंतिम 'वि' छोटी होती है।

हैडमास्टर की मेज

१. मेज हैडमास्टर की नहीं है। वह सार्वजनिक मेज है। हैडमास्टर के कागज उस पर नहीं होने चाहिये। वह खाली रहनी चाहिये। बिलकुल खाली रहनी चाहिये। यह मेज तो काउन्टर है।

२. छात्र आयेगा कागज आपकी मेज पर रखेगा, दस्तखत कराने हैं, टूं कॉपी करानी है। स्काउटिंग वाला, खेल वाला एन सी. सी. वाला, पुराने छात्र, टी. सी. लेने वाले, कोशन मनी लेने वाले, अखबार बेचनेवाले, भांति भांति के एजेंट आदि आयेंगे वे अपने कागज हैडमास्टर की मेज पर पटकेंगे। अगर हैडमास्टर के अपने कागज पैड आदि है तो जानते हो क्या होगा ? आने वालो के कागज आपके कागजो पर होंगे। जाते समय जब अपना कागज, फाइल उठायेंगे तब स्वभावतः वे लोग गहरा हाथ मारेंगे। बहुत सम्भावना है कि आपके कागज आपकी फाइल साथ ले जायें। आपकी फाइलें यदि भेज पर हैं तो आने वाले कुछ लिखने के लिये आपकी फाइल को अपने कागज का गत्ता बना कर, लिखने का सहारा लेने के लिये उठा लेंगे, जाएंगे तो साथ ले जायेंगे। मास्टर लोग ऐसा बहुत करते हैं। आने वालों को अक्सर कागज के टुकड़ों की जरूरत पड़ जाती है। वे फिर आपकी मेज पर पड़े कागजों पर और फाइलों पर हाथ मारेंगे। लिखा हुआ कागज है और एक तरफ से खाली है तो आगन्तुक महोदय फाड़ेंगे। मन के लिये भैंस मार डालेंगे। मेज के पास जो भींत है उस पर कई कीलें गाड़ो। टँग मे एक कागज पिरो कर कील मे टांग दो।

३. हैडमास्टर की मेज से, उसके हाथ से जो भी कागज जाये वह लिफाफे में बंद हो के जाये। डाक में आने वाले अच्छे लिफाफे रख लेने चाहिये, उन्हीं लिफाफों में कागज डाल कर भार आदमी को देदो, कागज अगन्तुक का है, पर अनुराई आपकी है जिसके लिये आगन्तुक आभारी होगा।

४. हैडमास्टर अपनी मेज साफ रखता था। उस पर कागज नहीं रखता था। एक कतरनी, एक सुई, मोटा डोरा, सुराख करने

की एक पेन, एक सुमा, एक गोंद की शीशी, उसकी मेज पर हर समय रहते थे। हर समय ही इनसे काम लिया जाता था। पास की भींत पर एक कागज, एक लिफाफे टंगे रहते थे। बोर्ड के सर्टीफिकेट टी. सी. आदि महत्वपूर्ण कागजों को वह गोल समेट कर ऊपर एक एक कागज लपेट कर, धागे से बांध कर बच्चों को दिया करता था। गोल समेटना जिससे कागज पर सल न पड़े।

५ इस सदर्भ मे उसकी की सीख थी—कागज में सल मत पड़ने दो, मोड़ की लकीर मत पड़ने दो। गोल समेटो, ऊपर एक कागज लपेटो। घर ले जाकर उसे फाइल में या पैड मे रखो। सब से अच्छा है, पैड मे रखो और फलैप से ढक कर फीते बांध दो। अकेले कागज को कहीं लाना ले जाना हो तो गोल समेटो और ऊपर कागज लपेटो। हैडमास्टर कहता था—कागज की सल, मोड़ उसकी टी. बी. है। मोड पड़ते ही उसका सब Wear and Tear शुरु हो जाता है। यह रोग असाध्य है, लाइलाज है। कागज जरूर मरेगा, धोखा देगा, जायेगा। हैडमास्टर और बाबू को कागज की यह आदत जान लेनी चाहिये और इस आदत के अनुसार ही कागज के साथ व्यवहार होना चाहिये। वह कहता था कि बाबू और हैडमास्टर कागज के रक्षक हैं, पर वास्तव मे कागज के प्रति उनके आचरण से ऐसा लगता है कि वे कागज के रक्षक नहीं हैं, नाशक हैं।

६. कैश बुकः—कैश बुक पर बाबू का कुहनी समेत पूरा हाथ टिकता है। कागज पर मैलापन और चिकनाई लग जाती है। हाथ का पसीना कागज के लगता है। लिखे हुये पर भी बाबू हाथ टेक देता है। लिखाई मिटती है, फीकी पड़ती है। कैशबुक में काम करते समय पन्ने पर दूसरा कागज रखो, और फिर काम करो। आंकड़ों पर और लिखाई पर हाथ मत टेको।

७. कागज को अकेला मत छोडो, कागज को कागज से मिलाओ। फाइल मे लगाओ, पैड मे लगाओ। थोड़े समय के लिये अलग रखना है तो भी उसे पैड मे बाधो। पैड नही हो तो उसमे टैग लगादो। एक कागज, एक टैग ! कोई हर्ज नही। आपने नियम का पालन किया ! कागज को टैग में लगा दिया। अब यह कागज नहीं है। अब यह फाइल हो गया है। अब चपरासी इसे कूड़ा करकट के साथ बाहर नहीं फैंकेगा। मेज से उड गया है तो चपरासी उठा कर ऊंचा रख देगा। टैग पहचान है। फाइल हल्की है या कागज अकेला है तो उस पर पेपर वेट लगा दो।

८. जगलपुरीवाला कहता था — फर्श पर पडे कागज को उठाओ, फाडो और वेस्ट पेपर बास्केट मे फैंको। इस मे एक क्षण की चूक मत करो। मेज पर अगर कोई रफ पेपर आगया है तो उसे भी फाड़ कर बाहर फैंको या बास्केट में डालो। दफ्तर के सामने के वरंडे मे भी रफ कागज या टुकडे हैं तो उठाओ और परे फैंको। कागज रक्षकों के लिये यह महान् नियम है। इस नियम को नहीं निभाने से बिगाड़ होने लगता है। यह आदत मत पडने दो कि कागज फर्श पर पड़े और आप उनके पडे रहने को सह रहे हो। आपकी आदत इतनी तीखी हो जाय, भावना की तीक्ष्णता इतनी बढ जाये कि आप फर्श पर पडे कागज का पड़े रहना सह नहीं सको। जब तक आप कागज उठा नहीं लें, आपका जी नही लगे, तबियत खराब होने लगे, उसे उठा कर फैंकने पर ही आपकी तबियत ठीक हो, ऐसी आदत डालो। जगलपुरी के एक पोस्टमैन की मिसाल हैड-मास्टर दिया करता था। पोस्टमैन का नाम सेडूराम था। उसे हवलदार कहते थे। चलते चलते उसकी नजर बाड़ में फंसे एक पोस्ट कार्ड पर पड़ती। वह फौरन रुकता। ऊंट पर होता

तो नीचे उतरता, पोस्ट कार्ड को उठाता और देखता कि किसी को देने का तो नहीं है। अनावश्यक और बेकार होता तो उसे फाड़ कर फेंकता, तब आगे जाता, तब उसे चैन पड़ता। उसके पोस्ट आफिस में रफ पोस्ट कार्डों के, लिफाफों के तथा तथा अन्य पोस्टल आर्टिकल्स के पड़े रहने का सवाल ही नहीं था। जंगलपुरी के ओफिस आता, आते ही पूछता–हैडमास्टरजी इस आले में ये पोस्ट कार्ड कैसे पड़े हैं? दिये नहीं, बांटे नहीं! हैडमास्टरजी, यह पोस्ट कार्ड डाक मे डालना है क्या? यहां कैसे पड़ा है? ऐसे थे हवलदार सेडूरामजी। अस्सी बरस के थे। पार्ट टाइम पोस्ट मैन थे। सोलह किलोमीटर दूर गिवानी से डाक लाते थे।

हैडमास्टरजी कहते थे –कागज का आदर करो,बदले में आभार स्वरूप दस गुणा आदर कागज आपका करेगा। Respect the paper, it will respect you tenfold in gratitude. आपकी, बाबू की या साफ करने वाले चपरासी की असावधानी से कागज अगर हवा से उड़ कर फर्श पर आगया है, बाहर बरण्डे में भी आगया है तो वह बोलने लग जायेगा कि मैं यहां पड़ा हूं, मुझे उठाओ, जब तब आप नहीं उठायेंगे आपका ध्यान खींचता रहेगा। वह बोलेगा कि मैं अकेला हूं, अनुचित जगह हूं, मुझे भाइयों में भेजा करो, उठाओ। फर्श पर पड़े ही अगर कागज बहुत से पड़े हैं,आपने रद्दी समझ कर नीचे डाल रखे हैं, तो फिर ये रद्दी कागज दफ्तरों को भी खींच खींच कर लायेंगे और चपरासी की भांति के साथ सब भेजे के भेज बाहर फेंकेंगे। फिर नहीं मिलेंगे। बेकार कागज में अच्छा मिलेगा, तो अच्छा दूर रहेगा।

६: हैडमास्टर की अटल सीख —कभी ओवर राइटिंग Over writing मत करो। पहले आंकड़े को या शब्द को दूर करो

से काट दो और दूसरा फिगर या शब्द लिख दो। पूरे दस्तखत कर दो। ओवर राइटिंग से दोनो फिगर संदिग्ध हो जाते हैं।

हैडमास्टर की उप मेंजे Sub tables

१०. दफ्तर के बाबू सारे दिन कागज लिखते हैं, हैडमास्टर मोटे रूप मे उन्हे देखता है,उन पर साइन करता है,इसके लिये भी मेज चाहिये। कुछ ऐसे होते हैं जिन्हे हैडमास्टर खुद ही लिख कर बाबू को देता है,कुछ को डिक्टेट कराता है। कुछ फाइलें हैड-मास्टर की अपनी होती है जिन्हे वह अपनी ही लोहे की अलमारी मे रखता है। जहां तक हैडमास्टर के अपने कागजो और फाइलो का सवाल है, एक छोटी मेज अपने दायें बायें या पीठ पीछे रखी जानी है जिसके लिये सामने वाली बडी मेज एक काउंटर मात्र है। जहा तक बाबू के कागजो और फाइलो का सवाल है, वे सामने वाली बडी मेज पर ही रहेंगे क्योंकि वे छोटी मेज के लायक नही हैं। बाबू तब आवे जब हैडमास्टर बुलाये। परन्तु इस बीच यदि कोई तीसरा व्यक्ति कागज लेकर आता है तो उनका क्या करे ? इसके लिये एक और उप मेज हो। यह तीसरी मेज तीसरे आदमियों के कागजो के लिये हो।

दरी

१. जंगलपुरी वाला कहता था — दरी मत बिछाओ, कभी मत बिछाओ। स्टोर मे बंद रखो। किसी को मांगी मत दो। साफ रहेगी, नहीं रंगे। नट जाओ और फिर कभी हां मत करो। आपके कमरे मे जो बड़ेगे उन सब की जूती धूल, मोबर और

कीचड़ से भरी है। धूल गर्दा से भरी है। नहीं भरी है क्या ?

२. आपके कमरे में जो आयेंगे आते ही बीड़ी सिगरेट सिगारेट सभी कहां डालेंगे ? सिगरेट टुकड़े कहां डालेंगे। वे अपने जेबों में डालेंगे क्या ? नहीं। तो फिर ?

३. तीसरी बात यह है कि वह साफ हो जायेगी क्या ? ऊपर बिखरे कागज के टुकड़े ही साफ होंगे। उसके भीतर जो धुल घुस गई है, वह पड़ी रहेगी।

४. आपके कमरे में आने से पहले यह दरी बहुत ऊंच नीच देख चुकी है। इस पर कुत्तों ने टट्टी बैठी होगी, मूता होगा, टींगों ने टट्टी बैठी होगी, मूता होगा, बैठने वालों ने हाथ से नाक का सेडा निकाल कर इस पर पूछा होगा। टी. बी. के रोगी इस पर बैठे होंगे और इस पर थूका होगा। नहीं क्या ? सोचो क्या करते हो ?

५. टेबल क्लोथ धोया जाता है, कमरे का फर्श भी साफ किया जाता है और धोया भी जाता है। होली दिवाली, तीज त्यौहार ब्याह शादी पर भीतों पर भी सफेदी करके मैला उतार दिया जाता है। परन्तु यह दरी ही एक ऐसी विडम्बन है, फरनीचर की चीज जिसे कभी साफ नहीं किया जा सकता। दरी इस प्रकार कुदरत द्वारा अभिशप्त है। The carpet is cursed by nature and condemned to perpetual dirt, filth and infection.

६. देखो, यह क्लास नीचे बैठी है। जनवरी के महीने की ठंडी रेत पर बैठी है, करडे फर्श पर बैठी है। फर्श ठंडा है। फर्श गर्म है। अगर आपके पास दरी है तो बच्चों को दे दो। आप

माइनपना निभायेंगे और बच्चे टाटरपना। आप कहेंगे हम हैडमास्टर जंगलपुरी के नहीं हैं। मैं पोद्दार का हूं, मैं दरबार का हूं, मैं मानक चौक और महाराजा का हूं, मैं सादूल और स्पोर्ट का हूं। हां, हैं आप! बधाई है! परन्तु फिर भी फरनीचर की कमी है और अगर कमी नहीं है तो आपने छात्रों को प्रवेश नहीं दिया है। अच्छा होता आप प्रवेश देते और छात्रों को वहां बैठाते, यहां बैठाते। दरी पर बैठाते। दरी बच्चों को देते।

७ आप दरी बिछा कर घमंड करते हैं, इसका आधार नहीं है। नैतिक आधार नहीं है, हाइजिनिक आधार नहीं है, कानूनी आधार नहीं है, सुरक्षात्मक आधार नहीं है। बच्चे ठंडे फर्श पर बैठें, आप दरी बिछायें!

सफाई

अपने ऑफिस की सफाई जगनपुरीवाला खुद ही करता था।। वह कहता था कि चपरासी लोग अभी ट्रेंड नहीं है। वे साफ कम करते है और गंदा ज्यादा करते हैं। फर्श की धूल उड़ कर कागजों पर जम जाती है। चाहे चपरासी तो उन्हें साफ करने आते ही नहीं है। जगनपुरीवाला बायें हाथ में प्लेट ले लेता था और दाहिने हाथ में कागज का पुर्जा ले लेता था। एक आले की धूल भेली कर के प्लेट में पूर में भरता कर डाल लेता था। फिर दूसरे आले की भेली कर ऊपर की ऊपर ही प्लेट में डाल लेता था। नीचे फर्श पर नहीं पटकता था। धूल ऊपर से नीचे कभी नहीं पड़ती। वह ऊपर ही इधर उधर चीजों पर जम जाती है। उसका सिद्धांत था—ऊपर की धूल ऊपर ही भेली करके ऊपर ही मसे पर या प्लेट पर डाल लो। फर्श की

१२

परीक्षा फल

जयमपुरी की स्टाफ पोजीशन का विवरण दिया जा चुका है। समाज को यानी बस्ती वालों को जब यह नई जानकारी मिलेगी तो पहली प्रतिक्रिया आश्चर्य और अविश्वास, दूसरी प्रतिक्रिया यह कि निभी कैसे, तीसरी यह कि छात्र पास कितने हुये, रिजल्ट कैसा रहा।

१९६१ से १९६९ का परीक्षा फल

१९६० में जयमपुरी में नवीं कक्षा चालू हुई। १९६२ में दसवीं की परीक्षा स्कूल में ही हुई। १९६५ में सेकण्डरी शिक्षा प्रणाली का तीन वर्षीय पाठ्यक्रम चालू हुआ।

१९६२ तक दसवीं और नवीं की दोनों परीक्षायें स्कूल में ही होती थी । १९६३ से दसवीं की परीक्षा भी बोर्ड में होने लगी। इस प्रकार १९६३ में बोर्ड की पहली परीक्षा हुई । यानी ग्यारहवीं बनाम बोर्ड की परीक्षा में बैठी ।

सात परीक्षाओं का परिणाम यह है:—

१९६३ में ग्यारहवी में नौ छात्र बैठे । आठ पास हुये ।
परीक्षा फल ८९ परसेन्ट रहा ।
१९६४ में १८ छात्र बैठे । पास १७ हुये ।
परीक्षा फल ९४.४ रहा ।
१९६५ में १७ छात्र बैठे । पास १५ हुये ।
परीक्षा फल ८५ परसेन्ट रहा ।
१९६६ में हायर सेकण्डरी में ३० बैठे । २३ पास हुये ।
परीक्षा फल ७७ परसेन्ट रहा ।
१९६६ में सेकण्डरी मे सात बैठे। छः पास हुये।
८६ परसेन्ट परीक्षा फल रहा ।
१९६७ में हायर सेकण्डरी मे २९ बैठे । २७ पास हुये ।
परीक्षा फल ९३.१ परसेन्ट रहा ।
१९६७ में सेकण्डरी मे १९ बैठे। पास १२ हुये।
परीक्षा फल ६३ परसेन्ट रहा ।
१९६८ मे हायर सेकण्डरी में ३२ बैठे। पास १८ हुये।
परीक्षा फल ५६ परसेन्ट रहा ।
१९६८ में सेकण्डरी आर्टस में १३ बैठे। पास १० हुये।
परीक्षा फल ७७ परसेन्ट रहा ।
१९६८ मे सेकण्डरी साइन्स में २० बैठे । पास १२ हुये।
परीक्षा फल ६० परसेन्ट रहा।

१९६९ मे हायर सेकण्डरी आर्टस में २७ बैठे। पास १२
परीक्षा फल ४४.४४ परसेन्ट रहा।
हायर सेकण्डरी साइन्स में दस बैठे। दस फैल हुये।
जीरो पर्सेन्ट रिजल्ट रहा।
लेकिन प्रैक्टीकल्स मे सब पास थे।
सेकण्डरी आर्टस में २१ बैठे। पास ७ हुये।
परीक्षा फल ३३.३ था।
सेकण्डरी साइन्स मे २० बैठे। पास ५ हुये।
परीक्षा फल २५ पर्सेन्ट रहा।

आकड़े बड़े कमाल के हैं। प्रश्न बहुत उठते हैं। पहले ७ बरस के परिणाम अच्छे क्यों रहे? अन्तिम साल १९६९ के परिणाम बहुत खराब क्यो रहे?

दो स्थितियां हैं १९६१ से १९६८ तक की पहली स्थिति और १९६९ की दूसरी स्थिति। यहा ध्यान देने की बात यह है कि पहली स्थिति में फल बहुत अच्छा क्यों। दूसरी स्थिति मे फल बहुत खराब क्यो? ये क्या स्थितियां थीं? दोनो स्थितियो मे एक समानता है। वह यह कि स्टाफ दोनो मे ही नही था। इसलिए बहुत खराब और बहुत अच्छे फल का कारण स्टाफ नही हो सकता। इन दोनों प्रकार के फलो मे स्टाफ की स्थिति तटस्थ है–रिजल्ट पर स्टाफ का असर नहीं था, क्योंकि स्टाफ दोनो में ही समान रूप से स्पष्ट है। तो फर्क क्या है? स्कूल के जलवायु की ये दोनों स्थितियां क्या हैं? भौतिक अन्तर लिये हुये ये कौनसी स्थितियां हैं? स्कूल के वातावरण मे कौनसा गुणात्मक अन्तर था? इस पर विचार करना और इसका निष्कर्ष प्रशासनिक क्षेत्र मे और समाज शास्त्रीय क्षेत्र मे महत्वपूर्ण है।

परीक्षा परिणाम एक उत्पादित वस्तु Produce है। फैक्टरी, फार्म, खेत की तरह स्कूल भी उत्पादन देती है। कॉलेजो-

रेट भी उत्पादन है, पुलिस भी उत्पादन देता है। थोड़ा उत्पादन, पूरा उत्पादन किन परिस्थितियों पर निर्भर करता है ? इसका उत्तर ध्यान देने योग्य है। उत्तर है, अच्छा प्रबन्ध, अच्छा और पूरा उत्पादन देता है। हैडमास्टर का फोर्मूला है। Full and quality products are the functions of good management. अच्छा प्रशासन है तो अच्छा उत्पादन है, यही उसका सूत्र था। अगला प्रश्न है अच्छा प्रशासन किस स्रोत से से निकलता है ? इसका उत्तर हैडमास्टर दिया करता था Good administration is the function of high morale-यहां पर सारा बल MORALE मोराल पर है। जहां Morale वहां प्रशासन, जहां प्रशासन वहां उत्पादन। बस यही एक क्रम है जिसे हम भूलेंगे तो खोयेंगे, पछतायेंगे। १९६ के मार्च तक हैडमास्टर का मोराल बहुत ऊंचा था। अप्रिल १९६ से उसका मोराल नीचे आने लगा। आते आते जुलाई १९६६ त हैडमास्टर का मोराल डाउन हो चुका था। यह खराब परीक्षा फ १९६६ वाला गिरे हुये मोराल का फल है। १९६६ से पहले के सा बरस के रिजल्ट हैडमास्टर के ऊंचे मोराल का फल था। मास्टर से इसका सम्बन्ध गौण है, प्रधान नहीं है। Staff factor is secondary factor. Primary factor is the H. m and H. m alone. नेपोलियन की बहुतसी उक्तियां तिथि बाहर out of date हो गई, पर उसकी एक उक्ति आज भी सही है प्रतापशाली और पराक्रमी अफसर के नीचे कमजोर सेना बलवान् हो जाती है और छोटी सेना बड़ी हो जाती है। यह कथन सदा सत्य रहा है और रहेगा। समाज जानना चाहेगा कि वे कौनसी बातें थी जिन्होंने हैडमास्टर के मोराल को डाऊन किया ? समाज जानने को उत्सुक है। Demoralizing factors नीचे दिये जाते हैं। मनोबल के नाशक तत्व ये —

१　ग्राठ अप्रिल १६६८ की एक घटना जिसने यह अफवाह फैलादी कि हैडमास्टर सात सौ रुपये खा गया और अब वह सस्पैंड होने वाला है। बस अभी आदेश होने वाले है। साइ स सामान की खरीद पर दो बाबू आये थे।

२.　२८ अप्रिल की वह घटना जिसमे बोर्ड के तीन अधिकारी और झुंझुनूं का विद्यालय निरीक्षक अचानक जीप मे से उतरे, रेकर्ड चेक किया। इससे इलाके मे, छात्रो मे यह अफवाह फैल गई कि बोर्ड ने पढाई की बातें, परीक्षा की बातें चेक की और विद्यालय निरीक्षक ने हिसाब किताब की बाते चेक की। बस अब तीस मारखा खुद मरने वाला है। इसने मास्टरो को बहुत तंग किया था सात बरस इसने यहा बहुत मजे किये। पाप का घड़ा भर गया और फूटने वाला है।

३.　सात जुलाई १६६८ की घटना जिसमे एक स्थानीय परिवार ने स्कूल के मैदान पर अतिक्रमण Encroachment किया और उस पर मकान बना लिया। इस अकेली घटना ने ही जनता की नजरो मे, विशेष कर स्थानीय नेताओं की नजरो में ज्यादा गिराया। वह अकेला लड़ा और केस में हारा। जुलाई १६६६ मे सारे मैदान मे खेती करली।

४　साइंस के सीनियर टीचर जसवतमलजी की २६ जुलाई १६६८ वाली घटना और उसके परिणाम और परिणाम के परिणाम इस घटना पर दस गांवो की जनता भेली हुई थी।

५.　विद्यालय निरीक्षक, उप निरीक्षक, और उनके पूरे स्टाफ द्वारा एक गुमनाम बीस पृष्ठीय शिकायत की जाच जो तीन सितम्बर १६६८ को की गई और मास्टरो को अलग ले कर उन्हे सुरक्षा और नैतिक उत्साह की प्रेरणा दे कर हैडमास्टर के विरुद्ध बयान लिये गये। बस हैडमास्टर मर गया। किस किस

फेल हो जायेंगे। किसी न किसी से जो [illegible] हो। यह सब मैं [illegible]। बड़े गंभीर आरोप हैं। [illegible] में [illegible] रही। अब [illegible] कि [illegible] का [illegible] क्या होता है? यह बात [illegible] में बहुत प्रचलित की गई। [illegible] की कोपी एक [illegible] को नहीं दी गई।

६ २७ सितम्बर १९६८ से ६ अक्टूबर १९६८ तक होने वाली [illegible] हड़ताल [illegible] ने सारे इलाके को हिला दिया। यहाँ [illegible] होने लगी। यह छात्रों और उनके [illegible] की हड़ताल थी जिसमें मास्टरों और [illegible] ने सहानुभूति दिखाई और चाहते थे कि यह चलती रहे और हैडमास्टर यहां से भाग जायें।

७ १९६८ के नवम्बर दिसम्बर में और १९६९ के जनवरी मास में साइंस मास्टर आये, उनसे हैडमास्टर का घोर संघर्ष छिड़ गया। साइंस के ये मास्टर कहते थे—यह दिसम्बर तो गया। जनवरी में प्रैक्टीकल्स होने वाले हैं, सामान बिलकुल कोरे हैं। तैयारी नहीं हो सकती, थियोरी की परीक्षा मार्च में हो रही है। महीने डेढ़ महीने में तो किताब के दस पृष्ठ भी नहीं हो सकते। हम कुछ नहीं कर सकते और फिर फेल होने की जिम्मेवारी हम पर नहीं आ सकती, हम तो अब आये हैं। हम तो कुछ भी नहीं पढ़ायेंगे। और वे वास्तव में नहीं पढ़ाते थे। वे स्कूल में ताश खेलते और दूसरे आर्टस के मास्टरों को खराब उदाहरण पेश करते। वे कहते थे समय नहीं कटता।

८. १९६८ में विद्यालय निरीक्षक ने गोपनीय प्रतिवेदन में लिखा कि हैडमास्टर की शिकायतें आती रहती हैं। स्कूल संचालन भली प्रकार नहीं हो रहा है। मई १९६९ में यह जनरल रिमार्क हैडमास्टर के पास निदेशक से आया। हैडमास्टर ने लिखा कि

कोई भी शिकायत नहीं गई। छात्रों की तरफ से जनता की तरफ से कोई शिकायत नहीं की गई। हो सकता है किसी मास्टर ने गुमनाम करदी होगी, जो झूठी है। शिकायत का आधार झूठा है। हैडमास्टर ने लिखा कि मैं अकेला स्कूल चलाता हूं। मास्टर नहीं है, बाबू नहीं है। फिर भी कोई शिकायत नहीं।

९. मास्टर किशनलाल ने नन्दलाल नामके आठवीं क्लास के लड़के को जनवरी १९६९ में पीटा। लड़के ने डंडा पकड़ लिया। मास्टर कहने लगे लड़के को स्कूल से निकालो, जनता कहती थी नहीं निकाल सकते। पार्टी बाजी होने से गांव के भी कुछ लोग कहते थे कि नन्दलाल आठवीं वाले लड़के को स्कूल से निकाल देना चाहिये। छात्रों में भी कुछ लड़के निकालने के पक्ष में थे। हैडमास्टर ऊपर से तटस्थ था, अपने मन की नहीं बता रहा था, पर पर्दे के पीछे कोशिश कर रहा था कि निकालना नहीं पड़े। मास्टरों ने इस स्थिति से लाभ उठा कर हैडमास्टर पर बहुत कीचड़ उछाला। वे कहते थे अनुशासन बिगड़ा हुआ है और अब बिल्कुल नहीं रहेगा। नन्दलाल को निकाल दो, स्कूल सुधर जायेगा।

१०. बिलों की रकम लेने के लिये हैडमास्टर महीने में एक बार बत्तीस किलोमीटर के फासले पर उपकोष निकासी जाया करता था। विद्यालय निरीक्षक ने उसको यात्रा भत्ता देने से इनकार कर दिया। निरीक्षक ने लिखा कि अगर उनके पास वक्त नहीं है तो आप मास्टर को बिलों का चैक लेने भेज दें। आप खुद नहीं जा सकते। स्कूल छोड़ना नियम विरुद्ध है और वह किसी हालात में कोई काम नियम विरुद्ध नहीं करेगा। बस फिर क्या था? १९६९ वाले इन मास्टरों को कीचड़ उछालने का

मिला। वे कहते थे अब तनखा कैसे आयेगी, कौन लायेगा? मास्टर तो कोई नही जायेगा। मास्टर का काम पढाना है, बिलों का पेमेंट लाना नही और फिर मास्टरों ने सेक्यूरिटी भी नहीं दे रखी है। रकम रास्ते मे लुट जाय तो कौन भरे? कहीं थैला रख कर भूल जाये तो क्या हो? मास्टर बोले तनखा नही आयेगी तो हम हडताल कर देंगे। मास्टर कहते अब यह हैडमास्टर डूबने वाला है।

११. २४ दिसम्बर १६६८ को हैडमास्टर के पास एक लेटर पहुँचा जिसने हैडमास्टर के मस्तिष्क ब्रेन Brain मे पड़ी बैटरी को पल भर में डाउन कर दिया, खारिज कर दिया। आठ अप्रिल १६६८ से ही यह बैटरी डाउन थी, पर हैडमास्टर थोड़ा थोड़ा इसे समय समय पर रीचार्ज कर लेता था। पर अब उसे ऐसा लग रहा था कि उन शैल्स मे कुछ रहा ही न हो। मन को ऐसे समझाता, वैसे समझाता, पर मन की तरफ से कोई भी प्रति-उत्तर Response नही मिलता था। दबा कर मार डालने वाले उस समाचार ने शरीर की एनर्जी को पूरा खतम करके पहले उसकी आकृति को ठेस पहुंचाई, फिर उसके मस्तिष्क में पड़े गनपाउडर को गीला कर दिया-भिगो दिया। उस समाचार ने उसकी आवाज में से बिजली निकाल दी थी। अब वे फीके, थोथे तार थे जो प्रभावकारी तत्वों को खो बैठे थे। अब उसकी आवाज श्रोतागण को अलर्ट नहीं करती थी। अब उसकी उपस्थिति उपस्थित-जन को ऑर्डर मे नहीं ला पाती थी। कह सकते हैं जंगलपुरीवाले का मोराल नीचे गरक कर ज़ीरो पर आ गया था अब वह मास्टरों को टोकने में असमर्थ था। बच्चों की मैंर्टरिंग को सम्बोधन करने से भिझकता था।

विद्यालय निरीक्षक झुंझुनूं का यह लेटर दिनांक २३ दिसम्बर १६६८, था। उसमें लिखा था कि सहायक लेखा-अधिकारी, कार्यालय संयुक्त शिक्षा निदेशक जयपुर दो जनवरी १६६६ को आपकी स्कूल में पहुंचेंगे। वे सरकारी धन के गबन की जांच करेंगे। यह रहस्यमय पत्र था। हैडमास्टर समझ नहीं पा रहा था कि यह गबन क्या था, कब का था? गबन है, यह इन लोगों ने कहां से जाना? पिछले आठ बरस से वही हैडमास्टर तो स्कूल का कैशियर था, कार्यालय अध्यक्ष था, रेकॉर्ड का इनचार्ज था। यदि गबन है तो उसी के समय का गबन है, किसी ने गबन किया है तो वही है। लेकिन उसने किया तो नहीं है। उसने तो सरकारी धन का दुरुपयोग तक नहीं किया है। पूर्ण बुद्धिमानी से सब खर्च होते हैं। जोखिम जितना ही बड़ा होगा, वहम उतने ही हास्यास्पद ridiculous होंगे। रहस्यमयता ज्यों ज्यों बढ़ेगी, रहस्य को ढूढने के प्रयत्न उतने ही रहस्यमय हो जायेंगे। घर में सुई नहीं मिलती है, तो सड़क पर ढूढी जाती है। खोई चीज को जब सब जगह ढूढ लेते हैं तो फिर रसोई में जाकर नमक मिर्च के डब्बों में ढूंढी जाती है।

जगलपुरी वाला एक चुटकला सुनाया करता था—एक हैडमास्टर थे। लाख जतन करने पर भी उन्हे कभी बिना पानी का दूध नहीं मिला। जब वे रिटायर हुये तो उन्होंने घर की गाय खरीदी। दूध में पानी मिल जाने के बारे में उनके वहम इतने बढ़ गये थे कि दूध वे खुद ही निकालने लगे। उनकी स्त्री गाय को थामती, पुचकारती और वे दूध निकालते। एक रोज की बात कि जब वे आधे से ज्यादा दूध निकाल चुके तो गाय ने लात मारी। हैडमास्टर ने पत्नी से पूछा क्या आपके लगी? पत्नी ने उत्तर दिया कि मेरे तो नहीं लगी। हैडमास्टर ने फिर कहा क्या आपके नहीं लगी? पत्नी ने दोहराया कि नहीं। हैडमास्टरजी पीछे की तरफ गिर पड़े, यह कहते हुये कि

भागने नहीं लगी तो मैं मर गया ! भाग भी भागी नहीं गई। आवाज भाग की बड़ी तेज थी। दूध गुम गया और हैडमास्टरजी गोबर में भर गये। वास्तव मे भाग पीछे की भीत के लगी थी और लात की आवाज तेज थी।

जंगलपुरी वाला सोचता रहा। गबन क्या हो सकता है? गबन इसने भी नहीं किया, उसने भी नहीं किया। तो किसने किया? जंगलपुरीवाले ने सोचा यह भी कोई न कोई चोट मुझ पर ही है। किसीने शिकायत की होगी, टी. सी. की फीस खा गया, दूसरी फीसें खा गया, साइंस के सामान की खरीद और फरनीचर की खरीद में कुछ खा गया आदि आदि। हैडमास्टर ने मास्टरों को भी कह दिया कि गबन की जांच पर लेखाधिकारी और उसकी पार्टी आ रही है। जीप आ रही है। छात्रो में और गांव वालों में भी यह बात प्रचार के रूप में खूब कही गई और दो जनवरी १९६६ को लेखाधिकारी की पूरी पार्टी आ पहुँची। निरीक्षक कभी जंगलपुरी में पैर नहीं रखता था। पर जांच पार्टी के साथ हिम्मत करके आ जाता था।

१२. छात्र दलीपसिंह की उमर वाले केस मे आखिर हैडमास्टर को चार्ज शीट मिल गई। क्लासीफिकेशन कंट्रोल एण्ड अपील रूल्स के रूल १७ के अनुसार उसकी जांच शुरु हुई।

जंगलपुरीवाले को सब शिक्षा बिगाड़ों ने मिल कर चारों तरफ से ऐसे कस दिया जैसे भारतीय फौजो ने ढाके को कस दिया था। शिक्षा बिगाड नम्बर एक, शिक्षा बिगाड नम्बर दो और शिक्षा बिगाढ नम्बर तीन, इन तीनो ने ही अपने अपने ढग से इस घेरे मे सहयोग दिया। स्थिति से लाभ उठा कर एक गुंडे मास्टर ने एच. एम. पर २१ जुलाई १९६९ को ११ बजे हमला किया। स्कूल के बंद होते ही वह उसके आफिस में बड़ा और मुट्ठी मे पत्थर रख कर एच. एम. के

चेहरे पर मुक्का मारा। चार दिन तक वह नहाया धोया नहीं। खून से भरे चेहरे को ही लेकर वह प्रार्थना स्थल पर उपस्थित होता था और क्लासों में जाता था। पिछले आठ महीने से चले आ रहे संघर्ष का यह शिखर था। इस चोट से सुखद लाभ यह रहा कि २१ जुलाई से १२ अगस्त तक स्कूल में वह खामोशी रही जो पिछले आठ महीनों में कभी नहीं रही। ५०० छात्रों ने मानो मौन व्रत ले लिया हो। मास्टर मानो मशीन हों। ये ऐसी डरावनी घटनायें थीं जो किसी भी हैड-मास्टर का हमेशा के लिये दम तोड सकती थीं। इन रोमांच-कारी घटनाओं का और चमत्कारी ढंग से इन्हें हैंडल करने का विवरण यथास्थान दिया जायेगा। यहां तो प्रसंग वश Incidentally इनका चलते चलाते जिक्र किया है। यहां यह बताया गया है कि कम और घटिया उत्पादन का क्या कारण है ? इन बारह घटनाओं के लिये अलग पुस्तक चाहिये।

इसी सदर्भ में एक अन्य समाज शास्त्रीय और प्रशास-नीय उपज का जिकर करना आवश्यक है। यदि यथोचित और यथानुकूल प्रशासन होगा तो उसकी बहुमुखी और बहु-पक्षीय उपजें होंगी। सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक, राजनैतिक सब तरह का विकास होगा। अच्छी बिरखा से जैसे सब जगह और सब तरह की वनस्पति उग जाती है और फल फूल लगने लगते हैं, उसी तरह अच्छे प्रशासन से जनता में कोंपलों की तरह नाना विधि की कारीगरियां Skills फूट निकलती हैं। अकबर, एलिजबेथ, नेहरू, चर्चिल, लेनिन आदि अनेक उदाहरण हैं। बहुत ही लघु रूप में जगलपुरी में भी १९६१–६८ तक के समय में सात बरस में बहुत कुछ किया गया। १९६१ में स्टेट स्तर पर उदयपुर में होने वाले खेलों में

जंगलपुरी ने वाली बोल में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। इसी टीम का सदस्य रामचन्द्र था जो राजस्थान यूनिवर्सिटी जयपुर में प्रसिद्ध हुआ और जिसके नेतृत्व में राजस्थान यूनिवर्सिटी की वाली बोल की टीम ने ओल इंडिया टूर्नामेंट में नाम कमाया। इसी जगलपुरी स्कूल से गया, छः फुट पांच इंच का नामी खिलाडी जगदेवसिंह था जिसने राजस्थान यूनिवर्सिटी जयपुर में वाली बोल, कबड्डी, आदि में नाम कमाया, ओल इंडिया खेलों में खेला और सीधा सेलेक्शन लेफ्टेनेंट के पद पर सेना में भरती हुआ। छात्र संतानसिंह १९६८–६९ में हिमकग की जेवनिन थ्रो में राज्यस्तर पर प्रथम रहा।

एक बार फिर इसी जंगलपुरी की वाली बोल की टीम १९६७–६८ के मैदान में राज्य स्तर पर जीती। शिक्षा विभाग के सदर मुकाम बीकानेर में हुये दिसम्बर जनवरी में जंगलपुरी की टीम जीती। अब क्या है? जैसे सपना था। वही जंगलपुरी आज जंगल हुई पड़ी है। एक शानदार जगह थी, फौजी स्थान था। विभाग की नीति के कारण, एक उगता फूल मुर्झा गया। मुबेसरवर से जैसे पक्षी उड़ जाते हैं, ठंडे मौसम से जैसे पक्षी हजारों मील की उड़ान भरके चले जाते हैं, बच्चे गये। जयकरण प्रधान के प्रयत्न विभाग ने विफल कर दिये। १९२५ में यह पौधा गांव वालों ने प्राइमरी स्कूल के रूप में लगाया था। आगे चल कर विद्यार्थियों ने इसे मिडिल स्कूल बनाया था। फिर सरकार ने सम्भाल लिया। फिर क्या था? दुर्भाग्य से यह समय वह था जब सरकार आला कमी में थी। ऐसी सरकारें ही कब तक ठहरती जो भाषा भरे, उसे स्कूल को बड़ा मूल से भरे दें।

राज्य स्तर पर तीन बार जीता हुआ स्कूल, नाम कमा कर खेल का परिणाम फल दिखाने वाला स्कूल आज विरान पड़ा है। सरकार ने न किसी को माफ किया है और न करेगी।

जगनपुरी के हैडमास्टर के अन्य स्कूलों में परीक्षा फल। १९५६-५७ के सेशन में वह हैडमास्टर देवगढ़ मदारिया जिला उदयपुर की हाई स्कूल में हैडमास्टर था। उस स्कूल से १९५६-५७ में ४० छात्र बैठे थे। पास २१ हुये। ५२ प्रतिशत फल रहा।

१९५७ से १९६० तक तीन बरस वह हैडमास्टर नापासर जिला बीकानेर की हाई स्कूल का हैडमास्टर रहा। इसका रिजल्ट नीचे दिया जाता है।

१९५८ में २५ बैठे, पास १४ हुये। ५६ प्रतिशत फल रहा।
१९५९ में ३८ बैठे, ३० पास हुये। ७९ प्रतिशत फल रहा।
१९६० में ४० बैठे, ३४ पास हुये। फल ८५ प्र श रहा।

नोट—इन परीक्षा फलों में पूरक परीक्षा वाले फैल माने हैं। ये आर्टस के स्कूल थे, फिर भी इनमें कई बार प्रथम श्रेणी में छात्र आये।

१९६०-६१ में हैडमास्टर भीनासर जिला बीकानेर के हाई स्कूल में हैडमास्टर रहा। उस सेशन में भीनासर में ६५ बच्चे बैठे थे पास ४० हुऐ। फल ६२ प्रतिशत रहा।

१९६९-७० में वह मेजरोली जिला जयपुर में हायर सैकण्डरी का हैडमास्टर था। उसका परीक्षा फल नीचे दिया जाता है। हायर सैकण्डरी मे १४ बैठे थे पास १२ हुये। ८६ प्रतिशत फल था। सैकण्डरी में २९ बैठे थे, पास २५ हुये। फल ८६ परसेंट था। १९७०-७१ में वह जालौर में हायर सैकण्डरी का हैडमास्टर था। परीक्षा फल यह है—

हायर सैकण्डरी आर्टस में २६ बैठे, पास २३ थे। फल ८८.५ परसेंट था। हायर सैकण्डरी कौमर्स में २८ बैठे. पास २५ थे। फल ८९.३ प्रतिशत था। हायर सैकण्डरी साइंस में ४६ बैठे पास ३१ थे। फल ६७.४ प्रतिशत था। सैकण्डरी परीक्षा कमा, विज्ञान

और कोमर्स तीनों में ६५ छात्र बठे। पास ६२ हुये। परीक्षा फल ६५.३ प्रतिशत रहा।

जंगलपुरी का हैडमास्टर १६५६ से १६७१ तक १५ बरस हाई स्कूल और हायर सैकण्डरी स्कूलों का हैडमास्टर रहा। ऊपर उन्हीं पन्द्रह बरसों के रिजल्ट दिये है। ये सब पन्द्रह सालों के रिजल्ट शिक्षा बोर्ड द्वारा ली जाने वाली बाहर की परीक्षाओं के हैं। बोर्ड की इन परीक्षाओं में चौदह परीक्षाओं के फल बहुत अच्छे रहे। सराहने लायक रहे। केवल एक परीक्षा १६६६ वाली का फल खराब रहा। इस खराबी का कारण हैडमास्टर का एक वर्षीय पतन था। उस एक वर्षीय पतन के बारह कारण पहले दिये जा चुके हैं।

• • •

१३

जंगलपुरी और बस्ती में अन्तर

एच. एम अपने साथी हैडमास्टरों को और मास्टरों को पेश करना था—आबू शिखर पर १८ मई से २४ मई १९६८ तक एक शिखर सम्मेलन हुआ था। इस शिखर महोत्सव में शिक्षा विभाग के महाधिकारी, महा पंडित, महा ज्ञानी, महा मानी, परम यशस्वी, परम प्रतापी, परम प्रशासन शास्त्री भेले हुये थे। एक परम परिष्कृत कम्प्यूटर A highly sophisticated computer में इन महामहिमों का चयन हुआ था, जैसा कि इस विभाग के अन्य आयोजनों के लिये हर बार होता आया है। इस महोत्सव में आमंत्रित प्रत्येक मेहमान ने अपनी अपनी स्वर लहरी में गीत गाया। एक कोरस, कोरस, यानी कि, एक राष्ट्रीय गीत सभी ने गाया। पहले अलग अलग गाया और फिर साथ मिल कर कोरस के रूप में सबने गाया। फिर शिक्षा विभाग नम्बर एक और शिक्षा विभाग नम्बर दो ने युग्म स्वर में

गाव वालों के मन में एक बात और भी है और वह बात ऐसी है जो शहरों मे नही पाई जाती। शहर वालों को बस परीक्षा परिणाम चाहिये। गांव वाले साथ ही चाहते हैं कि स्कूल सम्पत्ति की वृद्धि हो। इस सम्पत्ति को बढाने के लिये आप यह करें बजट में आई ग्रांटों को पूरी खर्च करें। नोन रेकरिंग ग्रांट के लिये निर्धारित प्रोफोर्मा में लिखदें। अब तो आप लोकल फंड से भी सामान खरीद सकते हो। भवन और फर्नीचर की गांववालों को बडी इच्छा रहती है। ग्रामीण बच्चे फरनीचर पर बैठ कर बड़े खुश होते हैं। इस ममता के बारे मे आपको कभी कभी सन्देह होगा, आप कहेंगे, कभी जोश में आकर भवन बना दिया होगा। अब वह ममता नही रही। यह बात आंशिक रूप से सही है। परन्तु प्रभावकारी नेतृत्व आजाने पर फिर वही जोश उमड पड़ता है। जनता के जोश का उतार चढाव एक समझ मे आने लायक सामाजिक स्वभाव की सामान्य घटना है।

२. आपने शब्द सामुदायिक केंद्र Community centre बहुत सुना होगा। पूरे अर्थ में तो आप सामुदायिक केंद्र नही बना सकते, पर आप एक बात जरूर करें। शाम सवेरे आप वाचनालय जरूर गांव वालो के लिये खोलें। वहा रेडियो भी हो। एक चपरासी की डियूटी लगाना कठिन नही है। गाव वालो से यदि यह सम्पर्क सूत्र आपने कायम नही किया है तो आप जीवन मे कुछ नही करेंगे और आप हैडमास्टरी के लायक भी नही हैं। आप इज्जत आबरू से हैडमास्टरी नहीं कर सकोगे।

३. गाव वालो मे दल बंदी जरूर है, पर वे सह-अस्तित्व के सिद्धांतो को जानते हैं। जरूरत पड़ने पर एक हो जाते हैं Common cause बना लेते हैं। भेले हो कर आपके ओफिस को आ दबायेंगे। आप उनसे मीठी विवेकशीलता से बातें करें।

विरोध और विवाद न भड़कायें। आखिर वे ही आपके ग्राहक Customers है। उनके बिना आप क्या हैं ? वे आपकी जनता के यानी छात्रों के माइत हैं।

४　आप ध्यान रखें वहां न पुलिस है, न कोर्ट है, न अन्य कर्मचारी है। कानून और व्यवस्था आप अपनी सामर्थ्य से खुद ही कायम करोगे अर्थात् विस्फोट स्थिति Provocation टालोगे। किसी व्यक्ति विशेष से तू तू मैं मैं टालोगे।

५　स्टाफ का स्थायित्व न होने से आपको स्टोरकीपर, परीक्षा प्रभारी, छात्राभिलेख, प्रभारी आदि नहीं मिलेंगे। कभी कभी लेखाभिलेख के लिये, कैशबुक लिखने के लिये भी आदमी नहीं मिलेंगे। मिलेंगे तो बार बार बदलने वाले मिलेंगे। आप अगर इन बातों को नहीं समझते है तो आप इधर ध्यान नहीं दे सकेंगे और बिगाड़ हो जायेगा। इसलिये थोड़ी जानकारी करलें।

६　आपकी जनता अर्थात् आपके छात्र छः किलोमीटर से आते हैं। शाम सवेरे पचास मीटर नीचे से पानी खींचते हैं। छानी गुजर करते हैं, सावणी करते हैं। वे पी. टी. के पीरियड से नखरा करेंगे। आप क्या करेंगे, खुद ही सोचें।

७　दूर से आने के कारण आठवें पीरियड में से भाग जाने का स्वाभाविक प्रयत्न रहता है। शायद, मध्यान्ह, लाइब्रेरी आदि जिन हैंड को उन्हें रोकना मुश्किल हो जायेगा। जिस विषय के पीरियड बाद है तो भी छात्र भाग जावेंगे। यह सब [illegible] रखना होगा।

८　इस [illegible] तो है पर [illegible] ही। दूसरे पीरियड में [illegible] को मास्टर पूरे दिन की हाजरी लगा कर जाना चाहेगा। आप सोचिये।

१. होली दिवाली, तीज त्योहार, सब चले जायेंगे । जानेवाला दिन खाली जायेगा और आने वाला दिन खाली जायेगा। आप क्या करेंगे, सोचयें ।

आप परिवार ले कर मत जाना। मकान नहीं है। कोई झोपड़ा मिल भी जायेगा तो भी आपकी पराधीनता बढ़ जायेगी। पानी ढोने वाला नहीं मिलेगा। लकड़ी की मप्लाई कठिन है। साग पात, चीनी चाय सभी की कठिनाई है। कोई बच्चा या पत्नी बिमार हैं या हो जायें तो जीवन-जोखिम बढ़ जाता है। टिटनस, हार्टफेल में मरना जरूरी हो जाता है।

११. गांव को लोग नफरत करते हैं पर वे स्पष्ट नहीं कर सकेंगे कि बात क्या है? इन्हीं अदृश्य, सूक्ष्म बातों में से एक बात बोरडम Boredom की है। वहां जीवन क्या है, महाशून्यता है। समय नहीं कटता है। क्या किताबें पढ़ोगे? नहीं। किताबें नहीं पढ़ सकते। किताबें तभी पढ़ सकते हो जब आपको समय नहीं मिलता हो। जीवन के, मनोविज्ञान के, बहुत से विरोधाभाष हैं। उनमें यह भी एक है कि समय नहीं कटता है, समय सरप्लस Surplus में है, समय स्पेअर spare बहुत है, पर किताबें नहीं पढ़ी जायेंगी। किताबें कहेंगी कि हम इतनी सस्ती नहीं, फालतू नहीं कि हमे फालतू समय में पढ़ा जाय। हमें तब पढ़ा जाय, जब आपका समय अनमोल हो। इसी का नाम Boredom है, इसी का नाम सुस्ती साम्राज्य है। यह महाशून्यता The great boredom ही इनसान का मरण है। दिन उगता नहीं है, दिन छिपता ~~है~~ नहीं है।

१२. इसीलिये जंगलपुरी वाला कहा करता था-आपका सांस्कृतिक कार्य वहां क्या होगा? जंगल से लकड़ी चुग कर लाओ, खाना

चुग कर लाओ, पानी सींच कर लाओ, कपड़े धोओ, रसोई बनाओ। यह आपका सांस्कृतिक कार्यक्रम है। जरूर करें।

१३ कितना ही Boredom हो आप किसी के घर उठना बैठना मत करें। इस सम्पर्क से आपकी कठिनाइयां बढ़ जायेंगी।

१४ गावों में जाने वाले मास्टरों, हैडमास्टरों को स्त्रियों से परे रहना चाहिये। यह एक आम सिद्धांत है कि स्त्रियों से लाग-लपेट नहीं रखनी चाहिये। आप समाजवादी, साम्यवादी, कांग्रेसी जनसंघी, कुछ भी हों, स्त्रियों से घनिष्टता नहीं करनी चाहिए।

१५. एक बहुत बड़ा फर्क हैडमास्टर के लिये और भी है। जंगलपुरी में मास्टर एक ही जगह रहते हैं। एक को नाराज करदोगे तो सब नाराज हो जायेंगे। दूसरी चर्चाओं के अभाव में सारे दिन और सारी रात आपकी चर्चा चलेगी और फिर आप भी उन्हीं में रहोगे। आपकी सोसायटी, वहां मास्टर ही तो हैं। वे ही नाराज हो जायेंगे तो आपका जीवन दुखी हो जायेगा। आप कैसे काम चलायेगे, कोई पद्धति विकासित करलें।

१६. अगर आपकी स्कूल बोर्डर की है तो आपकी कठिनाइयों में चार चांद लग जायेंगे। दो राज्यों का बोर्डर तो खराब है, दो जिलों का बोर्डर भी खराब है। जंगलपुरी नम्बर एक हरियाणे और राजस्थान के बोर्डर, चुरू और झुंझुनूं जिलों के बोर्डर पर थी। जंगलपुरी नम्बर दो जयपुर और सीकर के बोर्डर पर थी। बोर्डर वाली जगह अपने ही जिले में मनखावनी बन जायेगी। तृतीय श्रेणी के टीचर भी वहां आये गये ही रहेंगे।

१७. लोकल टीचर खेती में और स्थानीय राजनीति,दल बंदी आदि में दबे रहते हैं। छोरों को सातवें आठवें घंटों में भाग जाने को

प्रोत्साहन देते हैं। स्थानीय चपरासी खेती बाड़ी मे लगे रहते हैं।

१८. स्कूल साइंस का है और आप आर्टस के हैं तो साइंस के लड़के आपके प्रभाव क्षेत्र के बाहर रहेंगे। आप साइंस के हैं तो आर्टस के लड़के परे रहेंगे। आपकी कठिनाई बढ़ जायेगी।

१६. लेखा आदि के अगर आप जानकार हैं और सब बाबुओं का काम अपने सिर पर लेलेंगे तो आप पर वह फटकार पड़ने लग जायेगी, जो बाबुओं पर पड़ती है। बाबू हैडमास्टर के सहारे नाच लेगा और नचा देगा। आप ऐसा नहीं कर सकेंगे।

२०. जंगलपुरी में कमरों के दरवाजों, खिड़कियों आदि पर किवाड़ नहीं होते। किसी कमरे के होते भी है तो टूटे हुये, उखड़े हुये, बिना कुंडे के होते है। कमरे नहीं उन्हें बाड़े कहना चाहिये। छात्राभिलेख, लेखाभिलेख की सुरक्षा वहां नहीं मिलेगी। कमरे बिरखा पानी में चोते हुये मिलेंगे। सफ़ेदी और मरम्मत का प्रश्न ही नहीं है। यह भवन पी. डब्ल्यू. डी. का नहीं है। विभाग का भी नहीं है। लोकल फंड से बचा कर आप यह सब करवायें।

२१ जंगलपुरी में आने का आदेश आपके पतन का आदेश है। आपके मित्र, आपके रिश्तेदार जान जायेंगे कि आप हर प्रकार से कमजोर हैं। सोच विचार कर आपकी छटाई की गई है। आपके बेटी बेटों की सगाई ऊंची जगह हुई है तो जंगलपुरी में जाते ही छूट जायेगी। सगाई नहीं हुई है तो अब होगी नहीं।

२२. अगर आप वास्तव में कमजोर हैं, जैसा कि अधिकारी ने माना है और अपनी बदली कैंसल नहीं करा पाये, तो परिवार को

जगतपुरी मत ले जाओ। अपनी बेटी की सगाई करने के लि आप अपने संबंधी को, सगे को, जगतपुरी में बुलाओगे तो व दूसरी बार वहां नहीं जायेगा।

२३. शहरी हैडमास्टर, मास्टर आपको बराबर का नहीं समझेंगे।

२४. इलिट स्कूलों के हैडमास्टर ही इलिट सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। आप Elite बनना चाहें तो Elite स्कूलों में ही रहें।

• • •

१४

प्रशासन की दिन प्रति दिन की बातें

विद्यालय सम्बन्धो पर आगे बहुत लिखा गया है। उन संबंधों को समझना, स्वीकार करना, प्रशासन की समस्याओं को समझना, स्वीकार करना है। जो शिक्षाधिकारी इन सम्बन्धो को और स्थानान्तरण के उद्देश्यो, स्कीमो को नही समझेगा, नही स्वीकार करेगा, वह शिक्षा बिगाड़ है, शिक्षा शत्रु है, शिक्षा नाशक है। जो अधिकारी स्थानान्तरण के उद्देश्यो और रोटेशन की स्कीम को स्वीकार नही करेगा, वह एक संकीर्ण अधिकारी है और वर्गगत भावना से प्रेरित है। विद्यालयी संबंधो को जो स्वीकार नही करेगा, वह छात्रो द्वारा विद्या उपार्जन में सहायक नही हो सकता। वह बाधक है। इन दो मौलिक आधारो के साथ साथ विद्यालय के दैनिक प्रशासन की शिक्षा दीक्षा की बातें यहां दी जा रही हैं।

(१) दैनिक प्रशासन टोका टाकी का प्रशासन है। प्रश्न है, कहना चाहिये समस्या है कितना टोकना चाहिये ? इस संदर्भ में दो मत है पहला छूटवाद Permissiveness, इसे मुक्तानुशासन Free discipline भी कहते हैं। दूसरा, प्रतिबंधवाद Restrictiveness दोनो ही मतों का चलन है। दोनों ही मान्यता प्राप्त और आदरणीय हैं। जो हैडमास्टर कमजोर बेअसर Ineffective हैं, उनका जिकर यहा नहीं किया जा रहा है, कमजोर, बेअसर, हैडमास्टर हिसाब किताब बाहर हैं। यहाँ केवल पराक्रमी कारगर हैडमास्टरों का जि है। यहा दी हुई दोनो प्रणालियों का प्रयोग कारगर हैडमा ही कर सकते हैं। जहा तक कमजोरों का प्रश्न है, उन्हें बस कागजो पर समय पर दस्तखत कर देने चाहिये और प्र राम भरोसे छोड़ देना चाहिये। अगर वे अड़चन नहीं डालें तो निभते रहेंगे। मास्टर जब नया जीवन आरम्भ करता यानी जब हैडमास्टर बनता है तब वह अपनी कार्य शै Style of work अधिनायकवादी authoritarian ढांचे frame work मे विकसित करता है। इस ढांचे को भरते उसे पाच बरस लग जाते हैं। दो बातें अपनाना है, द छोड़ना है। पाच बरस मे वह एक टिकाऊ पद्धति Patter पक्की कर लेता है। दो बरस इसी पर रहता है। यह उसर हैडमास्टरी का प्रतिबंधवादी काल है। इस काल मे वह बड़ कार्यव्यस्त रहता है। प्रतिबंधवाद की विशिष्टतायें है—

१. आर. एम. आर. और जी. एफ. आर. पढ़ने और समझने के लिये प्रयत्नशील रहता है।

२ कुछ दिन के बाद सी. सी. ए. एंड अपील रूल्स से भी उसकी जानकारी होने लगती है।

३. ओर्डर बुक उसकी मेज पर रहती है और वह खूब ओर्डर निकालता है।

४. हर एक ओर्डर के साथ अनुशासनात्मक कारवाई की धमकी चिपकी रहती है।

५. नियम, उप नियम खूब बनते हैं। पालन में ढिलाई होने पर स्पष्टीकरण मांगे जाते हैं। कारण बताओ, नोटिस दिये जाते हैं।

६. हाजरी रजिस्टर मे लाल निशान खूब लगते हैं।

७. हैडमास्टर के स्वर में ऊंचाई, उतावलापन उखड़ापन, हाफना-पन, ओलमापन, चिड़चिड़ापन, आदि भरे रहते हैं।

८. उनकी चाल ढाल, बोल चाल, आचरण आदि से ऐसा असर होता है मानो वही सही हैं, दूसरे सब गलत हैं।

९. साधारणतया कुछ मास्टरो को वह अपना समर्थक मानने लगता है और उनकी सब बातें उसे सही लगने लगती हैं।

१०. वस्तुगत और मनोगत स्थितियों के बीच एक लम्बी चौड़ी खाई पड़ जाती है।

११. विद्यालय संचालन यांत्रिक ढंग का होता है। हैडमास्टर खुद यांत्रिक Mechanical type स्वरूप बन जाता है। लोच-लचक flexibility and manoeuvreability नहीं होते, प्रतिबन्ध के डोरे जब टूटने लगते हैं तो विद्यालय निरीक्षक आदि को शिकायत की जाती है। मास्टरो मे सारे दिन कानाफूसी चलती है। पांच सात बरसों में अफसरी का नशा शिखर पर पहुंच कर उतरने लगता है। हैडमास्टरी की धार भा जाती है। और अब नया अमचालू शुरू होता है। हैडमास्टर में परि-पक्वता, भारीपना आ ..., उसकी कार्य कला में टैक्नीक मे निखार आ ticated technique

का विकास कर लेता है। वह विद्यालयी परिवार में एकाकार हो जाता है। छोटी मोटी अनियमितताओं पर रोक टोक कर देता है। इस प्रकार की विशेषताएं ये हैं—

१ घृणा और पराग्रेपन से पैदा होने वाले भय का स्थान आदर से पैदा वाला भय ले लेता है।

२. अनुशासन के नियमों का भय स्कूल की छत से उतर कर मास्टरों और छात्रों के हृदय में अणु, परमाणु के रूप में बस जाता है। ऐसा लगता है कि कोई नियम नहीं, कोई प्रतिबंध नहीं, परन्तु ऐसा भी लगता है कि प्रतिबंध बहुत हैं।

३. पी. टी. आई. छुट्टी पर होता है तो भी उसकी जगह अपने आप ही दूसरा मास्टर आ जाता है और प्रार्थना स्थल पर आवा जाई का संचालन करता है।

४. कुछ कमियों की हैडमास्टर अनदेखी करता है। पर स्टाफ वाले स्टैण्डर्ड कायम रखने पर जोर देते हैं

५. पारस्परिक रोक थाम से Mutual checks and balances से काम चलता है। इस छूट की कुछ शर्तें हैं—

१. हैडमास्टर ऊंचे आकार का High stature का होना चाहिये।

२. दैनिक कार्यों की प्रत्येक गतिविधि की जानकारी हैडमास्टर को होनी चाहिये।

३. हैडमास्टर इतना कारगर effective हो कि बटन दबाते ही भटकाव दूर हो जाये, छूट के Permissiveness के दुरुपयोग दूर हो सकें।

४. यह छूट, हैडमास्टर द्वारा प्रदत्त एक अनुदान है, grant है, जिसे वह किसी भी क्षण वापिस लेने की सामर्थ्य रखता हो।

५. ऐसे विद्यालय में हैडमास्टर का प्रभाव परोक्ष होता है। नियंत्रण

का संयंत्र mechanism of control, ऐसा लगता है,स्वचालित है। हैडमास्टर मानो दूर स्थित बिजली घर Power house हो। और घरों में, कमरों में, कारखानों में, फिटिंग का काम, बटनों के ओफ एण्ड ओन करने का काम मास्टरों का अपना हो।

(२) उठे विवादों में राजीपे की तीन मंजिलें—किनाराबाजी Brinkmanship : दैनिक जीवन में विवाद तो उठते ही हैं। विवाद उठते ही निपटा लिया जाय। थोड़ा तंग करके निपटा लिया जाय। ये दो स्टेज सुरक्षित स्टेज हैं। तीसरा स्टेज किनारे का है। उससे आगे बढ़ने से हार जीत से निपटारा होता है। किनारे तक वे हैडमास्टर जाते हैं जो खरे होते हैं, दल दल के बाहर होते हैं और हैडमास्टरी की पहली मंजिल पर होते हैं यानी प्रतिवंधवाद के दायरे में काम करते हैं। किनारा बाजी टालनी चाहिये।

(३) मास्टरों की धंधागत स्वायत्तता–Professional autonomy यह आजादी सम्भव नहीं। मास्टरों को पढ़ाई की व्यक्तिगत आजादी तभी दी जा सकती है जब जवाबदेही का Accountability का सिद्धांत लागू किया जाय।

(४) आपके फैसले विवेकशील Rational होने चाहिये जो तर्क-वितर्क पर सही उतरें। सब की सुन कर मन की करो।

(५) आप कमजोर हैडमास्टर हैं, यानी कहीं दल दल में फंस गये हों तो मीठी सूझ बूझ से sweet reasonableness से काम लो। कहीं झुको, कहीं झुकाओ।

(६) दलबंदी में शामिल मत होओ। ऐसा करने से आप एक फरीक हो जायेंगे। आपोंगे की सारी पैठ खो जायेगी।

(७) स्कूल के दैनिक प्रयत्न में एक बात बार बार हैडमास्टर के सामने आवेगी । सस्ते मशविरा इधर उधर से आयेंगे और आपको कहेंगे : हैडमास्टरजी, छोरे बाजार में फिरते हैं, बहु फिरते हैं । आप इन्हें रोको । हर एक घंटे में हाजरी लो। पाइन करो, सजा दो । आप इनकी सुनलो । सस्ती सलाह के लिये, सस्ता आभार प्रकट करदो । पर एक कान से सुनो औ दूसरे कान से निकाल दो । उधर एकेडैमिक विद्वान सला कर कहेंगे : कमजोर छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान दो । इन सला फाड़ विद्वानों की बात चुप चाप सुनलो । न हां कहो, न न कहो । सुनी अनसुनी कर दो । इस सदर्भ में काम की बात जो जंगलपुरी वाला कहता था, वह यह है—कभी व्यक्तिगत ध्यान मत दो । इस विलासिता को Luxury को आप पोसायोगे नहीं । दल दल में फंस जाओगे । अधिक जरूरी काम का हर्ज होगा । खोदोगे पहाड़, निकलेगी चुहिया । एच. एम. आगे कहता : क्लास से भाग जाने वाले ये लड़के कौन हैं ? ये वे लड़के हैं जो पिछली कक्षा में नकल करके, या दबाव डलवा कर या पैसे दे कर पास हुये थे । उस समय इन्हें पास करके आपने एक गलती की । अब उन पर व्यक्तिगत ध्यान दे कर आप दूसरी गलती करेंगे । स्कूल में सब काम सामूहिक हित के करो । व्यक्तिगत हित का एक भी मत करो । पिछली क्लास में इन राजकुमारों ने बाकी गुणा के सवाल नहीं सीखे । अब भाग के सवाल समझ में नहीं आते । बैठे बैठे बोर हो जाते हैं और बाहर भाग जाते हैं । कुछ छात्र क्लास के भीतर बैठे उबासी लेते हैं, इन्हें क्लास का अंग मत समझो । आपके छात्र, वह बड़ा समूह है जो परिश्रम करता है और मास्टर की बात सुनता है । अच्छे व्यक्तियों का समूह समाज कहलाता है। अच्छे छात्रों का समूह क्लास कहलाती है । खराब छात्रों के

भौतिक अस्तित्व को स्वीकार करके, आत्मिक अस्तित्व को अस्वीकार कर दो।

(८) शक्ति स्थान : आप चाहे पहली मंजिल के हैडमास्टर हों, चाहे दूसरी मंजिल के, अर्थात् छुटवादी हों, चाहे प्रतिबंध वादी, शक्ति संचय तो आपको समय समय पर करना ही होगा। हर समय इस संचय की जरूरत नहीं। सुखद संबंध सभी से रखें। घनिष्टता, समीपता, किसी से न करें। परन्तु जब बल की जरूरत पड़े, तो उन लोगों से समीपता करलो जो आपके विरोधी के विरोधी हो सकें और आपको कुछ सहारा दे सकें। साथ ही अपनी कमजोरियों को स्थगित कर दो। विवाद निपटाने की तीन मंजिलों का यहा जिकर आया है। दूसरे स्टेज के काल में आपको शक्ति संचय की जरूरत पड़ेगी। यहा निपटारा नहीं हुआ तो तीसरे में और भी ज्यादा जरूरत पड़ेगी। तीनों स्टेजों में आपको कौनसा सूट करता है, आप अपनी सामर्थ्य देखलो। आप चाहे मास्टर से बात करें, चाहे अधिकारी से, हमेशा Position of strength से बात करो। भाषा को कोमल बनाओ, स्वर को कोमल मत करो। आप पर दया कोई नहीं करेगा क्योंकि दया के भिखारी बहुत हैं। आपकी बारी नहीं आयेगी। दया मांगने वालों की लाइन बडी है। आप कभी मत कहो कि आप मर रहे हो। मर रहे हो तो मरलो, कहो मत कि मर रहे हो। आपका कार्य क्षेत्र दुख सागर में है तो कूद पडो। यह मत सोचो कि इसमें कोई दूसरा पड़े और आप आबू शिखर पर इलिट बन कर बैठे रहें।

कभी कभी आपको ऐसा लगेगा कि आपको कमजोर समझ कर, वैर भावनावश दुख सागर के टापू मे भेजा जा रहा है। यह सही है। पर आप चले जायें। जल मे गाड़ी

नाव पर, बस गाड़ी में नाव, अपनी अपनी ठौर पर सबका लागे दाव। कभी समय आयेगा। शासन संबल करते रहो, और फिर! सौ सुनार की, एक लुहार की, याद रखो! गांवों में भेजने के लिये हमेशा कमजोर को, हल्के को, उठाया जाता है। आपको हल्का माना गया है। एकेडेमिक कारणों से नहीं। नोन एकेडेमिक कारण बहुत हैं। आप जानते हैं।

प्रशासन नियम

इस किताब में कई संदर्भों में बताया गया है कि प्रशासन के नियमों के दो सेट होते हैं सामान्य नियम और स्थानीय नियम। कुछ प्रशासन शास्त्री है जो स्थानीय नियमों को उचित मान्यता नहीं देते। ऐसे लोगों की जानकारी के लिये एच. एम. कहा करते थे: जंगलपुरी नम्बर एक उस परिस्थिति की प्रतीक है जहां शिक्षा विभाग विद्यालय के बिगाड़ में लग जाय और हैडमास्टर उसे सुधारने में लग जाय। खिचाव तनाव चलता रहे और अंत में शिक्षा विभाग की जीत हो। कहावत है उधेड़ने वाले को सीने वाला नहीं नावड़ सकता। जगलपुरी नम्बर दो उस परिस्थिति की प्रतीक है जहां विभाग उदासीन हो और हैडमास्टर विद्यालय को सुधारना चाहे। ऐसी परिस्थिति में हैडमास्टर जीत जाता है। जगलपुरी नम्बर एक में हैडमास्टर इस किताब का चरित्र नायक था और जगलपुरी नम्बर दो में हैडमास्टर श्री नथमल जी ढढा थे जो सदा सफल हैडमास्टर रहे हैं। अपनी अपनी जंगलपुरियों में ये दोनों हैडमास्टर आठ आठ बरस पूरे करके गये। तीसरा विद्यालय जालोर नाम की बस्ती है जो उस परिस्थिति की प्रतीक है जहां शिक्षा विभाग और हैडमास्टर दोनों ही बिगाड़ में लग जायें और विद्यालय का सर्वनाश करदें। जो शिक्षा प्रशासन शास्त्री इन तीन विद्यालयों का

१९६० से १९७१ तक के काल का अध्ययन नहीं करेगा, उसकी रचना पढ़ने लायक नहीं होगी और उसकी बात सुनने लायक नहीं होगी। इस किताब के अगले भाग मे दो स्कूलों का पूरा विवरण दिया जायेगा और जगतपुरी नम्बर एक की उन बारह घटनाओं का विवरण दिया जायेगा, जिनकी वजह से एच. एम की दुर्गत हुई। किताब मे वह रहस्य भी बताया जायगा कि शिक्षा बिगाड नम्बर १ नेऔर शिक्षा बिगाड नम्बर दो ने १९७० वाली स्कीम को हैडमास्टरों पर लागू करने में क्यों बाधायें डाली और फिर ३ जुलाई १९७१ में एकाएक जल्दी मे क्यों लागू किया तथा १९७० में कुछ ही हैडमास्टरों पर लागू क्यों किया ?

रिटायर होने वाले हैडमास्टरों को सलाह यह है कि वे अपने बाड़ों से बाहर भी कुछ संबंध स्थापित करलें। पुराने बाड़े से आप निकल जायेंगे, दूसरा बाडा बड़ने के लिये आपके पास होगा नहीं। ऐसी स्थिति में आपको बहुत दुख होगा। पुराना बाड़ा बार बार याद आयेगा और आप बेचैन होंगे। मोटे रूप से दुनिया एक है, परन्तु मनुष्यों के लिये उनकी दिन प्रति दिन के जीवन की दृष्टि से दुनिया अनेक है,सैंकड़ो हैं। एक व्यक्ति के लिये कम से कम दो दुनिया तो होती ही है : एक दुनिया आर्थिक कमाई की, दूसरी दुनिया उसके परिवार और रिस्तेदारों की। बस उसका सब तरह का चिंतन इन्ही दो बाड़ो तक सीमित रहता है। मान अपमान, पुछताछ, शान बायदे, दुख सुख आदि को नापने तोलने के लिये ताकडी बाट, मीटर, सेंटी मीटर,इन्ही दो बाड़ों से उठा कर लिये जाते है। इन दो बाड़ो में अगर कोई बड़ा माना जाता है तो वह बडा है, छोटा माना जाता है तो वह छोटा है। मानव का सारा ध्यान इन्ही दो बाड़ों की तरफ एकाकी रूपसे केंद्रित रहता है। इन्हीं दो बाड़ो के बीच मानव भागा जा रहा है। भीड़ को चीरता हुआ, कोहनियो से हटाता हुआ, उड़ा जा रहा है! कहां? अगले बाड़े में बड़ने के लिये। मानो यह बीच का

नाव पर, चल गाड़ी में नाव, अपनी अपनी ठौर पर सबरा
लागे दाव। कभी समय आयेगा। साधन संचय करते रहें
और फिर ! सौ सुनार की, एक लुहार की, याद रखो ! गा
मे भेजने के लिये हमेशा कमजोर को, हल्के को, उठाया जा
है। आपको हलका माना गया है। अकेडेमिक कारणों से नहीं
नोन अकेडेमिक कारण बहुत हैं। आप जानते हैं।

प्रशासन नियम

इस किताब में कई संदर्भों में बताया गया है कि प्रशासन
नियमों के दो सेट होते हैं सामान्य नियम और स्थानीय नियम। कुछ प्रशा
सन शास्त्री है जो स्थानीय नियमों को उचित मान्यता नहीं देते। ऐ
लोगों की जानकारी के लिये एच. एम. कहा करते थे: जंगलपुरी
नम्बर एक उस परिस्थिति की प्रतीक है जहां शिक्षा विभाग विद्यालय
के बिगाड़ में लग जाय और हैडमास्टर उसे सुधारने में लग जाए
खिंचाव तनाव चलता रहे और अंत में शिक्षा विभाग की जीत हो
कहावत है उधेड़ने वाले को सीने वाला नहीं नावा सकता।
जंगलपुरी नम्बर दो उस परिस्थिति की प्रतीक है जहां शिक्षा
उदासीन हो और हैडमास्टर विद्यालय को सुधारना चाहे। ऐसी
परिस्थिति मे हैडमास्टर जीत जाता है। जंगलपुरी नम्बर एक म
हैडमास्टर इस किताब का चरित्र नायक था और जंगलपुरी
नम्बर दो में हैडमास्टर श्री नयमल जी थे जो सदा लगा
हैडमास्टर रहे हैं। अपनी अपनी जंगलपुरियों में ये दोनों हैडमास्टर
आठ आठ बरस पूरे करके गये। तीसरा विद्यालय आमोर नाम की
बस्ती है जो उस परिस्थिति की प्रतीक है जहां शिक्षा विभाग और
हैडमास्टर दोनों ही बिगाड़ में लग जायें और विद्यालय का सर्वनाश
करदें। जो शिक्षा प्रशासन शास्त्री इन तीन विद्यालयों

मार्ग बीहड़ जंगल में से जा रहा है। सब मार्ग, मानो, दिल्ली नाम की बस्ती और जंगलपुरी के बीच के हों। रिटायर होने के बाद आपका एक बाड़ा बंद हो जाता है। दुनिया आधी हो जाती है। सिकुड़ जाती है। आपका दुखी होना स्वाभाविक है। जिन विषयों पर आपने तैंतीस बरस तक बातें की, वे विषय तो अब गायब हो गये। सिनियोरिटी जुनियोरिटी की बातें,प्रोमोशन की बातें,मंहगाई भत्ते की बातें खतम। अपने धंधे की चतुराई बढ़ाने में आपने उमर गवाई, वह चतुराई अब बेकार है। चतुराई बढ़ाने में आप जो समय लगाते थे, वह समय अब आप पर लदा बैठा है। रिटायर होने पर आप पर कितनी उदासी छाती है, आप कितने दबते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि जिस बाड़े में आप रहे हैं उससे कितनी ममता रखी है, बाकी बाड़ों से आप कितने परे और पराये रहे हैं। सियाने कहते हैं कि एक खूंटे से मत बंधो, किसी एक समुदाय सागर में निमग्न मत हो जाओ। रिटायर होने से पहले किसी अन्य समुदाय से संबंध जरूर जोड़लो। समुदाय में रहा हुआ आदमी समुदाय से ही राजी होता है। रिटायर होने से पहले ही परिवार की लाग लपेट खतम करदो जिससे जीवन स्तर नीचे न आये। आपने जो दो चीजें खोई हैं—दर्जा और कर्म Status and function, उनके स्थान पर कुछ ऐसी ही चीजें poor substitute जरूर रखलो।

●●●

मार्ग बीहड़ जंगल में से जा रहा है। सब मार्ग, मानो. सिवानी की बस्ती और जगलपुरी के बीच के हों। रिटायर होने के बाद आप एक बाड़ा बंद हो जाता है। दुनिया आधी हो जाती है। सिकुड़ ज है। आपका दुखी होना स्वाभाविक है। जिन विषयों पर आपने ती बरस तक बातें की, वे विषय तो अब गायब हो गये। सिनियोरि जुनियोरिटी की बातें,प्रोमोशन की बातें,मंहगाई भत्ते की बातें खत्म अपने धंधे की चतुराई बढ़ाने में आपने उमर गवाई, वह चतुराई अ बेकार है। चतुराई बढ़ाने में आप जो समय लगाते थे, वह समय अ आप पर लदा बैठा है। रिटायर होने पर आप पर कितनी उदा छाती है, आप कितने दबते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता कि जिस बाड़े में आप रहे हैं उससे कितनी ममता रखी है, बाह बाड़ों से आप कितने परे और पराये रहे हैं। सियाने कहते हैं कि ए खूंटे से मत बंधो, किसी एक समुदाय सागर में निमग्न मत हो जाओ रिटायर होने से पहले किसी अन्य समुदाय से संबंध जरूर जोड़ लो समुदाय में रहा हुआ आदमी समुदाय में ही राजी होता है। रिटायर होने से पहले ही परिवार की लागत खर्च स्तम करदो जिससे जीवन स्तर नीचे न आये। आपने जो दो चीजें खोई हैं—दर्जा और कर्म Status and function, उनके स्थान पर कुछ ऐसी ही चीजें poor substitute जरूर रखो।

•••

१५

ट्रांसफर्स Transfers

जंगलपुरी की कहानी रात दिन, आठो पहर, बत्तीस घडी, बारहो महीने बदली करते रहने की कहानी है। जंगलपुरी की कहानी कभी भी बदली नहीं करने की कहानी है। रात दिन व बारहो महीने बदली करते रहने से विद्यालय का नाश हुआ। कभी भी, किसी भी दशा में बदली नहीं करने से हैडमास्टर का नाश हुआ। जंगलपुरी की कहानी इस प्रकार दो अतिवादो की दो extremes की कहानी है। अतिवादो से व्यायाम करने की कहानी है, It is a good story of exercise in extremism .उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव दोनों को अमेजन बेसिन में ला खड़ा करने की कहानी है। ट्रांसफर करने और नहीं करने की विचित्र नीति पर हैडमास्टर रोज गला फाड़ फाड़ कर चिल्लाता था। पत्र पत्रिकाओ में लेख प्रकाशित करवाता था। पर अंधे धागे रोये, अपना नैन खोये।

हैडमास्टर कहता था मास्टर मत बदलो,मुझे बदलो। शिक्षा विभाग कहता था मास्टरों को बदलेंगे, हैडमास्टर को नहीं बदलेंगे।

हैडमास्टर कहता था मुझे नहीं बदलते हो तो नहीं सही, पर मुझे मास्टर पूरे दो।

शिक्षा विभाग कहता था पूरे मास्टर नहीं देंगे।

हैड मास्टर कहता , अच्छा, पूरे नहीं, थोड़े ही सही, पर इन्हें कम से कम दो वर्ष तक तो मेरे पास रहने दो।

शिक्षा विभाग कहता : नहीं,यह नहीं हो सकता,हम तुम्हें थोड़े मास्टर देंगे और उन्हे भी आया गया रखेंगे और तुमको और स्टाफ को लड़ाते रहेंगे, तुम्हे चैन की सांस नहीं लेने देंगे।

हैडमास्टर कहता : अच्छा, मास्टरों को आया गया रखो, मैं उनसे लड़ने को तैयार हूं। पर मुझे लडने की फुर्सत तो दो। मुझे दो क्लर्कों का और कैशियर का काम करना पडता है, उसमे मुक्ति दिलवा दो। मैं फिर लडते रहने की स्थिति में आजाऊ गा।

शिक्षा विभाग कहता . यह कैसे हो सकता है। तुम्हें जो कोई बाबू दिये जायंगे वे आये गये की शर्तों पर देंगे। नया नाई आयेगा। तुम्हे काटेगा। काटते काटते होशियार हो जायेगा तब हम उसे हटालेंगे। और फिर नया नाई भेजेंगे।

हैडमास्टर कहता , नये नाई को सिखायगा कौन ?

विभाग कहता : सिखाना हमारा काम नहीं है। इस प्रकार का वाद विवाद आठ बरस २७ दिन तक चलता रहा।

अंत में डूबते डूबते जब नाव की मोर बाकी रह गई तो हैडमास्टर ने कई रजिस्टर्ड पत्र लिखे, और सुझाव दिया विभाग राजस्थान में कहीं भी किसी भी दूसरी जंगलपुरी में बदल दो। और उसे जंगलपुरी नम्बर दो मिली। मसखरे कह उठे :—

गयी अफसरा बेनन को घोर तपस्या कीनी।

विधि ने सोच विचार कर, बनियानी कर दीनी।

स्थानान्तरण की समस्या मास्टरों और डाक्टरों मे ही है। दूसरों में इतनी ज्यादा नही है। यहां पर ये दो किस्म के कर्मचारी अन्य कर्मचारियो से बिलकुल भिन्न हैं। अन्य कर्मचारियों के कार्यालय गांवों में नहीं हैं। केवल मास्टरों और डाक्टरों के कार्यालय ही गांवों में हैं। ट्रांसफर की समस्या इस प्रकार संक्षेप में यों रखी जा सकती है:—

ट्रांसफर की समस्या इस प्रकार मूलतः गावों मे जाने की समस्या है। और फिर गावों से आने की भी है। अधकचरे अधिकारी ट्रांसफर की समस्या को एक पक्षीय ढग से ही सोचते हैं। वे नीरस स्वर में चिल्लाते हैं—मास्टर गावों में नहीं जाते, डाक्टर गावों में नहीं जाते। जंगमपुरी वाला कहता था अरे बड़े अफसरो, जाने की ही सोचते हो। गावों से आने की भी तो सोचो। जब तक आने की नहीं सुलझाते, जाने की नही सुलझ सकती। पहले यह बताओ कितने वर्ष बाद आने दोगे? लेकिन चुप हैं। मिनिस्टर चुप है। कुछ बुजुर्ग, ऊंचे अधिकारी कह भी देते हैं यह नहीं बतायेंगे! गया सो गया। सांभर में पड़ा सो नमक! वह तो नमक ही होजायेगा नमक! आखिर को पूछेगा। गावों से लाकर उसका करें क्या? वह सेक्रेटेरियेट के लायक नहीं है, वह लोकसेवा के लायक नहीं है, वह यादगार बोर्ड के लायक नहीं है, और वह महिलाबाग और न्यू हायर सैकण्डरी के लायक भी नहीं है। और तो और वह शिक्षा बोर्ड के लायक भी नहीं है। परीक्षाधीक्षक नहीं बन सकता, वह परीक्षाओं के लिये सुपरवाइजर तक नहीं बन सकता, वह मान्यता आदि के संदर्भ में स्कूलों का इंस्पेक्टर बोर्ड की तरफ से नहीं बनाया जा सकता। उसे अनुभव ही क्या है! इसलिये उसे कार्य के बदली में नहीं

लाना चाहिये। फिर भी हम तो कहते हैं, बैकसी होने पर शहर देंगे!

गाव और शहर में अन्तर है। यह अन्तर समाज शास्त्रियों द्वारा, प्रशासन शास्त्रियों द्वारा मान्यता प्राप्त है। यह अन्तर मामूली नही है। विकास की मजिलो का, स्तरों का अन्तर है।

गांवों और शहरो का अन्तर सारे समाज की समस्या है। समाज की कोशिश चल रही है कि अन्तर को मिटाया जाय। गरीब अमीर की खाई को सकरी करने की कोशिश है, वैसे ही गाव शहर को खाई कम करने की कोशिश हैं। इसलिये विभाग और सरकार को चाहिये कि गांव और नगर के अन्तर को मान्यता दे, दोनो के परस्पर के विरोध को माने। वह कहता था याद रखो जो गांव के मास्टरों के हित मे है, वह शहरी मास्टरो के अहित मे है। जो बात शहरी मास्टरों के हित मे है, वह गावों के मास्टरो के अहित मे है। शहरी मास्टरो का शहद, ग्रामीण मास्टरो का विष है जहर है। दोनो प्रकार के मास्टरो की चितन व्यवस्था एक दूसरे मे उल्टी है। शहरी कहता है कभी मत बदलो, ग्रामीण कहता है अभी बदलो। शहरी कहता है हम इसलिये पूरा नहीं पढा पाते कि बदली की तलवार लटकती दीखती है। ग्रामीण मास्टर कहता है कि हम पूरा इसलिये नहीं पढा पाते कि बदली की डोर नजदीक ही लटकती नहीं दीखती।

जगतपुरीवाला मास्टरो से कहता :— हे मास्टरो! कौनसे अध्यापक संघ के सदस्य बनते हो। वह सघ आपके बैरियो का संघ है। उस सघ के नेता शहरी है वे कभी नही चाहते कि तुम्हे गांवों से बदल कर शहरो मे पहुँचाया जाय। वे अधिकारियों से तुम्हारी बदली की कभी नही कहेंगे। वे अधिकारियो से कहेंगे:— कभी मत बदलो।

वह साथी हैडमास्टरों से कहता—मत बनो सदस्य, यह अधिकारी सघ आपके दुश्मनों का संघ है। आपको बढिया माना,

शहरी हैडमास्टरों का वलन हैं जो अपने को शहर मे कायम रखने के लिये बनाया गया है। आपको यह गवार हैडमास्टर मानता है। क्या आप नहीं मानते कि ये आपके बैरी है? नही मानते हो तो इस संघ से बदली के प्रश्न पर प्रस्ताव पास कराओ कि ग्रामीण हैडमास्टर दो साल के बाद शहर में आने चाहिये। ये हैडमास्टर और अन्य अधिकारी ग्रामीण हैडमास्टरो को अयोग्य मानते हैं. अपने आपको लीडर मानकर सरकार और निदेशक पर प्रभाव डालते हैं कि उन्हे शहर से नहीं हटाया जाय। जो चन्दा देते हो, वह चन्दा तुम्हारे आगे दिवार बनाने के काम मे आता है। उस चन्दे से खाई खुदेगी जो तुम्हे शहर मे आने मे रोकेगी और शहरी मास्टरो के गढ को मजबूत बनायेगी।

वह कहता था:—हे देहाती मास्टर, सम्भल! शहरी मास्टर तेरा नही है। अफसर तेरा नहीं है।

वह आगे कहता था.—हे हैडमास्टर, सम्भल जा! शहरी हैडमास्टर तेरा नही है। अफसर तेरा नही है।

१९६४ की जुलाई से अक्टुबर तक एक निदेशक आया था। इन वरसो मे जोधपुर विश्वविद्यालय का वाइसचासलर है। उसने सरक्युलर निकाला कि किसी की मरजी के खिलाफ बदली नही होगी। एक को अच्छी जगह इसलिये नही छीनी जायेगी कि उस अच्छी जगह को कोई दूसरा मांग रहा है। देखो तमाशा! क्या यह सर्व विदित नही है? यह आवाज, यह भावना जो ऊपर के इस आदेश मे है किसके विरुद्ध है? यह पटकार किस पर है? साफ है देहाती मास्टरों और हैडमास्टरों को चेतावनी दी है कि वे बदली का रोना नही मचावें। इस अफसर ने शहरी मास्टरो हैडमास्टरो से बडी वाही वाही लूटी थी क्योंकि वह उन्ही का अफसर था। ग्रामीण मास्टरो, हैडमास्टरो का दुश्मन था। सरक्युलर पर अमल होता रहा। मास्टर मरते रहे, पिसते रहे। हैडमास्टर मरते रहे, पिसते

रहे। गांवों में बदली जरूर होती थी। पर होती थी अन्य गांवों में, इस गांव की उस गांव में और उस गांव की इस गांव में। मास्टर राजी था कि उसकी बदली जल्दी जल्दी होती है। पर वास्तव में था क्या ? पुराना स्थान बुरा लगा। सोचा शायद आगे सुख मिले। वह भी बुरा लगा। फिर आगे। इस प्रकार अन्धेर गली में अन्धे मास्टर घूमते रहे। कोई पोदार में नहीं गया, कोई दरबार और मानक चौक में नहीं गया ! तड़फ-तड़फ कर रिटायर हो गये और जल्दी ही मर जायेंगे। पर वह चीज नहीं मिली।

हैडमास्टर की बात काटते हुए कहा जायेगा कि देखो, वह मोहनजी नगर में गये। हां ठीक है। यू० एस० ए० में निग्रो लोग भी ऊंचे पदों पर हैं। भारत में चमार भी ऊंचे पदों पर हैं। लॉटरी जीत कर भिखारी भी लख पति बनने लगे हैं। पर निग्रो वर्ग है, चमार वर्ग है, भिखारी वर्ग भी है। गमलों में पड़े गोभों से बागों नहीं का वन नहीं बनेगा। व्यवस्था तो है ही। जरूरत है व्यवस्था बदलने की। चिंतन शैली बदलने की।

देहाती स्टाफ और शहरी स्टाफ का भेद वर्ग भेद है। दोनों वर्ग एक दूसरे का उल्टा सोचते हैं। निदेशक हमेशा शहरियों के साथ है और रहेगा।

बदली कहां हुई ? सेजरोली हो गई क्या ? ओहो ! मार दिया बेचारे को ! कहां पटका है ! तो फिर अब जाओगे ? जाऊंगा नहीं ! वह अपना है, यह अपना है। हिमायती निदेशकजी के पास जाता है और कहता है:— अजी साहब, सेजरोली बहुत खराब जगह है। वह सड़क से हट कर है, मकान नहीं मिलते हैं। निवासी झग-ड़ालु हैं, कोई मदद नहीं करते। साथ नहीं देते।

निदेशकजी कुछ पावसेते हैं। कहते हैं, अच्छा इतनी खराब जगह है ? सोचूंगा। अगर इतनी खराब जगह है तो बदल दूंगा।

है। ट्रान्सफर के नियम अ, आ, इ, ई चार भागों में बांटे हैं।

(अ) मे स्थानांतरण के पांच उद्देश्य बताये हैं।

(क) विद्यालय के शिक्षण स्तर को ऊंचा रखना

(ख) अध्यापकों की पारिवारिक एवं व्यक्तिगत सुविधाओं का ध्यान रखना

(ग) अध्यापकों मे परस्पर समानता का व्यवहार

(घ) प्रतिभावान एवं कर्मनिष्ट व्यक्तियों की योग्यता एवं क्षमता का समुचित उपयोग

(च) जिन व्यक्तियों का कार्य सतोषजनक न हो अथवा अपना उत्तर दायित्व शिथिलता एवं अन्य मनस्कता से निभाते हो, उनको स्वभाव परिष्कार एव कार्य दक्षता सुधारने की दृष्टि से अन्य विद्यालय में नियुक्त किया जाना।

टिप्पणी

(क) पढ़ाई का या मास्टर का स्तर ऊंचा करने का स्थानान्तरण से कोई सम्बन्ध नहीं है

(ख व्यक्तिगत और पारिवारिक सुख सुविधाओं का ध्यान रखने से ही, गावों की स्कूलों का नाश हुआ है। इस नियम के पीछे के पन्ने इन्ही बातों की तरफ ध्यान खींचते है कि नौकरी में पहली चीज सार्वजनिक कर्त्तव्य है। जो मास्टर गांव में जायगा, उसका परिवार भी दुख पायेगा और खुद भी दुख पायेगा। इसका कोई उपचार नहीं है। एक भी केस ऐसा नहीं हो सकता, एक भी परिस्थिति ऐसी नहीं हो सकती जहां इस नियम का पालन हो सके। जिन शिक्षा शास्त्रियों ने यह उद्देश्य रखा है, उनके ध्यान में गांव के स्कूल है ही नहीं। वे लोग वे हैं जो अपनी

सुविधा देखकर जयपुर से बीकानेर आये और बीकानेर से बदली करवाकर जोधपुर गये। नौकरी हवा में की और अब नियम हवा में बनाते हैं। *विभाग के ये ईलिट हैडमास्टर ही विभाग पर कलंक है* क्योंकि उनका चिंतन एक पक्षीय है, मनोगत है।

(ग) यह उद्देश्य बहुत अच्छा है। पर यह नियम अधूरा है। यह यों होना चाहिये :— *सब मास्टर और हैडमास्टर निदेशक के* लिये बराबर हैं। इसलिये बारी बारी से गांव में बदलकर भेजना चाहिये। सादुल स्कूल का मास्टर या हैडमास्टर जब तीन बरस बीकानेर में रह लेता है तो उसे जंगलपुरी में भेजना चाहिये और जंगलपुरी वाले को बीकानेर में। इस *समानता* वाले सिद्धांत का अर्थ अब जो लगाया जाता है वह वर्गगत है। जंगलपुरी का मास्टर या हैडमास्टर निदेशक से कहता है कि हमको पोद्दार में बदल दो। निदेशकजी उत्तर देते हैं:-मास्टर जी, हैडमास्टरजी, देखो स्थाई आदेश १२, सन् १९६८ के अ को। मेरे लिये सब बराबर हैं। आपको सुख पहुंचाने के लिये, मैं दूसरे को दुख क्यों दूं ? मेरे लिये सब बराबर हैं, मास्टर जी ! आप किस दुनियां में रहते हैं, विभागीय नियमों की जानकारी नहीं रखते क्या ? शिविरा खरीदो। इसलिये नाम मात्र की कीमत रखी है आपके समझ में यदि उद्देश्य नहीं आवे तो अपने हैडमास्टर से पूछते, इन्सपेक्टर से पूछते ! मेरे लिये सब बराबर हैं, समझें ! आइन्दा मत आना। मेरे लिये सब बराबर हैं ! हमें सबकी सुख सुविधाओं का ध्यान रखना पड़ता है, समझें कि नहीं ! जाओ।

ये निदेशक जी हैं जिन्हें अपनी निष्पक्षता पर और ईमानदारी पर गौरव है। *कर्ण की* मिसाल देनी हो, एकपक्षीय चिंतन

की मिसाल देनी हो तो शिक्षा निदेशक के ऊपर के उत्तर मे है। शहरी अधिकारी नियम बनाते हैं और फिर उनका अर्थ भी ये ही लगाते है ! क्या यह प्रशासनिक सिद्धांतों के विरुद्ध नहीं है ? आप ही नियम बनाते है, आप ही अर्थ लगाते हैं ! वाह ! खूब !

(ध) प्रतिभावान और कर्मनिष्ट होने का स्थानान्तरण से कोई सम्बन्ध नहीं है। ट्रांसफर इसलिये नही किये जाते कि मनुष्यों में प्रतिभावान और कम प्रतिभावान हैं। कर्मनिष्ट और कम कर्मनिष्ठ लोग हैं,इसलिये ट्रांसफर जरूरी है,यह मत बेइमानों का है, अधूरे लोगों का है। परन्तु क्योंकि शिक्षा विभाग के कर्णधार अधूरे है, इसलिये मनुष्यों के इस भेद को लेकर उन लोगों को शहर में रख लिया जाता जिन्हे ये पसन्द करते हैं, और प्रतिभावान मानते है प्रतिभावानो की इनकी पहचान अगर सही भी है तो क्या प्रतिभावानों व कर्मनिष्ठों को शहर में रख लिया जाय और कामचोरों को गांवों में भेज दिया जाय ? वाह निदेशकजी, आप प्रतिभा और कर्मनिष्ठा के आधार पर बदली करते हैं क्या है साहबो ! क्या आप अब भी यही कहते हैं कि आप इस सिद्धांत पर बदलियां करते हैं ? यदि कहते हैं तो बताइए प्रतिभावानों को और कर्मनिष्ठावानों को कहां से उठाकर कहां भेजते है ?

(च) इस पांचवें उद्देश्य के अनुसार आप विभिन्न लोगों को, शिक्षकों को कहां से कहां भेजते है। गांवो से शहरों में भेजते है क्या ? या शहरो से गांवों में भेजते है ? दूसरी बात सही है शायद ! अध्यापकों को अनमने भेजते है वहां वे हैरान,परेशान रहते है और ग्रामीण छात्रों को नुकसान पहुँचाते है। वहां

रोना तो इस किताब में जंगलपुरी वाले ने रोया है। खैर, वह तो रोता रहा। पर आप ऐसे नियम बनवाकर और इनका पालन करके कब तक अमर रहेंगे ?

जंगलपुरी वाला सुभाव देता था कि शिथिलता, ढिलाई आदि ट्रांसफर का सिद्धांत कभी नहीं हो सकता। कामचोरों के विरुद्ध अनुशासन की कार्यवाही करो। वह आगे कहता: हे निदेशक! इलिट स्कूलों के लिये इलिट मास्टर, हैडमास्टर आप छांटते हैं विभिन्न सम्मेलनों के लिये हैडमास्टर छांटते हैं तो छटाई करने वाला कम्प्यूटर आप कौनसी कम्पनी का खरीदते हैं ? वह कम्प्यूटर प्रिटोरिया Pretoria में बना है क्या ? सालिसबरी Salisbury में बना है क्या ? आपकी प्रेरणा का स्रोत मनुस्मृति है क्या ?

(आ) स्थानान्तर के सिद्धान्त

जैसा कि इस किताब में कई जगह बताया गया है कि शिक्षा विभाग के सब अधिकारी मई या जून में आबू शिखर पर भेजे देते हैं। हैडमास्टरों में से केवल वे ही बुलाये जाते हैं जिन्हें कम्प्यूटर ने छांट कर इलिट Elite बना दिया गया है। विचाराधीन विद्वों की गम्भीरता को देखते हुये इन इलिट लोगों को गर्मी, लू और रेत से दूर रखना जरूरी होने के कारण, इन्हें आबू शिखर पर भेजाया जाता है। विशेष भत्ते वाला और दुर्गम स्थान होने पर भी आबू शिखर पर भेजा होना सार्वजनिक हित में माना गया है। स्थानान्तर के सिद्धान्त दूढ निकालना, इसी स्थान पर सम्भव हो सका। जंगलपुरी-वाला कहा करता था कि वे लोग क्विटो Quito पर मिलते तो और भी अच्छा होता।

शिक्षा निदेशक ने महासम्मेलन को बताया कि मैं गांवों में भेजने के लिये कुछ मास्टरों और हैडमास्टरों को छांटता हूं। पर वे जाने से इनकार करते हैं। इस प्रकार मेरे आदेशों की उपेक्षा की जाती है। निदेशक की कठिनाइयों को दूर करने के लिये जो नियम बने, उनमें चिरस्मरणीय नियम तीसरा है।

तीसरे नियम की मोटी बातें

(क) एक वेतन शृ खला मे कम से कम तीन बरस गांवों की स्कूलों मे रहना अनिवार्य होगा।

(ख) तीन बरस तक देहाती स्कूलो मे न रहने पर दक्षतावरोध पार नही करने दिया जायगा।

(ग) अगर किसी अध्यापक ने दक्षतावरोध पहले ही पार करली है तो उसे ऊंचे पद पर प्रोमोशन नही दिया जायेगा।

बड़ा शानदार नियम बना। जंगलपुरी की स्कूल में खुशी की लहर दौड़ गई।। जंगलपुरीवाले ने छात्रों और उनके माइयों का एक सम्मेलन में बुलाया और उन्हें यह सुन्दर समाचार सुनाया। उन्हें बताया गया कि अब उन्हें मास्टर की कमी नहीं रहेगी, बल्कि होगा यह कि गांवों में आने के लिये मास्टरों की होड़ लग जायेगी। अब उन्हें ऊंचे पद नहीं मिलेंगे और मौजूदा पदों पर तनख्वा नहीं बढ़ेगी। इस सम्मेलन में निदेशक और सचिव को धन्यवाद दिया गया। नियम बड़ा अच्छा था। मगर इतनी ही थी कि इसमें हैडमास्टरों का जिक्र नहीं था क्योंकि इस सम्मेलन में सिर्फ हैडमास्टर मौजूद थे और मास्टर थे नहीं। मास्टर होते तो, यानी सिर्फ मास्टर होते तो यह नियम पास नहीं हो सकता था।

ये नियम-जुलाई १६६८ मे प्रकाशित हुये। शहरी मास्टरों को पता लगा। उन्होने अधिकारियों पर यानी विभाग पर जोर डाला कि यह नियम हटा दिया जाय और जून १६६६ मे यह नियम हट गया। शहरी मास्टरों मे खुशी की लहर फैल गई। ये शहरी मास्टर इस तीसरे नियम से बहुत नाराज थे, क्योंकि ये गावो मे कभी नहीं गये थे और जाने की नीति भी नहीं थी। इसीलिये जगलपुरी-वाला गला फाड़ कर कहता है : हे मास्टरो, वह अध्यापक-सघ तुम्हारा नही है। इसका विरोध करो। यह शहरी लोगों का है। तुम्हारी मदद से यह सघ विभाग से शहरी मास्टरों के हित मे कार-वाई करता है। इसका बहिष्कार करो। अपने सघ अलग बनाओ। अलग बनाने की हिम्मत नहीं है तो नही सही, शहरी मास्टरों से मत मिलो। अपने बैरी की चाकी में गाला grist मत डालो। वह आगे कहता : हे मास्टरों, ये विभागीय अफसर भी तुम्हारे नही है। इनकी हमदर्दी अपने वर्गीय भाइयों, अपने सहवासी भाइयों, शहरी मास्टरों के साथ है।

हैडमास्टरों मे ... हैडमास्टर भाइयो, मेरे मित्रो,
यह विभागीय अधि... ...री नही है। ये अफसर आपके
अफसर नहीं है। ये ... है। ये आप पर दोहरी मार
करते हैं। आपको ... आपको अपना उचित स्थान
नहीं देते है। ... कर गावो मे रख छोड़ा
है। आपको ... रखा है, शहरो मे रहने मे
पुस्तक रिव्यूओ आदि मे
... अधीक्षक बन कर आप
... को ५० पैसे प्रति फॉर्म
... का पर मिलता है। इन
... इजाफ नहीं दिया जाता

नियम १०

आबू पर्वत पर शिक्षा प्रशासन के शिरोमणि बैठे हुऐ। शिक्षा प्रशासन में निपुणता पाये हैडमास्टर भी उनमें बुलाये गए थे। प्रशासन में पारंगत ये एच० एम० वहां बोले:—

शिक्षा निदेशक महोदय, गावों के हैडमास्टर रात दिन इस कोशिश में रहते हैं कि वे शहर में आयें। आपको, नेताओं को, शासन सचिव को तंग करते हैं और शिक्षा मंत्री तक भी पहुंचते हैं। महोदयजी, आप लोगों में से कभी कभी कोई न कोई पिघल जाता है। आप लोगों का कुछ बिगड़ता नहीं, मरते हम हैं। आप हमसे उम्मीद करते हैं कि हम लगन से काम करें, अनुशासन रखें, अभिभावकों से मिलें। लेकिन जब हम देहाती हैडमास्टर के ये रोले सुनते हैं और कभी कभी आपका पावतना देखते हैं तो हमारा मूड खराब हो जाता है। काम में मन नहीं लगता।

निदेशक ने उत्तर में कहा :— आप लोगों की बात सही है। ये लोग मुझे बहुत तंग करते हैं। यह बात भी सही है कि हम लोगों में से कोई न कोई इन लोगों की चिकनी चुपड़ी बातों में आ भी जाता है। हमने इन्हें टालने के लिये आदेश भी खूब निकाले कि तीन वर्ष तक बदली नहीं होगी। १९६४ की जुलाई में निकाले सरक्यूलर भी हमारे इसी चिंतन के नतीजे थे। परन्तु फिर भी गलती हो जाती है। अब आप मेरे हाथ मजबूत करने के लिये नियम ही बनादो जिससे हमेशा के लिये यह झंझट मिटे। और यह दसवा नियम अस्तित्व में आया।

जगत प्रसिद्ध इस दसवें नियम की मोटी बातें हैं:—

(१) किसी एक व्यक्ति को सुविधाजनक स्थान देने के लिये किसी अन्य व्यक्ति को असुविधा नहीं पहुंचाई जायेगी।

(२) किसी व्यक्ति की इच्छा विरुद्ध उसका ट्रांसफर नहीं किया जायेगा।

(३) इच्छा विरुद्ध ट्रांसफर होता है तो वह व्यक्ति उस अधिकारी से कारण पूछने का अधिकार प्राप्त कर लेता है।

(४) कारण बताना जन हित में न हो तो इनकार किया जा सकता है।

(५) कारण न बताने के इस अधिकार का प्रयोग बहुत ही अहम स्थितियों में किया जाये।

जगलपुरी वाले को इस नियम पर गुस्सा आया और वह बोल उठा :—

बहुत पहले की बात है। प्रशासक वर्ग के नेताओं ने व्यवस्था से प्राप्त अपनी सत्ता का प्रयोग करते हुए प्रशासित जनता में से किसी एक समुदाय को शूद्र बना दिया। किसी अन्य समुदाय विशेष को उत्पादन कार्य में लगा दिया और उसे वैश्य कहने लगे। सत्तारूढ वर्ग में से सुस्त लोगों को पढाई का काम सौंप दिया और उन्हें ब्राह्मण कहने लगे। सत्तारूढ के तेज मिजाज लोगों को क्षत्रीय बना दिया। दो उपवर्ग सत्ता प्राप्त वर्ग के बने और दो उपवर्ग सत्ताहीन वर्ग के बने। इसके उपरांत नियम कायदे बन गये कि अब वस इधर उधर नहीं होसकते। इस प्रकार भारतीय समाज में सुविधासम्पन्न और सुविधाविपन्न वर्ग बन गये और चिरस्थाई हो गये। यही कोशिश इन नियमों में है। प्रत्यक्ष है, स्पष्ट है। शत प्रतिशत वर्णाश्रम के नियमों से ये स्थानान्तरण के नियम मेल खाते हैं। सुविधासम्पन्न शहरी मास्टरों को हटाया नहीं जायेगा। देहाती मास्टर की असुविधा दूर नहीं होगी। चिरस्थायी बन जायेगी। इस प्रकार भारतीय

समाज की तरह शिक्षा समाज में भी सुविधासम्पन्न और असुविधा पीड़ित दो मोटे वर्ग बन गये। इसी प्रकार समाज में स्तरीकरण होते हैं This is how stratification takes place. यह मास्टरों और हैडमास्टरों को कहना : जहां भी यह १२/६८ वाला स्थायी आदेश मिले, इसे फाड़ डालो, जला डालो। शिक्षा अधिकारी आये, उसके सामने फाड़ कर डालदो। उसे कहो कि चौथे नियम बनाये। और उसे यह भी पूछो कि वह चौथे नियम का पालन क्यों नहीं करता।

राजस्थान सरकार और इसके ईलिट elite अफसर शिकायत करते हैं कि मास्टर और डाक्टर गांवों में जाना नहीं चाहते हैं। इन ईलिट अफसरों और मिनिस्टरों की देखा देखी समाज भी इस शिकायत में शामिल हो रहा है। यह ठीक है कि नहीं जाना चाहते! पर कारण क्या है नहीं जाने का? क्या इनमे सेवा भाव नहीं है? क्या ये गावों की दुविधाओं से डरते हैं? सेवा भाव की कमी या दुविधाओं से डरना उनके न जाने का कारण नहीं है। उनके न जाने के कारण ये हैं :

१ वे यह फील करते हैं कि उन्हे हमेशा के लिये शूद्र बनाया जा रहा है। एक बार गावों में चले जाने के बाद उन्हें शहर में नहीं बढ़ने दिया जायेगा, क्योंकि उन्हें सुभीता देने के लिये शहरियों की सुभीता नहीं छीनी जायेगी, उन्हे कह दिया जायेगा, स्थान खाली नहीं है।

२ वे यह फील करते हैं कि बहुत से शहरी कर्मचारियों में से उन्हें गांवों में जाने के लिये छांटा गया है क्योंकि वे कमजोर माने गये। वे कहते हैं देखो दूसरों को नहीं छेड़ा गया! इस भावना की वजह से वे अपमानित फील करते है। वे फील

करते है कि उनके साथ अन्याय और भेद भाव किया गया है।

३ ऊपर की दो भावनाओ की वजह से ही नवम्बर १९७१ के शुरू में राजस्थान के दो डाक्टरो ने आत्म हत्या करली थी।

४ बारी बारी से By rotation बदली करो, सब राजी खुशी चले जायेंगे। पर, क्या सरकार ऐसा करेगी ?

• • •

१६

ट्रांसफर्स के सही उद्देश्य और ट्रांसफर स्की

Rotation scheme

[illegible]

पुरों से मास्टर हटा लेना शिक्षा प्रशासन की विशेषताओं से अजानता प्रगट करता है।

पिछले पाठ मे विभागीय आदेश मे दिये उद्देश्यों और सिद्धांतों को एक पक्षीय, एकांगी और निरर्थक सिद्ध कर दिया है। इसकी जगह नीचे दिये उद्देश्य और स्कीम तुरन्त लागू की जाय।

उद्देश्य

1. गावो मे पटक कर शूद्र बनाये गये मास्टरों और एच. एम. को नगरो मे बदल कर ब्राह्मण,पंडित बनाना और नगरो मे तिलके हुये ब्राह्मण, पंडितो को गावो मे भेज कर शूद्र बनाना, स्थानान्तरण का पहला उद्देश्य है। यो भी कह सकते हैं, ऊपर चढने की सीढी Social ladder को उल्टा करना जिसमे निचला पाता ऊपर हो जाय और ऊपरला पाता नीचे हो जाये। शिक्षा जगत् के चिंतक इस ठोस तथ्य को क्यो भूल जाते है कि देहाती और कस्बाई के बीच मुख्य अंतर्विरोध Contradiction है। यह अंतर्विरोध ही असमानता, विषमता और अन्याय का कारण है। जो प्रशासक इस अंतर्विरोध से आंख मीचता है, वह पाखंडी है, झूठा चिंतक है, विषमता पक्षी है, अन्याय पक्षी है।

२. ग्रामीण विद्यालयों मे छांट कर भेजे हुये नये नाई, नये खाती, नये मोची, नये टेलर नगरों मे भेजना और नगरों मे गद्दी नशीन किये हुये, अनुभवी, प्रतिभाशाली, परिश्रमी, प्रभावशाली, कारीगरी प्राप्त, Skilled स्टाफ को गावो में भेजना दूसरा उद्देश्य है।

शिक्षा प्रशासन और समाज शास्त्री को इस बात से सहमत होना चाहिये कि गांवों और शहरों का अंतर्विरोध इस जमाने के मुख्य अंतर्विरोधों में से है। गांव हर बात में उपेक्षित है। अच्छा मास्टर, अच्छा डाक्टर नगरों को मिलता है। गांवों को या तो मिलता नहीं है और यदि मिलता है तो खराब मिलता है। मनचाहे मास्टर कहां जाते हैं? ग्रामीण छात्रों के प्रति स्थापित किया हुआ यह अन्याय, विस्थापित करना ट्रांसफर्स का बड़ा उद्देश्य है।

३ बहुत समय तक एक जगह ठहरने से सरकारी कर्मचारी में कई कमजोरियां आ जाती हैं। स्थानीय वचनबद्धतायें और लाचारियां Local commitments and obligations स्थापित हो जाती हैं जो सार्वजनिक कर्तव्यों में बाधा डालते हैं। सरकारी नौकर के स्वभाव से स्थानीय जनता परिचित हो जाती है। फिर उसे हैंडल करने का तरीका सब जान जाते हैं और उसके निर्णयों की, उसके आचरणों की भविष्य वाणी हो जाती है। स्थानीय सम्बन्ध हो जाने से उसे चारों तरफ से दबा दिया जाता है और उसके कार्य सम्पादन की स्वतन्त्रता चली जाती है। इन तीन कमजोरियों से मुक्त होना ट्रांसफर्स का तीसरा उद्देश्य है।

४ सब स्थानों का, सब परिस्थितियों का अनुभव कराना, खट्टा मीठा स्वाद चखाना पीहार स्कूल के मास्टर एम. एस. को जंगलपुरी भेज कर यह देखना कि वहां वह सफल होता है कि नहीं, इस प्रकार कर्मचारी को होशियार बनाना और सब परिस्थितियों में परखना, ट्रांसफर्स का चौथा उद्देश्य है। आज कल एम. एस. उकताये और दुःखी हैं। सब मास्टर एकाकी हैं, इस स्थिति का निदान अब जरूरी हो गया है।

स्टाफ की सप्लाई न होने से और घटिया स्टाफ की सप्लाई की वजह से यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि राजस्थान में शिक्षा के अवसरों की समानता नहीं है। शिक्षा प्रशासन की सारी गतिविधियां देहाती छात्रों के विरुद्ध पड़ती हैं। शहरी पढ़ाई और देहाती पढ़ाई के अंतर को देखते हुये कह सकते हैं कि संविधान में दिये मूल अधिकारों का और निर्देशक सिद्धांतों का उल्लंघन हुआ। एक बात और भी ध्यान देने योग्य है। जगलपुरी में ५०० छात्र थे और वहां एच एम. अकेला काम करता रहा। बीकानेर नाम की बस्ती में पिछले बीस बरसों में पबलिक स्कूल में १५० छात्रों का औसत रहा, वहां ६० मास्टरों का स्टाफ रहा। क्या यह शिक्षा की समानता है?

स्थानान्तरण विधि–घूम चक्र योजना
Transfer scheme--Rotation scheme

ऊपर लिखे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये स्थानान्तरण विधि यह है -

राज्य को चार भागों में बांटा जाय।

(क) छः शहरः जयपुर, अजमेर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, कोटा।

(ख) जिला हैड क्वार्टर के कस्बे।

(ग) म्यूनिसिपल बोर्ड के कस्बे।

(घ) पंचायत राज में पड़ने वाले गांव जहां दसवीं ग्यारहवीं के विद्यालय हों।

स्कीम लागू होते ही (क) के मास्टर और एच एम. (घ) में जायें, और (घ) का स्टाफ (क) में जाय। (ख) का (ग) में और (ग) का (ख) में। तीन बरस होते ही फिर .. बदल दिया जाये।

चोयस

(घ) के मास्टर, एच. एम. चाहे तो हमेशा वहीं रह सकते हैं। एक बार चोइस देने के बाद तीन बरस वहीं रहेंगे। [ग] में कोई रहना चाहे तो वह रह सकता है पर उसे फिर [क] और [ख] कभी नहीं मिलेंगे।

कोई चोयस नहीं

[क] और [ख] तो तीन बरस बाद छोड़ना ही पड़ेगा।

•••

समझ कर, यथोचित आचरण करने से ही विद्यालयों में शान्ति रह सकती है। इस समय स्थिति गड बड में है Confused है। सबधो की प्रकृति की जान कारी नही है। इसलिये निराकरण नही हो रहा है।

विद्यालयी संस्थान की इकाइयां और सम्बन्ध ये है :

१. एच एम. २ मास्टर ३ क्लर्क ४. चपरासी और ५. छात्र। पाच इकाइयो के इस प्रतिष्ठान का प्रबन्धक एच एम. है। आगे के पृष्ठो मे इन इकाइयो के सम्बन्धो की प्रकृति पर लिखा जायेगा।

विद्यालय के बाहरी संबंध

१ विद्यालय निरीक्षक २ उप निदेशक ३. निदेशक ४ शिक्षा बोर्ड इन अफसरों से एच. एम. के सम्बन्धो की प्रकृति क्या है ? इस पर भी लिखा जावेगा।

हैडमास्टर और छात्र

एच. एम. और छात्र के आज तक के जो सम्बन्ध माने जाते रहे है वे य है :

१ आदर्शो और बच्चो के सम्बन्ध, बाप और बेटे के सम्बन्ध।

२. [illegible] शिष्य के सम्बन्ध है। वे सम्बन्ध पूरे और पर प्राइवेट [illegible]। इन सबधों की कमजोरी यह है कि ये बहुत ही [illegible]नत, अनिश्चयनीय है। इनकी कोई परिभाषा और परि

सीमा नहीं है। बायें से दायें और दायें से बायें ये संबंध कहीं भी सरक कर जा सकते हैं। सही बात तो यह है कि यदि परिवार में भी ५०० या हजार बच्चे हो जायें तो सरकार उस परिवार का राष्ट्रीय करण करके उसे किसी कोऑपरेशन Corporation लिमिटेड को सौंप देगी, क्योंकि इतना बड़ा परिवार पारिवारिक संबंधों से निभाया नहीं जा सकता। गुरु और शिष्य का सम्बन्ध, पिता पुत्र के सम्बन्धों से मिलता–जुलता है।

कुछ लोग कहते हैं कि एम० एम० छात्रों का अफसर है और दोनों के बीच का संबंध अफसर और मातहत का संबंध है। प्रशासक और अधीनस्थ का संबंध है। यह भी गलत है क्योंकि छात्र सरकारी नौकर नहीं है, तो फिर इस समस्या को कैसे सुलझायें ? इस समस्या का समाधान यह है -

पांच इकाइयां मानसिक और चार इकाइयां बाह्य हैं। इन नौ इकाइयों के एक दूसरे से संबंधों के विस्तार और गहराई में जाने से पहले यह देखें कि उत्पादन की वृद्धि में यानी पढ़ाई की वृद्धि और निरन्तरता में कौनसी इकाइयां मौलिक हित रखती हैं ? पढ़ाई नहीं होती है तो नुकसान छात्रों का है। और छात्र इस बात को जानते हैं। कोई यह कहता है कि छात्र अपने हितों को नहीं जानते हैं तो वह अज्ञानी है, अनुभवहीन है। पचास लड़कों की छुट्टी करवा देखो, सौ बरस, दस बरस के छात्र पढ़ने मिल जायेंगे। पढ़ने के लिये उन्हें कोई दबाना नहीं। मास्टर पढ़ाता नहीं है तो छुट्टी के लड़के एम०एम० से शिकायत करते हैं और मास्टर की बुराई करते हैं। प्राइमरी कक्षाओं के लड़के तक पढ़ाई की चिंता रखते हैं। खराब लड़के सभी जगह मिलेंगे

जैसे खराब आदमी सभी जगह मिलते हैं। सो पहली इकाई छात्र हैं, जो उत्पादन और उत्पादनशीलता में हानि लाभ में बंधे हैं। अब हम ढूंढे कि दूसरी इकाई कौनसी है जो हानि लाभ की दृष्टि से पढ़ाई से सम्बन्ध है। चार बड़ा इकाइयां क्या ? बिलकुल नहीं। बहुत ही दूर का और परोक्ष का सम्बन्ध है। चपरासी और क्लर्क है ? प्रश्न ही नहीं है। अब र अध्यापक लोग। अध्यापकों के विषय मे मौलिक बातें जानना एच० एम० के लिये बहुत जरूरी है। अप्रत्यक्ष रूप से सभी के लिये जरूरी है।

१ अध्यापन एक ट्रेड है–रोटी रोजी का साधन है, सुख सुविधा का साधन है, जीवन मे सांस्कृतिक–सामाजिक उन्नति का साधन है। तनखायें बढ़ाने के लिये, गाँवों से शहरों में बदली करवाने के लिये, यहां तक कि नापासर से बीकानेर आने के लिये अधिक से अधिक छुट्टी लेने के लिये अपने एम्पलोयर employer से रात दिन मास्टर लड़ते रहते हैं। दैनिक कार्यों में लेट आने के प्रश्न पर, छुट्टी से लौटने पर, लेट आने के प्रश्न पर, पांच बजे से पहले चले जाने के प्रश्न पर, पीरियड मे लेट जाने के प्रश्न पर एम्पलोयर से झगड़ते रहते हैं। एम्पलोई employee की आम आदत के अनुसार अध्यापक लोग अधिक से अधिक लेना चाहते हैं और कम से कम देना चाहते हैं। अध्यापक संघ नाम से इन्होंने अपने ट्रेड यूनियन बना रखे हैं। ट्रेड यूनियन एक्ट के अनुसार रजिस्टर्ड नहीं है तो भी बात मे फर्क नहीं पड़ता। दूसरे देशों में अध्यापक संघ ट्रेड यूनियन एक्टों के अन्दर में ही बने हुये होते है। सोमलिस्ट देशों में यह सर्वसम्मत है। अभी १६७० के शुरु में ब्रिटिश अध्यापक संघ ट्रेड यूनियनों में शामिल हो गया है। कई महीनों १६६६-

७० में उन्होंने हड़ताल की और फिर आम ट्रेड यूनियनों में मिल गये । आम धारणा है कि ट्रेड यूनियन औद्योगिक मजदूरों का यानी शारीरिक काम करने वाले मजदूरों का ही संगठन होता है । यह धारणा यों बनी कि सबसे पहले मजदूरों ने ही अपने संगठन शुरू किये । संगठन आंदोलन औद्योगिक संस्थानों की ही देन है । पर अब वे सब ट्रेड इसमें शामिल हैं जो अपने एम्पलोयर से अपनी मांगें मनवाना चाहते हैं । स्वतंत्र धंधा करने वाले self employed people के सब ट्रेड यूनियन की श्रेणी में नहीं आते हैं । धर्मार्थ, सांस्कृतिक, आदि संगठन भी इसमें नहीं आ सकते । इस प्रकार अध्यापक समाज एक वर्ग है । उसका चिंतन वर्ग चिंतन है । कम से कम काम करना एम्पलोई की मनोवृत्ति होती है । सुपरविजन के दबाव से ही काम करना एम्पलोई की आदत हो जाती है ।

टीचिंग ट्रेड में काम के गुण और मात्रा का नाप तोल नहीं है । अध्यापन के काम नापे नहीं जा सकते । तोले नहीं जा सकते । उनका मूल्यांकन नहीं हो सकता । इसी लिये कामचोरी की वजह से अध्यापक पकड़ में नहीं आ सकता । विश्व इतिहास में आज तक दृष्टिन नहीं हुआ । सब एम्पलोई पकड़ में आ सकते हैं, इसीलिये उन्हें दंड का भय रहता है । सुपरविजन के बिना भी काम करना पड़ता है । कामचोरी अपने आप में उनके लिये अभिशाप बन जाती है । सब धंधों का मूल्यांकन काम से होता है, अध्यापन का नहीं । छात्र, स्वाध्याय करके, प्राइवेट ट्यूटर रख कर, बाजारू नोट खरीद कर, नकल करके, परीक्षक से मिल कर, पास हो जाते हैं ।

अध्यापक के पास अधिकांशतः कोई चार्जआदि जुम्मेवारी का काम नहीं होता है । वह सही अर्थ में लंगोटी वाला है । वह

चाहे जब घर मे ही छुट्टी की अर्जी भेज कर छुट्टी चला जाता है। पढ़ते पढ़ा और फिर पढ़ाया। उत्तर दायित्व पूर्ण जोखिम का काम उस ने कभी नहीं किया।

[४] कार्य निरन्तरता नाम की चीज नहीं —Regularity and Continuity नाम की चीज है ही नहीं। अध्यापक कहते है, अभी परीक्षा दूर है। अभी तो सेशन शुरू ही हुआ है। विभागीय अफसर इस नियमभंगकारी गतिविधि मे सहायता करते । अक्टूबर मे स्थानान्तरण का सेशन सत्र शुरू करते है। क्यों नहीं ? आखिर वे भी तो शिक्षा विभाग के अंग है ! मास्टर कहते है अभी तो बदलियां होनी बाकी पड़ी हैं। अजी साहब, पांच मिनट लेट पीरियड मे गये तो क्या हो गया। पांच मिनट पहले छोड़ दिया तो क्या हुआ ! पांच मिनट लेट आये तो क्या हुआ ?

[५] कुछ अध्यापक अच्छे भी होते है। वे चाहते है कि पास परसेंटेज ऊंची की जाय। डिसिप्लिन ऊंचा किया जाय। पर वे अच्छे से अच्छे अध्यापक भी निरन्तरताभंगकारी आदत के शिकार होते है। वे निरंतरता के गुणों को भूल जाते है। बिना निरन्तरता के अच्छी पढ़ाई नहीं हो सकती।

[६] अध्यापक की निरंतरता से ही छात्र मे निरंतरता आयेगी। छात्र सोचता है फलाना मा० लेट आयेगा, पहला घंटा उसी का है। पीरियड बजते ही वह मा० नहीं आयेगा, चलो अपन ही थोड़ा बाहर हो आते है। नतीजा यह होता कि मा० और छात्र का कार्यारम्भ मेल नहीं खाता है। पढ़ाई खोटी होती है। काम खोटा होता है।

[७] कोर्स खतम करना जरूर पड़ता है, परन्तु दस महीनों का कोर्स एक महीने मे खतम करना सम्भव हो सकता है।

पूरा समझाने से लेकर कुछ नहीं समझाने तक कई किलोमीटर का फासला होता है। जल्दी जल्दी पटाकर मा० रात काट देता है। ऐसी पोल पट्टी किसी भी धंधे में नहीं है। बाद् ऐसे रात काटेगा तो अपने जाल में खुद फंस जायेगा। मा० अपने जाल में कभी नहीं फसेगा।

८) काम की मात्रा और गुण दोनों ही नाप तोल के बाहर है,परे हैं। बस, जीवन का यही तथ्य मा० की मौज का अकाट्य अभेद्य अछेद्य गढ है पूरे तौर पर हमले से परे Invulnerable है।

[६] सिद्ध है कि मा० और छात्र के सिद्धान्तों का मेल नहीं है। मा० वर्ग और छात्र वर्ग में अन्तर्विरोध है। दोनों में वर्गभेद है। यह वर्गभेद चौड़े में स्पष्ट में नहीं आता इसके बहुत से कारण हैं जिन का उल्लेख यथा स्थान आवेगा।

तो फिर छात्र का हित सामान्य किससे है?

तो फिर छात्र का हित सामान्य किससे है? स्पष्ट है वह एच० एम० से है। नीचे लिखी बातों से स्पष्ट है।

१ एच० एम० शिक्षा विभाग का स्थानीय प्रतिनिधि है। इसलिए वह एम्पलोयर की श्रेणी में आता है। एम्पलोयर के नाते अधिक से अधिक उत्पादन कराना उसकी जिम्मेवारी है। मास्टर नहीं पढ़ाते है तो उन्हें टोकने का, उनसे काम लेने का उत्तर दायित्व सीधा एच० एम० का है।

२ पढ़ाई नहीं होगी तो छात्रों में असंतोष आवेगा। असंतोष से grievances से विद्यालय संचालन में बाधा पड़ेगी। एच० एम० का टिकना, रहना भारी हो जायेगा। बात माइनों में जायेगी। जनता में जायेगी। एच० एम० सीधा पकड़ में आ जायगा। उसके लिये मुंह दिखाना भारी हो जायेगा।

३. विद्यालय अनुशासन का पूरा दायित्व एच० एम० का है। निरतरता बिना अनुशासन नही। निरतरता पर बल देने का एक मात्र काम एच० एम० का ही है। यह काम दूसरा कोई नही कर सकता। पीरियड बजते ही मास्टर अगले पीरियड मे चले जायें, पहले पीरियड मे समय पर जायें, हाजरी ले लें आदि में निरतरता रखे बिना पढ़ाई मे निरंतरता नही रहेगी

४ परीक्षा फल निकलता है तो अच्छे बुरे पर अचम्भा करते एच० एम० का नाम टाव Identity पूछते हैं। रिमार्क वहॉ लग जाते है। चर्चा का विषय बन जाता है। मास्टर गुम नाम Annonymous रहता है।

५ इस प्रकार छात्र और एच० एम० मे हित सामान्य है। Co mmunity of interests है। इस बात को जितनी जल्दी मान्यता मिले उतना ही लाभ दायक है। इससे पढ़ाई होगी और लड़ाई भगड़ा आदि बद रहेंगे। अनुशासन रहेगा। छात्रों मे दल बदी होती है। परन्तु पढ़ाई के प्रश्न पर सब दल एक होते हैं।

छात्रों के विषय मे भ्रान्तियां बहुत हैं। कुछेक नीचे दी जाती हैं जिन्हें फौरन लागू करने की जरूरत है।

१. कहते हैं छात्र पढ़ना नहीं चाहते है। कितनी बड़ी भ्रान्ति है! एच० एम० को याद रखना चाहिये कि छात्र पढ़ाई के लिये तरसता रहता है। तरसता तरसता अधीर हो जाता है। पढ़ने वाला एच० एम० और पढाई कराने वाला एच० एम० जब मिल जाता है तो खुशी की लहर फैल जाती है। प्रसिद्धि हो जाती है कि पढ़ाई अच्छी होती है। जो मास्टर पढ़ाता है उसके पीरियड के लिये उत्सुक रहते हैं, वेट करते रहते है। पहले से

मज कर, जच कर बैठ जाते हैं। मास्टर के आते ही तड़ाक से Spontaneously खड़े हो जाते हैं। चुप चाप बैठ जाते हैं। मास्टर के हाथ में चोक और डस्टर होता है। प्रवेश करते ही सीधा बोर्ड पर जाता है। लिखना शुरु कर देता है। प्राइमरी के बच्चे तक पढ़ाई के लिये तरसते है। अल्प सख्यक खराब होते हैं। अल्प सख्यक खराब इसलिये होते हैं कि पूर्व ज्ञान न होने से पढाई उनके समझ मे नही आती है। भाग दौड़ कर इधर उधर से दबाव डाल कर पास हो जाते हैं। फिर एब-सेंट माइंडिड absent-minded हो कर बैठते हैं। बोर हो जाने पर उत्पात करते हैं या बाहर भाग जाते हैं। जो एच० एम० इस रुख को Attitude को नही अपनाते, इन सिद्धान्त को नही मानते हैं, वे दुख पाते हैं। जो एच० एम० पढ़ाई कराना चाहेगा उसे यह सिद्धान्त मानना ही पड़ेगा। यह सिद्धान्त न मानने से पढाई कराने के दूसरे सहारे ढूंढेगा, जो सच्चे सहारे नही होंगे। कृत्रिम सहारे होंगे। बच्चे पढाई चाहते हैं, यह अटल और अखड नियम है। इस नियम को मानने वाला एच० एम० ही सही काम करेगा।

२. आभारी छात्र : पढाई के भूखे छात्रों को जब पढाई मिल जायेगी तो वे अनेक तरीकों से आभार प्रगट करेंगे। लाभ से लाभान्वित हो कर आपको वह आदर देंगे, जो पिता को दिये जाने वाले आदर से ज्यादा ही होगा।

३. गलत धारणा है कि छात्र अनुशासनहीन होते हैं : जब हम सिद्धांत को स्वीकार कर लेते है कि छात्र विद्या के लिये तरसते रहते हैं, जानने के लिये आतुर रहते हैं, जानने की स्वाभाविक प्रवृत्ति छात्रों में गायब नहीं हो जाती है तो यह मानना कठिन नही होना चाहिये कि अनुशासनहीनता पढ़ाई होनता का ही

दूसरा नाम है। पढ़ाई नहीं तो अनुशासन भी नहीं। अनियत रूप से, नैतिक रूप से, एच० एम० चाहे ऊंचा हो, पढ़ाई नहीं करा पाता है तो छात्रों को झुंझलाहट हो जायगी, नाराजी हो जायेगी। इस झुंझलाहट में, नाराजगी मे, आपके नैतिक गुण दब जायेंगे। छात्र आपका आदर नहीं करेंगे। एच० एम० के नैतिक गुण गौण रूप मे एच० एम० के सहायक हैं। एच० एम० का प्रधान सहायक उसकी पढ़ाई कराने की क्षमता ही है। पढ़ाई कराने की क्षमता मे पहली क्षमता है उसका खुद का खूब पढ़ाना और दूसरे मास्टरों से पढ़वाना। खाली कराम देखते ही खुद पढ़ाने चला जाना पहली आवश्यकता है। अच्छी पढ़ाई पाकर आत्मसात से दबे बालक कभी गड़बड़ नही करेंगे।

४ जबरदस्ती पढ़ाने की गलत धारणा : बच्चे हो, चाहे बड़े हों, पढ़ाई की संतुष्टि से अति सतुष्टि भी हो जाती है। छात्र कहेंगे खेलो का मैच करेंगे, धूप मे बाहर बैठेंगे, मैच देखने जायेंगे, मेले में जायेंगे, जुलुस देखेंगे। यह सब स्वाभाविक है। अतितुष्टि से ये मांगे छात्रो की जो आती हैं इनके लिये विभागीय नियम नही बन सकते। बनने भी नहीं चाहिये क्योंकि, नियमों का दुरुपयोग होता है। परन्तु पढ़ाई कराने वाले एच० एम० को चाहिये कि ऐसे क्षणों में वह विशाल और उदार बने। ये क्षण बड़े सूक्ष्म होते है। इन सूक्ष्म क्षणो मे एच० एम० को अकल लगानी पडती है–discretionary sense का प्रयोग करना पड़ता है। जबरदस्ती पढ़ाई मत थोपो। पढ़ाई के भूखे प्यासे बच्चे ही जब किन्ही क्षणों में अवकाश चाहते हैं तो हिम्मत करके उन्हें छोड़ दो।

५. बच्चो को सिर पर चढ़ाने से बिगाड़ हो जाने की गलत धारणा : बहुत एच० एम० ऐसे विचारो के मिलेंगे जो कहेंगे कि बच्चों

को सिर पर मत चढ़ाओ। इनकी बातें मानना, इनका आदर करना, इनके छोटे छोटे उत्पातों की अनदेखी करना इनकी तरफदारी करना, अनुशासनहीनता को न्योता देना है। अगर एच० एम० थोथा है तब तो गड़ बड़ हो जायेगी। पर एच० एम० अगर योग्य है तो बच्चे सिर पर नहीं चढ़ेंगे, मारे अह-सान के पैरों में पड़ेंगे।

६. छात्रों में मिक्स होना : बड़े बुजुर्गों में यह धारणा भी है कि छात्रों में मिक्स होने से, मेल जोल करने से स्टण्डर्ड गिरता है। यह भी गलत है। परन्तु उन एच० एमों० को अलग रहना चाहिये जो थोथे हैं। थोथा बास परे रहे तो भरा सा लगता है। हाथमें उठाने से पता लग जाता है कि बास हल्का है या कैसा है।

७. क्लास में से छात्र भाग जाते हैं : हा भाग जाते हैं, परन्तु ये वे छात्र हैं, जिनके पास पूर्व ज्ञान नहीं है और पढ़ाई समझते नहीं हैं। ऐसे छात्रों से माथा पची करना, पढ़ना नहीं खाता। इनके पीछे भागना पोसाने की बात नहीं है।

८. क्लास भाग जाती है : क्लास भाग जाती है तो उस मास्टर को पकड़ो, जिसके पीरियड में से क्लास भागी है। यह छान-बीन का उचित केस है। छात्र संसद में रखने के लायक है। पहले मास्टर से कहदो कि वह खुद ही इसका प्रबंध करे। नहीं करता है तो भागने वाली कक्षा से लिखवालो कि क्या बात है, क्यों भागते हैं ?

६. एच० एम० को याद रखना चाहिये कि एच० एम० की जनता छात्र हैं। अ तिम निर्णय जनता करती है। जनता जनार्दन है। अकबर के दरबारी अकबर को सुनाया करते थे : खावाजे खलक, नक्कारे खुदा। रोमन सम्राट चार्लमेन दो पेंट के

के दरबारी सम्राट को सुनाया करते थे : Vox populi Vox dei इन पुरानी कहावतों में सनातन सत्य है। यह सत्य समय के साथ सार्थक बनता जा रहा है । सभ्य समाज में उलझी बातें जनता सुलझाती है । स्कूल की जनता छात्र हैं। जो उनकी नही सुनेगा, उनको अबोध कहेगा उनका अपमान करेगा, तिरस्कार करेगा, वह विद्यालयी कामों के लायक नहीं है ।

१० क्या बच्चे ईश्वर के नजदीक हैं : नहीं। यह धारणा जिसने फैलाई है, वह अंधविश्वासी और अज्ञानी है। बच्चों मे कोई कुदरती पवित्रता है, ऐसा मानने वाले लोग नोर्मल नहीं कहे जा सकते । उनके मस्तिष्क मे कोई खोट है। बच्चे ईश्वरीय भी नहीं हैं और बच्चे नासमझ गवार भी नही हैं। वे अपने स्वार्थों को समझने वाले पूरे जानकार हैं। और विद्यालयी संसार की जनता हैं।

११. बच्चे हैं, अक्ल के कच्चे हैं : दूसरी धारणाओं की तरह यह धारणा भी गलत है। इस सदर्भ मे एक महान् सिद्धांत याद रखना चाहिये : विकास की जिस मंजिल पर एक व्यक्ति है, उस मंजिल पर उसकी जितनी आवश्यकतायें है, उन आवश्यकताओं की पूर्ति की सब बातें वह व्यक्ति आवश्यक रूप से समझेगा। पहली कक्षा का विद्यार्थी पहली कक्षा की आवश्यकताओं को पूरी समझता है। ग्यारहवी कक्षा का छात्र, कक्षा ग्यारह की आवश्यकताओं की पूर्ति की सब बातें समझता है। इस सिद्धांत को यो भी कह सकते है कि जो बातें बालकों के अनुभव मे आ जाती है उनके बारे मे बालक उतना ही जानते है जितना बड़े, बुजुर्ग जानते है। इस बात को सुनने से एक बार अचम्भा होता है, पर छान बीन मे अचम्भे की लहर बैठ जायेगी ।

१२. आदर पाने की तीक्ष्ण भावना : आदर पाने की भावना बच्चे मे बहुत तीक्ष्ण होती है। यह भावना कौनसी उमर से शुरु होती है, यह तो वह एच० एम० नहीं कह सकता था। इतना कह सकता था कि जिस दिन विद्यालय मे आता है उस दिन इस भावना से भरपूर होता है। उसको जीकारे मे बोलो, बराबर का मान कर उससे सुझाव मांगो, देखो आपको कैसा और कितना रिसपोंस Response मिलता है। पूरी गंभीरता से सुझाव और मदद मांगो और देखो बच्चे मे ज्ञान की बातें क्षण भर मे उग जायेंगी। मेह बरसने ही जैसे पौधा उगता है, छात्र में ज्ञान की, अकल की बातें उग जायेंगी। ऐसा उपजाऊ उसका मस्तिष्क है।

१३. निरंतरता के हित मे टोका टाकी :- ऊपर स्पष्ट किया गया कि पढ़ाई के क्षेत्र मे एच. एम. और छात्रो मे कोनफ्लीक्ट Conflict की गुंजायश नहीं है। परन्तु छात्र लेट आये, कभी पढ़ने के मूड मे न हो,मेलो ठेलो,खेल तमाशो,जान बरातो आदि छोटी बातो पर एच. एम. छात्रो को टोकेगा। यह अनुशासन का क्षेत्र है। यो तो सभी काम निरंतरता मांगते हैं, पढ़ाई ज्यादा निरन्तरता मांगती है। जीवन में क्षण प्रति क्षण पवित्रता Purity नही है। बाप बेटे,पति पत्नी के सबधो मे भी क्षणप्रति क्षण तनावहीनता नहीं आ सकती। इस संदर्भ मे कहा जासकता है कि लघु टकराव minor Conflict तो रहेंगे ही। टल नहीं सकते। लघु टकराव मानव सम्बधो के अभिन्न अग हैं।

१४. इस संदर्भ मे जंगलपुरी का एच.एम. सदा कहता था :- विद्यालय का अध्यक्ष हो, परिवार का अध्यक्ष हो, जिले का अध्यक्ष, मंत्रिपरिषद का अध्यक्ष हो, अध्यक्ष और अध्यक्षित मे लघु टकराव,अवश्यंभावी हैं। दोनो के दृष्टिकोण में अवश्यम्भावी अंतर होगा। अध्यक्ष का दृष्टिकोण दूरदर्शी और सामू-

हित होगा, अध्यक्ष सदा आगे की ओर सबके हित की सोचेगा। अध्यापक आज की ओर अपनी अपनी सोचेंगे। मानव संबंधो के इस तथ्य को मान्यता दिये बिना सबके मन में झूठी आशायें उग आती है। इससे टकराव और भी बढ़ जाता है। अतः एच. एम. को मानकर चलना चाहिये कि बच्चों की तरफ से शिकायतें Grievances आयेंगी, छात्रों को समझ लेना चाहिये कि एच. एम. उनकी अलग अलग आशायें पूरी नहीं करेगा।

१५. मानव संबंधो मे मनोविज्ञान का स्थान :– आजकल मानव संबंधो को मनोविज्ञानक आधार दिया जा रहा है। मानव संबंधो को हैंडल Handle करने के सिद्धात तैयार किये जा रहे हैं। परन्तु चाहे कितने सिद्धात तैयार किये जांय, उतनी घटनाओ का चाहे कितना ही सामान्यीकरण Generalization किया जाय, स्थान, स्थिति, समय, व्यक्ति को देखकर अपने विवेक Discretion का प्रयोग तो करना ही पड़गा। मनोविज्ञानिक ढग Psychological handling तो उसे अपनानी पड़ेगी। मनोवैज्ञानिक ढग की सूक्ष्मतायें और गहराइया सारी किसी सिद्धात और सामान्यीकरण के नीचे नहीं आ सकती। अध्यक्ष को खुद को ही घटनास्थल पर तय करनी पड़ेंगी। यहीं आकर आदमी आदमी का फर्क सामने आता है। यह फर्क सदा रहेगा। समस्याओ का समाधान पग पग पर और क्षण क्षण मे मनोविज्ञानक ढग मागता है। यही जीवन की विविधता है।

१६. जनता और जनता के प्रति रुख Attitude जगलपुरी का एच-एम. सिखाता था:–तीन व्यक्तियो से जनता बनती है। तीन व्यक्तियों की जनता होते ही इसके हानि लाभ शुरु हो जाते हैं। किसी बात को गुप्त रखना है तो दो से आगे नही जाना चाहिये।

इस जनता के प्रति अध्यक्ष के रुख को स्पष्ट करते हुए एच. एम. सिखाता था :—झुकने का जहां प्रश्न आता है, अध्यक्ष झुकेगा। जनता नहीं झुकेगी। खुशामद का जहां सवाल आता है, अध्यक्ष खुशामद करेगा, जनता नहीं। वह आगे कहता था — वह एच. एम. सुखी है जो मास्टरों की और छात्रों की खुशामद करता है। वह मास्टर सुखी है जो छात्रों की खुशामद करता है। वह पिता सुखी है जो पुत्रों की खुशामद करता है। वह नेता सुखी है जो अपने साथियों की सेवा करता है। पुरानी कहावत कितनी अच्छी है :—जो करेगा सेवा, पायेगा मेवा।

१७ वह एच. एम. को सिखाता था :—सेवा का सुअवसर होता है। बिना सुअवसर के सेवा करोगे तो अपने आप को हास्यास्पद Ridiculous बना लोगे! किसी चलते आदमी को कहो, ठहरो हम तुम्हारी सेवा करेंगे। वह झुंझलाकर चल देगा। मास्टर आता है :— साहब बच्चा बिमार है, घर जाता हूं। आप उस मास्टर की क्लास में खुद जायें और मा० को छोड़ दें। लड़का आता है—साहब, स्कूल नहीं है। अपने यहां की कुर्सी देदो।

१८ अध्यक्षित से बदले में क्या आशा रखें? कुछ भी नहीं! पुरानी कहावत है:—नेकी कर और कुयें में डाल। बदले में कुछ भी न मांगे! हजारों बरस पहले गीता में लिख दिया :- फल की आशा छोड़कर काम करो। यहां तक कि यह भी आशा मत करो कि आपके छात्र प्रथम श्रेणी में आवें और आप खुश हों। मास्टरों से भी यह आशा न करें कि आप बदल कर जायें और मास्टर आपको चाय दें। वह कहावत कि जो करेगा सेवा पायेगा मेवा, परोक्ष रूप से सही है। यों कहना

नकारात्मक रूप में सत्य है। आप अपयश से बच जायेंगे। मोटे रूप से यश भी मिल सकता है। जीवन सुखी और सार्थक बनेगा। राबड़ी रोटी के बाद जो चाहिये वह यश ही तो है, और नही तो अपयश से तो बचेंगे, यह क्या कम है ?

१९ एक लाभ आपको प्रत्यक्ष रूप से मिलेगा। आपकी सेवावृत्ति के कारण आपके प्रति अध्यक्षित लोग सहानुभूति का रुख रखेंगे। आपको ठेस पहुंचाने वाला काम नहीं करेंगे। तोड़फोड़ Sabotage नही करेंगे। प्रशासन में प्रशासक के प्रति सहानुभूति और समादर नहीं है तो कुछ भी नही है।

२० एच. एम. कहता था—अच्छा होना ही पर्याप्त नही है। आपके अच्छे होने की प्रसिद्धि होनी चाहिये। आपके अच्छे होने की जानकारी जनता को नहीं है तो आपके अच्छे होने का सामाजिक मूल्य नहीं है। आदमी में कोई विशेषता का सामाजिक मूल्य होना जरूरी है। आप धार्मिक हैं, ईश्वर भक्त हैं, जो भी गुण आप में है, उस गुण से समाज को कोई लाभ नहीं है तो वह गुण बेकार है। वह गुण अच्छाई नही है, बुराई है। समाज को आपके गुण का लाभ तभी हो सकता है जब समाज को आपके गुण की जानकारी हो। इमानदारी की जानकारी नही तो वह इमानदारी ही नही है। आप बड़े आदमी हैं। इस बड़प्पन से समाज की जनता को लाभ नहीं है तो वह बड़प्पन किसी भी क्षण ढह सकता है। एच. एम. दोहराया करता था :

> बड़ा भया तो क्या भया, जैसे पेड़ खजूर।
> पंथन को छाया नहीं, फल लागे अति दूर॥

२१ शाला के स्टण्डर्ड और एच० एम० के स्टण्डर्ड में ज्यादा अन्तर नही होना चाहिए। बहुत एच० एम० सरदी के मौसम में हमें

कोट और फिर कोट पर दूसरा कोट पहन कर आते हैं। कान नाक भी ढक लेते हैं। कमरे मे सिगड़ी रखते हैं। ऐसा एच० एम० छात्रों में लोक प्रिय नही हो सकता। छात्र सूती बुशर्ट में आते हैं तो एच०एम० कई कोट पहने और कान ढके अच्छा नही लगेगा।

२२. घमंडी एच० एम० की छात्र पीठ पीछे बुराई करते हैं। सही बात तो यह है कि घमंडी आदमी कहीं भी सफल नही हो सकता। छात्रों मे छात्र जैसा होकर रहना चाहिये :

> नानक नन्हा हो रहो, जैसी नन्ही दूब।
> सबै घास जल जायेगी, दूब खूब की खूब॥

• • •

१८

मास्टर और हैडमास्टर का सम्बन्ध

ये सम्बन्ध मूलतः एम्पलोयर और एम्पलोई के हैं। सरकार, विभाग का स्थानीय प्रतिनिधि एच० एम० होता है। ये सम्बन्ध अध्यक्ष और अध्यक्षित के हैं। अधिकारी और अधीनस्थ के हैं। काम लेने वाले और काम करने वाले के है। स्पष्टतया एच० एम० और मास्टरों मे कोनफ्लीक्ट की स्थिति है। अंतर्विरोध की स्थिति है। एच० एम० हमेशा दो शिकायतें करता है: मास्टर लोग काम नही करते, मास्टर लोग अनुशासन मे नही रहते। मास्टर लोग कहते है, हम ठीक हैं। यह टकराव तो रहेगा। पर चतुर एच० एम० इन टकरावों के खरोंचों को मुलायम बना सकता है। खरोंटें, खरोंचें हो जाती है और खरोंटें, खरोंचें होंगी। सामाजिक व्यवस्था चाहे जो हो। वर्ग-उप वर्ग, श्रेणी, उप-श्रेणी का चाहे जितना ही समीकरण हो जाय, अध्यक्ष और अध्यक्षित रहेंगे, प्रशासक और प्रशासित रहेंगे,

विवाद रहेंगे। चतुराई की सभी में जरूरत रहती है, पर प्रशासक मे चतुराई का होना अटाल्य है। हितो के टकराव से, अनुशासनात्मक रोक टोक से खुरदरापन Roughness आ जाता है, झरीट खरोच हो जाती हैं। इनका कोमलीकरण एच० एम० नीचे लिखे ढग से कर सकता है : Softening measures :

१. अटके हुये, लटके हुये काम को उसी दिन निपटाना जिस दिन टकराव हुआ हो,या निपटाने के लिये पहला पग उठाना। कोई भी मास्टर ऐसा नही हो सकता कि जिसके कोई न कोई झंझट सामने न हो। लड़को से विवाद, बाबू से विवाद, उच्च अधिकारी से विवाद रहता ही है।

२. घरेलू समस्या में सहायक होना : वैसे तो एच० एम० को सदा ही सहायक होना चाहिये। पर टकराव की गर्मी को, खारेपन को, ठंडा मीठा करने के लिये उस दिन विशेष पग उठाना चाहिये। किसी माइत को बुला कर माचा दिलवा देना, चपरासी को उसके घर भेज कर मकान बदलवाने मे मदद कर देना आदि आदि।

३ तनखा मे पुराने नोट मिल गये हो तो बाबू से कह कर नये दिलवा देना।

४. टकराव के कुछ मिनट या घंटे बाद फिरते फिरते मास्टर को मीठे स्वरो में बतला लेना।

५. किसी सदर्भ मे मीठा मजाक कर लेना।

६. एच एम. को कभी नही भूलना चाहिये कि जब जब ठेस लगती है तब तब क्षतिपूर्ति कारक पग *Compensatory measures* उठाने आवश्यक होते हैं।

७. मास्टर और एच० एम० में यदि कोई बात प्रतिष्ठा बिन्दु बन जाय तो एच० एम० को झुकना चाहिये। बड़े के झुकने मे

बड़े का बड़प्पन नहीं जाता है, पर छोटे के पास थोड़ा समाना होता है, वह चला जाता है। यह बात याद रखने की है।

८. एच० एम० जब कोई स्टैंड लेता है, कोई स्थिति ग्रहण करता है तो वहां से हटने की, निकलने की सूक्ष्म गली रख लेनी चाहिये। सूक्ष्म गली न रखी जा सके तो कह देना चाहिये, यह निर्णय, यह आदेश आगामी सुझावों के अधीन है। इसमें सुधार संशोधन की गुंजायश है। यह प्रयोगात्मक है। जहां तक हो सके लचकीली नीति रहे।

९. लचकीली पर दृढ़ नीति : लोकतन्त्रीय प्रणाली में एच० एम० अपने को तांबे का तार समझे। मुड़ जाना, मुड़ जाना, दो लड़ा, तीन लड़ा हो जाना पर टूटना नहीं। प्रत्येक प्रशासक को टूटे बिना मुड़ना सीखना चाहिये। An administrator must learn to bend without break.

१०. प्रबंध में मास्टरों को भागीदार बना कर तनाव कम किया जा सकता है।

टकराव और एच० एम० का आकार Stature

एच० एम० का आकार जितना ही बड़ा होगा, टकराव Conflict उतना ही कम होगा। एच० एम० का आकार और एच० एम० से कोन्फ्लीक्ट में सीधा और उल्टा अनुपात है। स्तर जितना ही ऊंचा, टकराव उतना ही नीचा। Conflict with authority is indirect and reverse proportion to its stature, तो यह आकार किन किन बातों पर निर्भर करता है ? उत्तर है

१ विद्यालय में सबसे ज्यादा मुश्किल [illegible] साबित किया है। यहां विद्या के दो अर्थ लिये जा रहे हैं। विद्यालय में [illegible] कोर्स का पूरा ज्ञान [illegible]

होना चाहिये। साइंस के एच० एम० को साइंस के चारों विषयों की जानकारी होनी चाहिये। इसी प्रकार कोमर्स के एच० एम० को चारों विषयों की जानकारी होनी चाहिये। ह्यूमैनिटीज के सब विषय ऐसे हैं जिनमें टैक्नीकैलिटी न होने से हर कोई आसानी से सीख सकता है। ह्यूमैनिटीज के अधिकांश विषय आम जानकारी के, जनरल नोलिज के हैं। भूगोल जनरल नोलिज का आधार है। जिसे भूगोल की जानकारी नहीं है, उसे जानने की आम बातें समझ में नहीं आयेंगी। नकशों का ज्ञान, समय के आगे पीछे होने का ज्ञान जलवायु का ज्ञान, धरातल का ज्ञान, दिशाओं का ज्ञान आदि न होने से एच०एम० कुछ भी नहीं जान सकता। अर्थ शास्त्र राजनीति शास्त्र, इतिहास आदि का ज्ञान भी जरूरी है। जहाँ तक भाषाओं का प्रश्न है, भाषा के लिये किताबें पढ़ने की जरूरत नहीं। बोलने और लिखने का माध्यम होने के कारण हम सारे दिन भाषाओं का प्रयोग करते हैं। इस सदर्भ में एक महत्वपूर्ण बात याद रखनी चाहिये। वह यह कि पढ़ते समय स्पैलिंग का ध्यान रखना चाहिये। कठिन स्पैलिंग वाले शब्दों पर एक क्षण रुककर उस पर आंख जमानी चाहिये। स्पैलिंग का चित्र आंखों पर जमता है। जीभ से रट कर स्पैलिंग याद नहीं किये जा सकते। सही स्पैलिंग का चित्र आंखों में जमा है, और फिर आप गलत स्पैलिंग देखते हैं तो दोनों चित्रों का टकराव होता है। अधिकांश लोगों का मत है कि सही उच्चारण तो सही स्पैलिंग, पर यह मत गलत है। उच्चारण तो सही हो ही नहीं सकता। भाषा के विद्वानों का भी नहीं। कारण यह है कि विद्वान लोग आखिर जनता में, समाज में, परिवार में रहते हैं। जनता सही उच्चारण करने की कठिनाई में दूर रहती है। परिवेश का विद्वानों पर असर पड़ता है।

और उच्चारण सब गलत करते हैं। निस्संकोच और निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि मोटे रूप से स्पैलिंग और उच्चारण का मेल नहीं है। स्पैलिंग स्थायी है, टिकाउ है। उच्चारण की प्रवृत्ति जन उच्चारण बन जाने की होती है। इस प्रवृत्ति को देख कर कुछ लोग उच्चारण के अनुसार स्पैलिंग को बदलने को कहते हैं। यह भी गलत है। स्पैलिंग के अनुसार उच्चारण नहीं हो सकता। और उच्चारण के अनुसार स्पैलिंग नहीं हो सकते। दोनों के बीच खाई हमेशा रहेगी। भाषाओं के संदर्भ में एच० एम० को स्पैलिंग की पूरी जानकारी होनी चाहिये। कोर्स के विषयों की जानकारी होना विद्या का एक अंग है।

विद्या का दूसरा अंग है जनरल नोलिज। जनरल नोलिज की परिभाषा करना कठिन है। मोटे रूप से कहा जा सकता है कि किसी विषय की नवीनतम बातें जो समाचार पत्रों में, रेडियो में आती हैं, जनरल नोलिज कहलाती है। साधारणतया राजनैतिक संस्थाओं की जानकारी, राजनैतिक उलट फेर की जानकारी जनरल नोलिज कहलाती है। जैसा कि ऊपर बताया गया है भूगोल की जानकारी के बिना जनरल नोलिज की बातें नहीं सीखी जा सकती। रीडिंग रूम में, पुस्तकालय में प्राकृतिक और राजनैतिक नक्शे टंगे रहने चाहियें। जिन वाचनालयों में नक्शे नहीं हैं, समाचार पत्र पढ़ना अधूरा है। साढ़े दस से साढ़े चार तक एच० एम० को दफ्तरों में रुक कर नहीं बैठना चाहिये। क्लासों का काम देख कर उनमें चला जाना चाहिये और पाठ्यक्रम की तथा जनरल नोलिज की बातें सिखानी चाहियें। एच० एम० लोग तड़प कर कहेंगे कि इतनी विद्या कोई नहीं सीख सकता। एच० एम० का कहना है कि सोलह बरस का पढ़ना और सोलह

बरस का पढाना, बत्तीस बरस में ये सारी विद्यायें नही सीख सकता तो एच० एम० होने के लायक नही हैं। एच० एम० विद्वान नही है तो उसका स्टेचर ऊंचा नहीं हो सकता। विद्वत्ता नहीं है तो कोनफ्लीक्ट में कमी नही है। विद्वत्ता है तो कोनफ्लीक्ट की कमी है। जगलपुरी वाला छठी से लेकर ग्यारहवी तक पांच सौ लडको की सम्मिलित क्लास को तीन पीरियड यानी दो घंटे पढाता था। अगले तीन पीरियड दसवी,ग्यारहवी को अलग अलग पढाता था। सब विषय पढाता था। दूसरे शब्दों में कहना चाहिये दस विषय पढाता था। उसने यह काम सात बरस सफलता से किया और अंतिम बरस असफल रहा। परीक्षा फल पीछे दिये है। अंतिम बरस मे फेल होने के कारण पीछे दिये हैं। सात बरस तक कही भी कोनफ्लीक्ट नही आया। अनुशासन के क्षेत्र में भी टकराव नहीं हुआ। विद्याओ की जानकारी, पढाने में लगन, ये दो चीजें टकरावो को यों फेंक देती है जैसे हिमालय से निकली नदी, बाढ मे आकर, पेड़ो को फेंक देती है।

२ दूसरी बात, नियम कायदो की जानकारी: आपकी विद्वत्ता का चमत्कारी प्रभाव बच्चो पर ही पडेगा, क्योंकि वे विद्यार्थी है, विद्या के लिये तरसते है। छात्रो पर यह पुराना पद लागू है:

> जो चाहे सो मिले, यों सुख होत शरीर।
> ज्यों प्यासे जिये को मिले, निर्मल शीतल नीर॥

परन्तु यह पद टीचर्स पर इतना लागू नही है। टीचर्स समझते है कि हम बहुत कुछ जानते है। टीचर्स अब प्यासे है, किस चीज के ? इस चीज के कि उनका एक एक पैसा जिस किसी तरह भी और जहां कही भी देय हुआ, डिउ हुआ हो, फौरन मिल जाये। सेवा सीनियोरिटी मे वे ऊंचे से ऊंचे जायें।

एरियर बिल आज ही बन जाय। तो यह सब तभी हो सकता है जब एम० एम० पुर सब विधि विधान जानता हो। यह कैसे सीखा जाय ? सीखने की विधि यह है : सबसे पहले आप चालू महीने का बिल बनायें। फिर आप एरियर बिल बनायें। तीसरी संख्या पर आप टी० ए० बिल बनायें। ये व्यक्तिगत क्लेम के बिल हैं। इतना हो जाय तो आप खरीद का बिल, एफ० वी० सी० बिल बनाओ। इस सदर्भ मे यह ध्यान रखें कि इम्प्रेस्ट बिल मे क्या सावधानी रखनी चाहिये ? सब प्रकार के बिल जब आप बनाना सीख जायें तो आप रोकड वही कैश बुक लें। यहा पर कैश बुक लिखना दूसरे नम्बर पर रखा है, पर इसका महत्व सर्वोपरि है। कैश बुक लिखने का काम यदि हैडमास्टर ने नहीं किया तो हिसाब किताब की कोई बात नही समझेगा। यहा पर शायद प्रश्न उठाया जायेगा कि हिसाब किताब की किताब, नियम कायदों की किताब कब पढे ? इसका उत्तर यह है कि किताब तब पढे जब आपके पास कोई समस्या आ खडी हो और आप समाधान के लिये तडफडा रहे हो। बिल बनाते समय नियमो की किताबें पास रखो। कैश बुक लिखते समय वह कागज सामने रखें जो आपने किसी जानकार से पूछ कर तैयार किया है। किताब पढना थियोरी है, बिल बनाना, कैश बुक लिखना, प्रैक्टिस है। सीखने का सिद्धात है : पहले प्रैक्टिस, बाद में थियोरी। थियोरी के बाद फिर प्रैक्टिस। यह क्रम फिर जीवन भर चलना है। जगलपुरीवाला कहता था : किताब मत पढ़ो। किताब तभी पढो जब थोड़ी सी प्रैक्टिस करलो। किताब पास रखो। करते जाओ और पढ़ते जाओ। पढ़ते जाओ और करते जाओ। कर्म प्रधान है, पढ़ना गौण है। Action is primary, practice is primary, Study is secondary Read a book

with a problem in mind. इसी संदर्भ में वह छात्रों से कहता था : बच्चो, पाठ पढ़ने से पहले, पाठ पर आने वाले प्रश्न पढ़ो। इस प्रकार आपके मन में एक समस्या घर कर लेगी। इसमें पाठ की बातें स्पष्ट होंगी, दिमाग पर जम जायेंगी। विद्याओं की जानकारी, कार्यालय काम की जानकारी से कोनफ्लीक्ट में कमी आयेगी। कोनफ्लीक्ट कोओपरेशन में बदल जायेगा।

३. लालच लोभ आदि स्वभाव की कमजोरी से कोनफ्लीक्ट बढ़ता है:— मास्टर और एच. एम. में यथागत टकराव तो है ही। एच. एम. लोग पद पर आते ही तृष्णा बढ़ा लेते हैं। पीछे का भूल जाते हैं और आगे का ही देखते हैं। टी ए बिलों में खींच तानकर रकम बढ़ाना, स्टोर की वस्तुयें घर ले जाना, लेट जाकर, पहले आकर निरंतरता के महान् सिद्धांतों को तोड़ना एच. मास्टरों की आम कमजोरियां हैं। अपने घर को इतना कमजोर कर लेते हैं कि जरा से कंकर से उनके घर को टेस पहुंचाई जा सकती है। मानो मास्टर कह रहा हो : एच. एम. , फूंक मारता हूं, देख कहीं उड़ न जायें। चाहे जब विद्यालय निरीक्षक दबा लेता है। निरीक्षक दबाने लगता है तो निरीक्षकालय के बाबू भी रंग बदल लेते हैं। तो स्कूल के बाबू भी निडर हो जाते हैं। ट्रेन फैलने लगती है। पग पग पर कोनफ्लीक्ट, क्षण क्षण में टकराव !

४. माडल को माडलपना नहीं छोड़ना चाहिये — यथागत टकराव हैं। रहेंगे। पर मानवता के मौलिक सिद्धांत सर्वव्यापी, सर्वोपरि हैं। ये सिद्धांत दिनचर्या से ऊंचे हैं। अंतिम निर्णय इन्हीं सिद्धांतों से होता है। परम्परा से कहावत चली आ रही है :—पूत कपूत हो सकता है, माता कुमाता नहीं हो

सकता। एच. एम. को अपना बड़प्पन छोड़कर, नीचे नहीं उतरना चाहिये। झुकने का काम मास्टर से नहीं कराना चाहिये। वर्साई १६१६ की संधि नहीं होनी चाहिए।

झुकने का काम तो एच. एम. को ही करना होगा।

मास्टर के पास सामग्री कम है, झुकने में वह सब व्यय हो जायेगी। एच. एम. के पास सामग्री ज्यादा है, झुकने से नदी के बराबर फर्क पड़ेगा।

५ इन्सपेक्टर आदि को शिकायत करने से कोलस्टीवट बढ़ता है, घटता नहीं है: मास्टर आपका अधीनस्थ कर्मचारी है। उच्च अधिकारी के पास शिकायत करने से आप मास्टर के बराबर आ जायेंगे। दोनों का अफसर वह उच्च अधिकारी होजायेगा। किसी जगह परिस्थिति काबू से बाहर हो जाये तो अपनी बदली करवालो। मास्टर की बदली भी मत लिखो।

६ भीड़ के सामने सफल भाषण देने की स्थिति में होने से एच० एम० का आकार बढ़ता है। भाषण देने के लिये, वे ही गुण होने हैं जो अच्छे मास्टर में होते हैं।

जीवन जटिल है। जीवन समस्याओं से, उलझनों से, झंझटों से भरा है। उफान सदा रहा है। ऐसी परिस्थिति में सम्बन्ध स्पष्ट और दो टूक नहीं हो सकते। सम्बन्धों की विशुद्धता पर जो विश्वास करता है, उसका दर्शन एक कल्पित है। जीवन सम्बन्धों में पूर्णता नहीं है। इसीलिये एच० एम० कहने से यद्यपि मास्टर लोग सहायक और सहयोगी कहलाते हैं उनसे वास्तविक सम्बन्ध संघर्ष और सहयोग दोनों के हैं।

७ एच० एम० की चेतावनी एच० एम० कहने से किये गये उत्थान, ध्रुवीकरण और आकार वृद्धि के उपादान किये

वस्तुगत परिस्थिति का सामना करने के लिये मनोगत उपादान है। वस्तुगत परिस्थिति बहुत भारी हो और पलड़े को बहुत नीचा करदे तो आपके मनोगत उपादान काम नहीं आयेंगे। आपकी निपुणता Skill काम नहीं देगी। आप चतुराई से मैदान छोड़दें और लाज बचालें। एच० एम० ने खुद ने अप्रलस्त १९६६ में मैदान छोड़ा था। एच० एम० के विरुद्ध उस समय बाह्य परिस्थितियां थी, जो पीछे गिनाई जा चुकी हैं। अपनी मनोगत चतुराई से किनारे की कठिनाइयां Marginal difficulties ही दूर कर सकते हैं। मनोगत शक्तियो और वस्तुगत विरोधो का संतुलन देखना बुद्धिमानी Prudence है। Softening and stature raising factors can overcome only marinal difficulties.

चपरासी गण से सम्बन्ध

चपरासियो को सफाई करना नहीं आता। उन्हें सफाई करना सिखादो। वे आपके चेले और आप उनके गुरु। कोनफ्लीक्ट अपने आप ही कम हो जायेंगे। चपरासियो के विषय में एक महत्व-पूर्ण बात है। आपने एक चपरासी को पीरियड बजाने का काम सौंपा। उस चपरासी को किसी समय आप स्कूल के बाहर किसी काम भेज देते हैं। आपके कहने से वह उस काम पर चला जाता है। पीछे से घंटे बजने का समय हो जाता है। मिनट ऊपर चले जाते हैं। एच० एम० झुंझलाता है, क्या हो गया ? यहां किसका कसूर है ? ्वा या एच० एम० का ? या दोनों का ? पाठकों ने अपने ्र लिये होंगे। किसी का भी नहीं और दोनों का है। ्टालने के लिये एच० एम० चपरासियो को एक

दृष्टांत देता था : देखो ! मैं तुम्हें दूध गर्म करने का काम सौंपता हूं। तुम पानी ले कर बैठ जाते हो, देखते रहते हो कि ज्यों ही दूध उफान पर हो, पानी का छिड़का देदोगे। इसी बीच, मैं तुम्हें दूसरा काम सौंप देता हूं कि जाओ सरपंच को बुला लाओ। तुम चल देते हो। पीछे से दूध सारा उफन जाता है। देगची खाली हो जाती है। बोलो चपरासियो ! किसका कसूर ? टैक्नीकैली तुम्हारा कसूर नहीं, क्योंकि तुम एच० एम० के हुक्म से गये। परन्तु यह भी सही है कि यह पहला काम तब तक तुम्हारा है जब तक कि तुम खुद दूसरे चपरासी को औपचारिक ढंग से यानी बोल कर पहले काम को सौंपते नहीं हो। चपरासी नहीं है तो एच० एम० को खुद को औपचारिक ढंग से यानी बोल कर यह काम सौंपो ! कहो, बोलो कि मैं जाता हूं, अब यह काम तुम्हारा है। चपरासी लोगों को याद रखना चाहिये कि इस औपचारिकता के बाद ही मुक्त हुये माने जायेंगे। एच० एम० तुम्हारे पहले काम को भूल जायेगा और दूसरा काम assignment सौंप देगा।

जीवन के दूसरे सम्बन्धों की तरह चपरासियों के, एच० एम० के संबंध संघर्ष और सहयोग दोनों के हैं।

क्लर्क और हैडमास्टर

धंधागत टकराव है। Trade Conflict है। आप उन्हें काम सिखाओ। नाना प्रकार की कैश बुक प्रविष्टियां समझाओ। बजट के कोषों में चारों कालम की प्रविष्टियां समझाओ और चारों कालमों का महत्व समझाओ। दफ्तर में पड़े हुये काम में मदद करो। वे आपके चेले और आप उनके गुरु। ट्रेड टकराव कम हो जायेंगे। यदि इसका उल्टा हुआ यानी बाबू सिखायें और आप सीखें तो ट्रेड टकराव बढ़ जायेंगे। बड़ा वह जो जाने ट्रेड की थियोरी और प्रैक्टिस

दोनों को समझे। आप पद में बड़े, बाबू एक्शन Action में बड़ा। टकराव अवश्यम्भावी है।

जीवन के दूसरे सम्बन्धों की तरह एच॰ एम॰ और क्लर्क के सम्बन्ध भी सहयोग और संघर्ष के हैं।

मास्टरों और छात्रों के सम्बन्ध

मास्टरों और छात्रों के संबंधों की वस्तुगत, मौलिक प्रकृति क्या है, इस पर पूर्ण विचार अभी तक नहीं हुआ है। परम्परागत धारणा कि ये सम्बन्ध गुरु और चेले के हैं, पिता और पुत्र के हैं, वास्तविकता से मेल नहीं खाती। पिता, पुत्र के सम्बन्ध कठोरता से निजी और व्यक्तिगत हैं। पढ़ाई का उत्पादन सार्वजनिक और विशाल पैमाने पर है। पढ़ाई प्रक्रिया के सम्बन्ध वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित हैं। ये सम्बन्ध कलापूर्ण भी हैं। इसी प्रकार गुरु चेले के सम्बन्ध भी निजी और व्यक्तिगत हैं। गुरु चेले की धारणा परम्परागत है, प्राचीनता से प्रेरणा लेने वाली भावना है जब पढ़ाई का उत्पादन इतने छोटे स्केल पर था कि उसे एक निजी और व्यक्ति उत्पादन की संज्ञा दी जा सकती है। आज दिन पढ़ाई के उत्पादन की प्रक्रिया सार्वजनिक हो जाने के कारण, गुरु चेले वाले संबंध निधिवाहर हो गये। तो फिर ये सम्बन्ध क्या हैं? मास्टर वेतन भोगी, कर्मचार है, एम्पलोई है। वेतन दाता, एम्पलोयर सरकार है। पर सरकार तो जनता की एजेंट मात्र है। सरकार जनता की मुनीम है। अन्तिम मालिक Ultimate employer जनता है। यह जनता छात्र ही है। विद्यालय नाम की फैक्टरी से पढ़ाई नाम की, विद्या नाम की, चीज का जो उत्पादन है, उस उत्पादन के लाभ का मालिक छात्र है। फैक्टरी का मालिक वह, जो लाभ का Profit का मालिक हो। सो मालिक

छात्र समुदाय है। सरकार या सरकार का प्रतिनिधि एच० एम० तो केवल मैनेजर मात्र है। एच० एम० और सरकार तो कारोबारी कार्यपाल Business executive हैं। जब हमने लाभ के, P ofit के, प्राप्त कर्त्ता को पहचान लिया, Identify कर लिया तो इस तथ्य में से उगनेवाले उपतथ्यों को स्वीकार करने में कठिनाई नहीं होनी चाहिये। उपतथ्य यह मालूम किया कि सैकण्डरी शिक्षा और यूनिवर्सिटी शिक्षा के विद्यालयों में टीचर्स के कामों का मूल्यांकन छात्र करें। उच्च प्राथमिक शिक्षा तक के टीचर्स के कामों का मूल्यांकन स्थानीय गार्जियन की समिति करे।

अब हम विकास की उस मंजिल पर पहुंच गये जहाँ प्र अ., प्रिंसीपल, वाइस चासलर आदि मैनेजर लोग टीचर्स से काम नहीं ले सकते। आज के दिन टीचर्स को टोकना झगड़ा मोल लेना, टाटियों के छाते में हाथ घालना है। चिढ़ा हुआ स्टाफ अप्रत्यक्ष रूप में अधिकारी विरोधी गतिविधियों में शामिल हो जायेगा। आज हम इतिहास के विकास के उस स्टेज पर पहुँच गये हैं जहां हमें उत्पादन के सम्बन्धों को Production relations को बदलना होगा। पढ़ाई का उत्पादन गिर रहा है, गिर चुका है। हम खड़े देख रहे हैं। खोटे छात्र खोटे मास्टर बनते हैं,खोटे मास्टर खोटे छात्र बनाते हैं। मैनेजर यानी एच० एम० रहेगा पर वह मास्टरों और छात्रों में समन्वय कायम करेगा। एच० एम०, प्रिंसीपल, वाइस चासलर आदि छात्र संसद के ही कार्य पालक होंगे।

छात्र केवल उत्पादन कार्यों में ही हिस्सा लेंगे। परीक्षा कार्यों में उनका कोई हाथ नहीं होगा। शिक्षा बोर्ड की तरह यूनिवर्सिटी केवल परीक्षा लेने वाली संस्था होगी। आज जो यूनिवर्सिटी ... और परीक्षक दोनों बना रखा है, यह प्रतिक्रियावादी है।

विकल्प योजना Alternative scheme.

यदि उत्पादन सम्बन्ध नही बदले जायं तो काम की मात्रा और काम के गुण के अनुसार भुगतान, पेमेंट करो । पढ़ाई का ठेका देदो । इस डिविजन मे इतने पास, उस डिवीजन में इतने पास, तो इतनी रकम दी जायगी । काम के अनुसार पैसे दो । आज जो समय-वेतन Time wages की प्रणाली है, वह समयानुकूल नही है। जहा तक टीचर्स का प्रश्न है संविधान का अनुच्छेद ३११ बदलना होगा । टीचर्स का Work force वर्क फोर्स आज दिन फैक्टरी, खान आदि के वर्क फोर्स मे ज्यादा शक्ति पकड़ रहा है और उत्पादन घीनता घटा कर ज्यादा राष्ट्रीय नुकसान कर रहा है।

उत्पादन सम्बन्धो के बदलने से अनुशासनहीनता आप ही खत्म हो जावेगी। न होगा बांस, न बजेगी बांसुरी। आज की स्थिति नोर्मल नही है। आज के शिक्षा अधिकारी नादान है। छात्रों के हित मे शिक्षा का उत्पादन कराने के लिये टीचर्स को टोकते है। इससे टीचर्स के घमण्ड को ठेस पहुचती है। वह और भी कम पढ़ाता है और छात्रों को अधिकारी विरोधी बनाता है। उधर छात्रों को भी टोकना पड़ जाता है तो छात्र और टीचर्स मिल जाते है। उद्देश्यों को भुला दिया जाता है और टालने योग्य तनाव खड़ा हो जाता है।

विकास के इस स्तर पर जब हमने अधिकार और ... के सम्बन्ध को छोड़ दिया है Authority-relationship ... को छोड़ दिया है तो जवाबदेयी Accountability के सिद्धान्त अपनाना होगा । उत्पादन की जवाबदेई टीचर्स पर सीधी ... चाहिये । हैडमास्टर का काम टोकाटाकी न होकर, केवल ...

विद्यालय के आंतरिक संबंधों पर

एच० एम० कहा करते थे कि ट्रंक कॉनफ्लीक्ट बराबर टकराव है और रहेंगे। चतुर हैडमास्टर इन टकरावों के तीखेपन को कम कर सकता है। पीछे दी हुई बातों पर आचरण किया जाय तो बहुत सहायता मिलेगी। फिर भी यदि एच०एम० की आशायें पूरी नहीं होती है और वह चिंतित रहने लगता है तो उसे याद रखना चाहिये :

पुत्र सदा दुख देत है, पुत्र सदा दुख रूप।
पुत्र से जो सुख चाहे, वह मूढन का भूप ॥

मास्टर, छात्र, क्लर्क, चपरासी सब उसके प्रतुत्र हैं। छोटे हैं। पुत्र समान हैं। उनका काम दुख देना है। आपका काम दुख सहना है। यों ही यह संसार चलता आया है। चलता रहेगा। आप याद रखें :

देह धरे का दंड है, सब काहू को होय।
ज्ञानी भुगते ज्ञान से, मूरख भुगते रोय ॥

एच० एम० इस संदर्भ में सिखाया करता था : हैडमास्टरों को एक सावधानी बरतनी जरूरी है : वे यह न कहें कि सब मास्टर खराब मिले हैं, सब बाबू खराब मिले हैं, चपरासी भी खराब है। यह राय अच्छी नहीं है। यह कस्बा बिगड़ा हुआ है। याद रखो संख्या बल, यानी बहुमत कभी बुरा नहीं हो सकता। बुरा व्यक्ति होता है, समूह बुरा नहीं होता, क्योंकि भले बुरे का निर्णय समूह करता है। छोटे समूह से बड़ा समूह ठीक होता है और समूह व्यक्ति से अच्छा होता है। टकरावों को कोमल बनाने के लिये कभी कभी एच० एम० नैतिक शिक्षा का सहारा भी लिया करता था। वह अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को सुनाता :

घन घवे मे ऊपजे, उगे पंखे मे पौन।
दास कबीरा यों कहे, तुझे बैठे देगा कौन॥

इस पद से प्रभावित होकर बहुत लोग परिश्रम के महत्व को समझने लगते।

रोक टोक से उत्पन्न खारापन को घटाने के लिये, एच० एम० कहता :

दुश्मन की नरमी बुरी, भली सज्जन की त्रास।
गर्मी कर बादल करे, जब बरसन की आस॥

हैडमास्टर के कर्तव्यो पर एच०एम० एक ही बात पर बल देता था : एच० एम० का पहला काम है कि विद्यालय की जलवायु ठीक रखना। भूमध्य रेखा वाला जलवायु नहीं होना चाहिये, जहा प्रतिदिन शाम के समय मेह बरस जाय, और इतना बरस जाये कि सब कुछ बिगड़ जाय। जहां बारहों महीने गर्मी पड़े, और इतनी गर्मी पड़े कि मानव अपना शारीरिक और मानसिक विकास ही नही कर सके। एच० एम० इसी संदर्भ मे आगे कहता : ध्रुव प्रदेशीय जलवायु नहीं होनी चाहिये जहा ठंड इतनी कि बर्फ पिघलती ही नही, रात हो जाय तो महीनों रात ही बनी रहे और दिन हो जाय तो महीनो दिन ही बना रहे। जलवायु समशीतोष्ण होनी चाहिये और रात दिन मे चार घंटे से ज्यादा फर्क नही होना चाहिये। स्कूल का जलवायु ठीक है तो सब लोग मेहनत अपने आप ही करेंगे और निरंतरता के सिद्धांत को अपने आप ही निभायेंगे। टोका टाकी की जरूरत नहीं पड़ेगी। जगलपुरीवाले के विषय मे मास्टर कहते थे : पहला सुख नीरोगी काया दूजा सुख घर मे हो माया, तीजा सुख एच०एम० हो मन भाया।

विद्यालय के आंतरिक संबंधों पर सारांश के रूप में कहा जा सकता है, टकरावो के कारण वस्तुगत Objective हैं; परन्तु इन

स्वभावों के कोमलीकरण की विविधा मनोगत subjective है। इसके का मतलब Organisation, प्रबन्ध, व्यवहार, हेडों की क्षतिपूर्ति Compensation, के मार्ग निकालना आदि में कुछ ने हर्ष की चतुराई, कौशलता, skill चाहिये। एम० एम० कहा करता था.

It requires a high order of skill to mitigate the rigours and roughness of conflicts based on objective factors with the means based on subjective factors एम० एम० इस बात को बार बार दोहराते थे कि प्रधान मनोबंधों से विशुद्धता प्यूरिटी नहीं आ सकती। मधर्ष और सहयोग दोनों रूपों का सहारा लेना पड़ेगा। दोनों रूपों में कौन से रूप की मात्रा अधिक रहती है, यह एम० एम० की चतुराई skill पर निर्भर करता है। यदि हैडमास्टर चतुर है, न्याय प्रिय है, अच्छा है तो सहयोग की भावना प्रधान और संघर्ष की भावना गौण होगी। साथ ही हैडमास्टर एक चेतावनी भी देते थे: वस्तुगत परिस्थितियों का पलड़ा जब बहुत भारी हो कर एक तरफ बहुत झुक जाता है तो मनोगत उपादान कोई काम नहीं आते। उल्टा होगा, यह कि आप जितनी ही चतुराई बरतोगे, संघर्ष करोगे, बिगाड़ उतना ही ज्यादा होगा। चतुराई इसी में है कि चतुराई पूर्वक पीछे हट जाओ, मैदान छोड़ दो। जबलपुरी वाले ने अगस्त १९६६ में इसी प्रकार मैदान छोड़ा था। विपरीत परिस्थितियां गिनती में बारह थी जिनको पीछे गिनाया गया है।

• •

१६

विद्यालय के बाहरी सम्बन्ध

निदेशक से

बाहरी सम्बन्ध चार कार्यालयों से हैं:– विद्यालय निरीक्षक, उप निदेशक, निदेशक, और शिक्षा बोर्ड। निदेशक से हैडमास्टर के सम्बन्ध अधिकारी और अधीनस्थ के सम्बन्ध हैं। अधिकारी और अधीनस्थ के सम्बन्ध सदा टकराव और अलगाव के होते हैं। इस अलगाव और टकराव की तीव्रता और तीक्ष्णता अधिकारी की चतुराई, न्याय प्रियता और अच्छाई पर निर्भर करती है। अधिकारी जितना ही चतुर, न्यायप्रिय और अच्छा होगा, अलगाव और टकराव की तीव्रता—तीक्ष्णता उतनी ही कम हो जायेगी। इन तीन गुणों की मात्रा जितनी ही कम होगी, टकराव और अलगाव की मात्रा उतनी ही बढ़ जायेगी।

The quantum and sharpness of conflict and exclusiveness between the anthority and the subordinates is in direct proportion to the quantum of skilfulness, fair play and goodness on the part of authority.

निदेशक से टकराव के क्षेत्र Areas of conflict. निदेशक के, इस सदर्भ में, चार काम हैं: स्थानान्तर और नियुक्ति द्वारा स्टाफ की सप्लाई करना, बजट अनुदानों का बटवारा, हैडमास्टर की बदली करना और हैडमास्टर पर अनुशासन की कारवाई करना। ठीक इन्ही चार क्षेत्रो में हैडमास्टर के निदेशक से टकराव है।

१. स्टाफ की सप्लाई

सप्लाई के क्षेत्र मे एच एम. का निदेशक से सीधा टकराव है। इस क्षेत्र मे देहाती एच एम का तो सीधा, टकराव है ही। शहरी एच. एम. को भी वह निहाल नही करता। शहरी सप्लाई के प्रति निदेशक उदासीन है Indifferent है। देहाती सप्लाई के प्रति वह विरोध की भावना रखता है। इस क्षेत्र मे दोनों प्रकार के एच. मास्टरों की शिकायत है। शहरी हैडमास्टरो को शिकायत है कि सप्लाई समय पर नहीं होती, जरूरत है सस्कृत के मास्टरो की और आ जाते हैं महाशय जनरलिस्ट। शहरी एच एम की शिकायत है कि टाइमटेबल साल भर बदलता रहता है। हर रोज बदलता रहता है। निरन्तरता और स्थायित्व का अभाव रहता है। देहाती एच. एम- कहता है सप्लाई होती ही नही और होती है तो नई नियुक्तियों से और प्रोमोशन से होती है और टाइम टेबल भी स्याही ही नहीं सूखती कि उनकी जगह अधिक नये आ जाते हैं।

नवीनता की मात्रा बढ़ती बढ़ती अति नवीनता मे बदल जाती है और रिक्तता की मात्रा बढ़ती-बढ़ती माइनस मे, निगेटिवीटी मे आ जाती है।

वास्तविकता की इस स्थिति से कुछ साराश निकलते हैं। पहला, बदलियां स्कूल के हित मे यानी एच. एम. के हित मे नही की जाती, निदेशक के निजी हित मे की जाती हैं। नेताओं को, मित्रो और रिस्तेदारियो को उपकृत करने, अपने कार्यालय के बाबू और चपरासियो को राजी करने आदि के लिये बदलियां की जाती हैं। ऐसा भी होता है कि मास्टर खुद ही पहुँच जाता है और सयोगवश निदेशक करुण कथा से पिघल जाता है। यहां पर एक महत्वपूर्ण-प्रश्न उठता है कि स्कूल की चिंता निदेशक को क्यों नहीं है? एच. एम. को क्यों है?

क्यों का उत्तर यह है:—

१. एच. एम. से छात्र रोज स्टाफ मांगते हैं।

२. स्थानीय नेता और माइत एच. एम. को टोकते हैं।

३. छात्र एक पीरियड भी खाली नही बैठ सकते है तो कल्पना की जा सकती है कि हफ्तो और महीनो तक खाली छात्र एच. एम.की छाती पर कितना मूंग दलते है।

४. मास्टर न होने से छात्र समय पर स्कूल नहीं आयेंगे

५. प्रार्थना स्थल पर पूरे छात्र नहीं आयेगे

६ प्रार्थना स्थल पर छात्रो को लाने वाला नहीं होगा।

७. प्रार्थना स्थल पर उन्हें ठीक ढंग से खडा करने वाला नही होगा

८. हाजरी लेने वाला कोई नही होगा

९. हाजरी जोड़ने और फाइन लेने वाला, कोई नही होगा

१० जो हैडमास्टर पढ़ाई नहीं दे सकता, वह आज्ञाकारिता नहीं ले सकता। जो देता नहीं, वह लेता नहीं।

११. गुमटे की कमजोरी के हाथों में बहुयें जब एक बार मर्द गिर जाय जेगी है, स्वच्छन्द विचरण कर लेती है, तो गुमटे के सम्पन्न दिनों में भी वे सही लाइन पर नहीं आयेंगी।

एच. एम. की आंखों के सामने, उनके देखते स्कूल का भट्ठा बैठता जाता है, स्कूल डूबता जाता है। दूर दूर तक घर घर में चर्चा शुरु हो जाती है। दूसरे सारे स्थानीय कार्यालयों में चर्चा होने लगती है। हर जगह पूछते हैं एच. एम. कौन है ? एच. एम. कहीं जाने लायक नहीं, मुंह दिखाने लायक नहीं रह जाता। स्कूल डूबा, एच. एम. डूबा ! एच. एम. की स्कूल में बेइज्जती अन्य कार्यालयों में बेइज्जती, स्थानीय नागरिकों में बेइज्जती ! निदेशक का कहीं भी नाम नहीं। कोई पद से जाने नहीं, नाम से जाने नहीं।

और फिर परीक्षाफल

जून का महीना आता है। स्थानीय-जनता में और स्थानीय कार्यालयों में चर्चा रहती है और प्रश्न उठते हैं हैडमास्टर कौन है ? और तो और, निदेशक खुद जिक्र आने पर सवाल कर बैठता है एच० एम० कौन है ? शिक्षा बोर्ड में भी यह हवा पहुँचती है। सर्वत्र एच० एम० की इमेज-छाप खराब हो जाती है। आकार स्टेचर घट जाता है। और निदेशक ? कोई पोलमा मिलता है ? कोई उस पर कीचड़ उछालता है ? नहीं बिलकुल नहीं। क्यों नहीं ? क्यों नहीं का जवाब यहां नहीं दिया जायेगा। यहां तो इतना ही कहा जायेगा हैडमास्टर और निदेशक के सम्बन्ध हित विरोध के सम्बन्ध हैं हैडमास्टर का अहित निदेशक का अहित नहीं। स्कूल का अहित

निदेशक का अहित नही। बल्कि उल्टा है। यदि वह स्कूल के हित की करेगा तो उसका अहित हो जायगा। उसका अहित कैसे हो जायेगा ? यह यहां नही बताया जायेगा।

बजट अनुदान का बटवारा

छात्र और उनके माइत कहते हैं, हैडमास्टर, तेरे स्कूल में फरनीचर नही, तेरी लैबोटरी में सामान नही। ला स्टूल दे, मेज दे, कुर्सी दे। यह स्टूल टूट गया, दूसरा दे। सारे दिन हैडमास्टर परेशान रहता है। लिखता है, कोई उत्तर नही। उधर कुछ स्कूल भरे पड़े हैं। बस यहां हैडमास्टर कोसता है निदेशक को। निदेशक जिन्हें ईलिट समझता है, हैडमास्टर शिरोमणि समझता है, उन्हें सफल बनाने हेतु, वह अतिरिक्त बजट ग्रांट देता है।

हैडमास्टर अपनी बदली चाहता है, नही होती है, नही चाहता है, हो जाती है। यह तीसरा टकराव है।

अभाव के स्कूल में भून हो जायेगी, तो उस अभ वग्रस्त हैडमास्टर पर अनुशासन कारवाई। यह चौथा टकराव है।

हैडमास्टर शिरोमणि–Elite Headmaster

ऊपर गिनाये गये चार टकराव तो हैडमास्टर और निदेशक के बीच में ही, एक बड़ा अनोखा टकराव भी है। कुछ ईलिट elite हैडमास्टरों के नाम उसके दिमाग में होते हैं। इन ईलिट हैडमास्टरों को ईलिट स्कूलों में प्रतिष्ठापित Installed कर दिया जाता है। इस औपचारिक प्रतिष्ठान के बाद इन हैडमास्टर शिरोमणि के सब

मार्ग खुल जाते हैं। सब प्रकार के सेमिनार, कन्वेन्शन, वर्क शॉप, गुणक समीक्षा आदि में इन्हीं को शामिल किया जाता है। कोई भी अपने पट्रोनेज पावर Patronage powers को इसी क्षेत्र में बरतता है। हैडमास्टरों और ईलिट हैडमास्टरों के इस कृत्रिम अंतर ने भी निदेशक और हैडमास्टरों के बीच एक टकराव खड़ा कर दिया है: ईलिट स्कूल वस्तुगत है। ईलिट हैडमास्टर मनोगत है। यह वर्गन भी जिसकी बहुत तनाव-खिंचाव पैदा करती है। इन ईलिट हैडमास्टरों को जंगलपुरी भेज कर परखो तो सही। मालूम हो जायेगा, गधा कौन है, घोड़ा कौन है ? इन ईलिट हैडमास्टरों को भेजो, जंगलपुरी ! और या तो स्टाफ दो मत और दो तो वह दो, जो जंगलपुरी वाले को १९६८-६९ में दिया था। छठी का दूध याद आजायेगा।

यहां पर वर्तमान समाज के एक निकृष्ट पक्ष को हम खोजते हैं Identify करते हैं। वह निकृष्ट रूप यह है कि मनोगत उपादानों से अनुकूल वस्तुगत परिस्थिति पैदा की जा सकती है। निदेशक की सनक के अनुकूल, निदेशक के हित के अनुकूल, एक हैडमास्टर फिट बैठता है। उसे ईलिट स्कूल दे दिया जाता है जो साज सामान से और ईलिट मास्टरों से भरपूर होता है। वहां के मास्टर, क्लर्क आदि सब हैडमास्टर की खुशामद करते हैं कि यहां से जंगलपुरी जाना न पड़ जाय। यहां से कहीं बदली न हो जाये।

शहरों में आज्ञाकारी, संतुष्ट स्टाफ, अच्छा स्कूल भवन, पूरा फरनीचर, फिर इनाम पाने के लिये अच्छी कहानी क्यों नहीं बनायी जा सके ?

राजस्थान में ७० परसेंट स्कूल उपेक्षित हैं, वहां एच० एम० उपेक्षित, मास्टर उपेक्षित। मानो वह दुनियां है ही नहीं। मानो वह १४९२ से पहले की अमरीका है, १७७० से पहले की आस्ट्रेलिया,

न्यूजीलैंड हों। राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय स्तरीय इनामो के लिये शहरों की दस परसेंट स्कूल हैं। पिछली सालों की सूचियो को एक न्यायप्रिय व्यक्ति ज्यो उलटता जायेगा, गुस्सा बढ़ता जायेगा, गुस्सा बढ़ता जायेगा कि यह क्या अन्याय है ? दो ठोस बातें सामने आती हैं। आपने खराब स्टाफ की किसी कम्पूटर Computer से छटाई करके उसे गावों मे भेज दिया। या आप जान बूझ कर बेईमानी से उनको उपेक्षा करते है। या आप आखों के और हिये के अधे हैं जिन्हें कुछ सूझता नहीं। या आप कुछ हैडमास्टरो से और मास्टरों से किन्हीं हित-सूत्रों से बधे हो ! जंगलपुरी वाला बार बार चिल्लाता हे अधिकारी बता, इन मे कौनसी बात सही है ? वह आगे यह भी कहता है निदेशकजी, बताओ, आपने अपने मनोगत उपायों से, इन चद हैडमास्टरों की अनुकूल वस्तुगत परिस्थिति क्यो बनाई जिससे इन चद शहरी हैडमास्टरों को इनाम मिल गया है, अधिकारी बताओ, आपने अपने मनोगत उपायो से जंगलपुरीवाले की वस्तुगत स्थिति क्यो बिगाड़ी जिससे उसकी दुर्गति हुई। इनाम दूर रहा, अनुशासन की कारवाई शुरु हुई, गोपनीय प्रतिवेदन खराब हुआ। जगलपुरीवाला आगे कहता : मास्टरो, हैडमास्टरों को इनाम देने की योजना १९५८ में चालू हुई थी। १९७१ तक १,२०२ मास्टरों, एच. एम. को अवार्ड मिल गया। इसी प्रकार राज्य स्तर पर इतने ही लोगो को इनाम मिल गया। गांवों मे सैकण्डरी हायर सैकण्डरी के ७० परसेंट स्कूल हैं। अवार्ड इनाम किसी को भी नही। गांवों और शहरों का यह मुख्य विभाजन ध्यान मे नहीं आया और वहां के स्टाफ को शूद्र मान कर टाल दिया !

शिक्षा बोर्ड से संबध

बोर्ड के पेट्रोनेज पावर्स बहुत हैं। रोम के वैटिकन के बाद साधन सम्पन्नता में अजमेर के शिक्षा बोर्ड का नम्बर है, मास्टरो,

हैडमास्टरों, की आम धारणा है। उस धन को खर्चने के नये नये तरीके निकाले जाते हैं। कहावत है बिना निमित्त, बिना बहाने तो भगवान भी नही देता। प्रति समय बदलने वाले तरीकों के साथ साथ कुछ बंधे तरीके भी हैं जो ईलिट हैडमास्टरों, हैडमास्टर शिरोमणि के लिये स्थायी हैं। कुछ ये हैं :

१. आठ हैडमास्टर हर तीन बरस बाद बोर्ड के सदस्य बनते हैं। ईलिट हैडमास्टर स्थायी सदस्य हैं। दूसरी पांत के शहरी हैडमास्टर कुछ समय का शेंप दे कर, लौटते हैं।
२. परीक्षा समिति के सदस्यों में तीन मास्टर होते हैं।
३. वित्त समिति में दो हैडमास्टर।
४. मूल्यांकन समिति में दो हैडमास्टर, दो शिक्षा विशेषज्ञ, मिलाकर चार हैं।
५. मान्यता समिति में तीन हैडमास्टर।
६. पाठ्य क्रम समितियों के १५६ सदस्य हैं। विभिन्न विषयों की २६ समितियां हैं। एक समिति में ६ सदस्य होते हैं। इनमें अधिकांश सदस्य हैडमास्टर ही हैं।
७. परीक्षा केंद्र के अधीक्षक ३५० हैं। प्रैक्टीकल परीक्षायें जनवरी में शुरु होती हैं। फिर मार्च में मुख्य परीक्षायें हैं अगस्त में पूरक परीक्षायें होती हैं। सितम्बर, अक्तूबर में प्राइवेट छात्रों के फोर्म भरे जाते हैं जिनमें एक रुपया प्रति छात्र हैडमास्टर को मिलता है।
८. परीक्षक, सहपरीक्षक, टेबुलेटर आदि कई हजार। इनमें परीक्षक और टेबुलेटर हमेशा शहरी होते हैं।
९. सुपरवाइजर लगभग २५० होते हैं।

बोर्ड में कॉन्सन्ट्रेट होने के तीन बड़े कारण हैं। ऊपर बताई गई दो प्रकार की पेट्रोनेज शक्ति Patronage powers

बरतते समय बोर्ड पूरा भेदभाव करता है। जगलपुरी के हैडमास्टर तो जैसे हैं ही नहीं। निदेशक उन्हें स्थानीय शूद्र बनाता है और बोर्ड को टालने का बहाना मिल जाता है। बोर्ड मर्द्धाधिकारी संस्था है, इसलिये अध्यक्ष और मध्यक्षित के टकराव भी है।

देहाती स्टाफ और बोर्ड के बीच मुख्य खिंचाव है। निदेशक की तरह बोर्ड भी नगरवादी है। देहाती स्टाफ कहता है कि ज्यादा से ज्यादा और जल्दी से जल्दी बदलियां हों। नगर स्टाफ चाहता है, कम से कम और देर से देर मे बदली हो। इस हित विरोध मे निदेशक और बोर्ड किसका साथ देते है ? यह प्रश्न तो इन दोनों संस्थाओं से खुद से ही पूछो। और फिर उत्सुकता से बेट करो कि ये क्या जवाब देते हैं। हो सकता है ये अपनी आदत के कारण जवाब न दें। ऐसी दशा मे आप इनका रेकर्ड देखलें। निदेशक का रेकर्ड तो भरा पड़ा है। बोर्ड का रेकर्ड भी कम नहीं है। नगर के मास्टर बोर्ड को लिखते रहते हैं कि हम आपकी सुन्दर योजनाओं को क्या निभायें, स्थानान्तर का भय बना ही रहता है, योजना निभाने में मन नहीं लगता। ऐसे ही एक प्रश्न के उत्तर मे बोर्ड ने अपनी अनमोल पत्रिका के अक्टूबर १९६८ के अंक म पृष्ठ ८९ में उत्तर दिया कि विभाग इस बात को समझता है कि मन नहीं लगता। बोर्ड ने सुझाव दिया कि कम से कम तीन साल तक बदली नहीं होनी चाहिए। इधर ग्रामीण मास्टर-हैडमास्टर रोते हैं और कहते हैं कि हमारा किसी काम म जी नहीं लगता। हमारी बदली आज ही हो जाये। आज नहीं होती है तो हमको बताया जाय, कब होगी ? इसका जवाब बड़ा मजेदार दिया जाता है . तुम्हारी बदली शहर म तब होगी जब जगह खाली हो जायगी। बोर्ड इस जवाब से सहमत है। इन लोगों का यह जवाब राष्ट्र संघ मे भेजने लायक है, ११२ राष्ट्रों के सामने आने लायक है। बोर्ड क्या है, विरोधाभासों का भवन है। Board is a

meet of mediocres. सचिव लगा रहता है निरीक्षकों और हैडमास्टरों के वेतन मान बढ़वाने मे। अभी १६७० मे उसने निरीक्षकों और हैडमास्टरो के ग्रेड बढ़वा कर समाज को करोडों का नुकसान कर दिया। करोडों के इस अपव्यय के लिये किसी ने मादोलन नहीं किया। क्यो ? किया था क्या ?

विश्व इतिहास में एक बेजोड मिसाल है जहां करोड़ों का उद्देश्यहीन अपव्यय हुआ हो। निरीक्षको को ऊंचा कर दिया, उनको ग्रेड प्रिंसीपल को देदी और प्रिंसीपल के नीचे एक हाई स्कूल का ग्रेड का एच० एम० कर दिया। सरकार के सामने योजना रखी गई तो बोर्ड के सचिव से पूछा गया कि इससे लाभ क्या होगा। सचिव ने जवाब दिया कि इससे शिक्षा का स्तर ऊंचा होगा। पढ़ाई अच्छी होगी, अनुशासनहीनता कम होगी। सरकार ने यह दलील सही मानली और करोड़ों की फिजूलखर्ची का श्री गणेश हुआ। शिक्षा जगत और यूनेस्को अब इस योजना के फलो की उत्साह से बाट देख रहे हैं। अपनी सलू की जरूरत पूरी करने के लिये दूसरे की भैंस मार डालने वाली मिसाल यह कैसी फिट बैठती है ! बोर्ड के सचिव को अपनी ग्रेड ऊंची करने के लिय यह सब जाल रचना था।

बोर्ड का चेयरमैन उतार चढ़ा होता है। आंखों की ज्योति कमजोर हो जाती है। अजमेर की ट्यूब लाइट के परे कम दीखता है। और आगे बढ़ा तो जयपुर, जोधपुर, बीकानेर की ट्यूब लाइट ! बस ट्यूब लाइट से परे नहीं। गावों के अंधकार मे दीखने का प्रश्न ही कहां ? गावों के छात्रों की पढ़ाई के लिये स्टाफ है कि नहीं, उपयुक्त स्टाफ है कि नहीं। गावों मे या तो स्टाफ जाता ही नहीं, जाता है तो शिकायती स्टाफ। नया स्टाफ, घटिया स्टाफ, अधूरा स्टाफ। इन अभावों मे अगर एच० एम० की चूक हो जाय तो करते हैं अनुशासन की कारवाई। निलम्बन से शिकायत ! परीक्षकत्व के अधिकार छीनना ! सब तरह के अधिकार छीनना !

विद्यालयी ग्राम सम्बन्धों पर टिप्पणी

- निदेशक, उपनिदेशक, निरीक्षक और बोर्ड, ये चारो अधिकारी एच० एम० विरोधी होते हैं । पत्रो की परिपालना, शिक्षा स्कीमों की परिपालना तथा अन्य प्रशासनिक बातों मे इन चारों अधिकारियों का आमना सामना एच० एम० से ही होता है । एच० एम० के लिये ये चारो अधिकारी उसके अध्यक्ष हैं, प्रशासक हैं । एच० एम० इन चारो के सामने *अध्यक्षित, प्रशासित है । ये चारो अधिकारी कहते रहते हैं* कि एच० एम० लोग उनके आदेशो आदि का समय पर और पूरे ढंग से पालन नहीं करते है ।

- निदेशक अकेला निरीक्षक विरोधी और उपनिदेशक विरोधी होता है। निदेशक का आमना सामना सीधा २६ निरीक्षकों से होता है। निदेशक झुंझलाता है कि निरीक्षक लोग समय पर आदेशो की पालना नहीं करते हैं। रिमाइंडर पर रिमाइंडर जाते है। इन्ही कारणों से निदेशक का उपनिदेशक से आमना सामना है, पर हल्का है। उपनिदेशक का निरीक्षक से हल्का सा विरोध है। हल्का इसलिये कि काम कम पड़ता है। कम काम पड़ना, कम विरोध, ज्यादा काम पड़ना ज्यादा विरोध।

- निदेशक, उप निदेशक, निरीक्षक आदि अधिकारी मास्टर-पक्षी होते हैं। अध्यापक पक्षी इसलिये कि इन अधिकारियो का मास्टरो से सीधा आमना सामना नहीं है सीधी टक्कर नहीं है। अध्यापक लोग, निदेशक, निरीक्षक आदि के लिये, अमूर्त, सामूहिक जनता मात्र हैं। अध्यापकों का अमूर्त समूह इन अधिकारियों के लिये जनता जनार्दन है जिसे अच्छी तरह परोटने के ढंग हेडमास्टरों को आना चाहिये। ऐसा उपदेश अधिकारी

शोर करते रहते हैं। इस मद्‌द को परोटने के लिये सहनशील ढंग अपनाने का उपदेश दिया जाता है।

४. अध्यापकों की इस एक साल जनता की सीधी टक्कर एच० एम० से ही है। इसलिये वह सदा मास्टर विरोधी होता है।

५. एच० एम० और मास्टर के विवाद में निरीक्षक आदि अध्यापकानुकूल ढंग अपनाते हैं। अध्यापक की तरफ झुकते हैं। यह आम धारणा, कि अफसर सदा अफसर का ही पक्ष लेता है सिद्धांत रूप में गलत है। साफ दिखाऊ कह दिया जाता है कि एच० एम० के दफ्तर की गरिमा रखनी चाहिये। यह भी कहा जायेगा कि एच० एम० सफल नहीं है। मास्टरों को परोटना नहीं जानता।

६. बाहरी अधिकारी झुंझला कर कहता है कि विवादों का निपटारा स्थानीय ढंग से होना चाहिये, यानी स्कूल में ही तय हो जाना चाहिये।

७. इन परिस्थितियों में जगन्पुरी वाले एच० एम० का उपदेश है कि स्कूल के विवाद बाहर नहीं जाने चाहिये। अपनी चतुराई से कुछ अपनी स्थिति मजबूत करके और मास्टर की स्थिति कमजोर करके उससे राजीपा करलेना चाहिये। थोड़ा सचेष्ट हो कर अन्य विरोधियों को राजी करके, अपनी कमजोरियां को थोड़ी देर के लिये रोक कर, विवादी मास्टर से ले दे कर राजीपा कर लेना चाहिये।

८. काम से आने वालों को रूखा, सूखा नकारात्मक उत्तर कभी मत दो। यह नहीं हो सकता, इसमें कोई गुंजायश नहीं है, मेरे सिद्धांत विरुद्ध है, ऐसे वाक्य कभी मत बोलो। याद रखो, हर एक समस्या का समाधान होता है, आप नहीं सुलझायेंगे

तो कोई दूसरा सुलझायेगा। जहां चाह, वहां राह। रात दिन देखा जाता है कि नियमों की भाषा को तोड़ मरोड़ कर अनियमित बना लिया जाता है। मास्टरों, क्लर्कों, छात्र संसद आदि से लिखित लेकर, उन पर जिम्मेवारी डाल कर, एच० एम० लोग अपना बचाव करके, बड़ी बड़ी समस्यायें सुलझा लेते हैं। जंगलपुरी की गृहणियां छाछ घालने के संदर्भ में ठीक कहती थीं कि जबान से मत नटो, हाथ से नट सकते हो। टोपा, दो टोपा छाछ घालदो, या पानी मिला कर घाल दो। खाली मत निकालो। हाथ से इनकार कर सकते हो, जबान से नहीं। हाथ का उत्तर दो, मुंह का उत्तर नहीं। ऐसा भी मत कहो कि समय नहीं है। किसी भी महापुरुष ने नहीं कहा कि समय नहीं है। समय के अभाव में ही समय मिलता है।

अधीनस्थ कर्मचारियों से निपटने का ढंग

ऊपरवालों से और नीचे वालों से दोनों से एच० एम० का टकराव है। अधीनस्थ कर्मचारियों से सम्बन्धों को मधुर बनाने के लिये नीचे लिखी हिदायतों पर अमल किया जाय। अधीनस्थ कर्मचारी से हिसाब साफ रखो। एक पैसा आपसे रह गया है तो दूसरे दिन वह पैसा दे दो। पन्द्रह पैसे मार्टविल के खर्च करके एक पैसा पहुँचाओ। कभी मत सोचो कि एक पैसा है। क्या है ? एक पैसा है। परन्तु आप साग खरीदते समय एक पैसे का ख्याल नहीं रखते हैं ? आप का पैसा किसी से रह गया तो आप कितने दिन में उस पैसे को भूलते हैं। शायद कभी नहीं भूलते। एक पैसा बनाने का खर्च दस पैसे है। पर भारत सरकार इसलिये बनाती है कि नागरिकों के

सम्बन्ध सुन्दर और मधुर रहें। सुन्दर और मधुर सम्बन्ध चाहते हो तो यह पैसा तुरन्त पहुँचाओ।

२ अधीनस्थ कर्मचारी के घर जीमने कभी मत जाओ। होस्ट के पूरे परिवार का सारा दिन आपके भोजन पर लग जायेगा। काम चोटी होने के साथ ही उसका खर्च भी बहुत हो जायेगा। हाँ, आम जीमन हो तो चार मेहमानों के साथ जा सकते हो। ब्याह शादि उत्सवों पर जाने में कोई हर्ज नहीं है। जाना ही चाहिये।

४. एच० एम०, साथी एच० एमों० को, समय समय पर सिखाता: याद रखो अधीनस्थ लोग कठोरता और कोमलता का मिश्रण पसन्द करते हैं। पूर कोमलता बरतोगे तो कुरसी से हाथ धो बैठोगे। पूर कठोरता बरतोगे तो जान से हाथ धो बैठोगे। स्टेलिन ने जनवरी १९२४ से मार्च १९५३ तक तीस बरस पिछड़े इस देश को अमरीका यानी यू० एस० ए० के बराबर सा खड़ा किया। योरप विजेता हिटलर को हराया। मरने बाद उसे कबर से उखाड़ दिया। मारो और पुचकारो। स्टेलि पुचकारना भूल गया।

अधिकारियों से निपटने का ढंग

ऊपर स्पष्ट किया गया है एच० एम० का उसके अफसरों से टकराव है। दूसरे सम्बन्धों की तरह यह भी सहयोग और संघर्ष का सम्बन्ध है। इन सम्बन्धों को अधिक मधुर बनाने के लिये नीचे दी हिदायतों पर अमल करना चाहिये।

१. बात चीत करते समय अफसर की बात को कभी मत काटो हमेशा याद रखो हर एक बात के कम से कम दो पक्ष हो

होते ही हैं। आप किसी की बात को काटोगे तो कोई नई बात नहीं कहोगे। आप वाली बात भी अफसर जानता है। पर उस पक्ष विशेष पर वह अपनी बात पर ही बल देता है। आपकी सुन वह चिढ़ जायेगा और अधिक जोर से अपनी बात के, अपने पक्ष के चिपक जायेगा। अफसर की बात को स्वीकार करने में यदि आपकी कोई हानि होती हो तो कह सकते हो हां साहब, आपकी बात सही है। पर इसका एक छोटा सा दूसरा पक्ष भी है। आदि आदि

२. पत्र व्यवहार से भी अफसर का विरोध करके, आप कोई दृढ़ स्थिति न अपनावें। अपनी स्थिति स्पष्ट करके अफसर की बात मान लो।

३. बातचीत से यदि कोई विवाद छिड़ जाय तो अफसर को जीत जाने दो। आप एक बिन्दु खोकर, २१ बिन्दु प्राप्त कर लेंगे। उधर बहस बाजी में एक बिन्दु जीत कर आप २१ बिन्दु खो देंगे।

४. अफसर से मिलें तो पहले आप अफसर के हित की बातें करें। बाद में अपनी बात कहें।

५. अफसर से बातें करते समय या किसी इन्टरव्यू में बोलते समय बोली की वोल्यूम और स्पीड पर पूरा कन्ट्रोल होना चाहिये। स्वर के ऊंचे होने से और गति तेज होने से ये नुकसान होते हैं:—

१. ऊंचे स्वर से इनसान अपने आप मे खो जाता है, और परिवेश को भूल जाता है। उसे यह ध्यान नहीं रहता कि उसके बोलने की क्या प्रतिक्रिया हो रही है।

२. ऊंचे स्वर में रस न होने से श्रोताओं का ध्यान स्पीकर से हट जाता है।

३. ऊंचे स्वर से थकावट आ जाती है और थकावट में बोलने में प्रभावकारिता चली जाती है।

४. ऊंची आवाज से बोलने वाला किसी महत्वपूर्ण बिंदु पर बल नहीं दे सकता। ऊंची आवाज मे बोलने से विवरण में सब बिंदु एकसे महत्व के ही लगेंगे।

५. बात नीचे स्वर में शुरु होनी चाहिये। महत्वपूर्ण बिंदु पर आवाज ऊंची की जा सकती है।

६ जहां तक गति-स्पीड का प्रश्न है, न तेज हो, और न धीमी हो। बीच की होनी चाहिये।

७. यह आश्चर्य की बात है कि मास्टर को ही तो नीचे स्वर की जरूरत पड़ती है और मास्टर ही ऊंचे स्वर में बोलता है। दूसरे लोग ऊंचे स्वर मे नहीं बोलते। शायद इसलिये कि दूसरों की बातें महत्वपूर्ण और गोपनीय हैं। मास्टर की बात में कोई गोपनीयता नहीं होती और उसमे कोई महत्व भी नहीं होता। पुस्तक में लिखी बात को मास्टर दोहराता मात्र है।

८ मास्टर और एन० एम० ने यदि नीचे स्वर मे बोलना नहीं सीखा है तो उसने पढ़ाने, समझाने और बोलने का पहला तरीका ही नहीं सीखा है। वह पढ़ाता नहीं है, रोता करता है।

६ पूर्णविराम, अर्द्धविराम, आदि विराम चिन्ह बोलने में भी होते है, ठीक वैसे ही जैसे लिखने में होते है। इसी नाप तोल से नियमित स्वर में पढ़ना और बोलना चाहिये।

सम्मेलनों, सेमिनारों, से सम्बन्ध

हर बरस दो बड़े मेले लगते हैं। प्रशासक शिरोमणि elite administrators का मेला दिसम्बर में भरता है। कोई १२० विशेषज्ञ

आमंत्रित किये जाते हैं। इनमे जो अधिक बातूने होते हैं, कहना चाहिये जिन्हे भाषण आदि खेलों का अधिक शौक होता है, वे स्टेज पर बैठते हैं। इनके सामने प्रशसक श्रोता गण के रूप में अन्य ईलिट प्रशासक बैठ जाते हैं। मेला कोई चार दिन चलता है। ये डेढ सौ विशेषज्ञ शिक्षा प्रशासन की नई नई विधियां ढूंढते हैं। अन्य देशों की विधियो पर विचार करते हैं। गावो के मास्टर और एच० एम० ज्यादा से ज्यादा और जल्दी से जल्दी बदली चाहते हैं, इसकी रोक थाम पर विचार करते हैं और पास करते हैं कि इन्हे सुभीता देने के लिये शहरियो को नहीं हटाया जा सकता कभी कभी यह भी पास करते हैं कि तीन बरस से पहले बदली नही हो सकती। परन्तु यह पास नही किया जाता कि तीन बरस के बाद इन्हे शहर में कर दिया जायेगा।

दूसरा मेला मई या जून में भरता है। लगभग सदा ही यह मेला आबू परवत पर लगता है। कोई १५० शिक्षा शास्त्री, कहना चाहिये विद्या शिरोमणि—elite educationists अपनी-अपनी योजनायें लेकर आबू पर्वतमाला के शिखर पर बैठते हैं। यह अच्छा मेल बैठता है कि शिखर के लोग शिखर पर ही बैठें। Elite people deserve elite places. इन दोनों मेलों की रचना में कई सावधानियां बरती जाती हैं। सबसे बड़ी सावधानी यह बरती जाती है कि कोई गांवो का एच० एम० इन मेलो मे न आ बैठे। आमन्त्रित करने का प्रश्न ही नहीं है, उत्सुकतावश अपना खर्चा लगाकर कोई आये तो प्रवेश निषिद्ध है। कोई ८० प्रतिशत स्कूल गांवो मे हैं। आज तक गावो से एक भी हैडमास्टर नही बुलाया गया। दोनों मेलों में २५ प्रतिशत के आसपास सभागी हैडमास्टर ही होते हैं। सब ईलिट स्कूलो से ही उठाये जाते हैं। गांवो के एच० एमों० को परे रखने के नियम का कड़ाई से पालन होता है। इस नियम का केवल एक अपवाद पाया जाता है। सन् १९६८ की बात है। विद्याशिरोमणि का

तीसरा महोत्सव सदा की भांति आबू पर्वतमाला के शिखर पर रखा गया था। मई १८ से २४ तक पूरे सात दिन चला था। श्री लाडलीशरणजी बहुत पहले से ही उछल कूद मचा रहे थे कि मुझे इस उत्सव में शामिल किया जाये। लाडलीजी ने अपने हक की दलीलें पेश करते हुये कहा कि मैं महीने दो महीने में निरीक्षक बनने वाला हूं। इतना पुराना आदमी हूं कि मेरे शामिल होने से किसी भी शहरी को एतराज नहीं होगा। लाडलीजी के पुरानेपन को देखते हुये और चंद दिनों में विद्यालय निरीक्षक बन जाने की पक्काई को देखते हुये, पर्वत शिखर पर बुला लिया गया। श्री लाडलीशरणजी उसी बरस विद्यालय निरीक्षक की ग्रेड में चले गये। लाडलीजी १९६८ में झुंझुनूं जिले में कुहाड़ वास की सैकण्डरी स्कूल के एच० एम० थे।

उन सम्मेलनों पर होने वाले खर्च का अनुमान नहीं लगाया गया क्योंकि इनका टी.ए., डी. ए. इनके कार्यालयों से ही दिया जाता है। फोटू खिचाना, फोटू के ब्लोक बनाना, उन्हें शिविरा में छापना, आबू, जयपुर जैसे डबल डी. ए. वाले स्थानों का डी. ए. देना, फस्ट क्लास का किराया, आबू जैसे दूरस्थ बोर्डर के स्थान पर जाना, सप्ताह भर रास रचाते रहना, आदि बातों को ध्यान में रखते हुये खर्चा बहुत ज्यादा होना चाहिये और फिर उपादेयता क्या? सब के सब निर्णय एक पक्षीय और अधूरे होने के कारण, उन्हे लागू किये नहीं जा सकता। अपव्यय! तेरा प्रलोभन कितना प्रबल है!

●●●

२०

निदेशक, उपनिदेशक, निरीक्षक, हैडमास्टर, मास्टर क्लर्क और चपरासी।

निदेशकों में आर. डी. थापर को आज भी विभाग प्रशंसनीय शब्दों मे याद करता है। थापर साहब की न्याय प्रियता, श्रमप्रियता भावस्थायित्व, विचार परिपक्वता, स्तरीय आचार विचार, और रहन सहन आदि गुणो ने सभी कर्मचारियो मे एक भरोसे की भावना भर दी थी। अधिकारी और अधीनस्थ के बीच तथा अधिकारी और जनता के बीच एक भरोसे की खाई Credibility gap होती है। यह खाई थापर साहब के केस में कभी नही रही। अंगनपुरीवाले एच० एम० की दृष्टि से इनमें एक दो कमजोरिया भी थीं। वे प्रतिबद्ध अधिकारी Committed officer नही थे। सरकार द्वारा स्वीकृत नीति रीति के प्रति कोमिटिड नही थे। वे वहां अधिक सफल

होने के बहां विश्वास काम की जरूरत हो और Credibility gap भरना हो। दूसरी कमी यह थी कि दफ्तर के बाहर मैदान में जाकर हजारों की भीड़ को सम्बोधित करना उन्हें कम जंचता था। इनमें एक बड़ी विशेषता थी, गुमनाम रहने की, Anonymity की। चमत्कारी सफलता, spectacular success की धुन इनमें प्रवेश नहीं करती थी। इन्हें अपने पब्लिसिटी, प्रचार का शौक बिल्कुल नहीं था। ऑफिस समय में अपना तन मन पूरा सरकारी काम में लगा देना और शाम सवेरे अपने परिवार में रहना यही इनका स्वभाव था। आर. डी. थापर साहब आदर्श और सफल अधिकारियों में हैं। उनकी पूर्ण सम्पन्नता की कामना है।

श्री के. एम. मेहता १९५७ से १९६४ तक रहे। परम्पराओं और मर्यादाओं में रहना, दिनचर्या को ठीक निभा लेना, मजबूती देखो से अपने आदर्श वाक्य लेना आदि इनकी विशेषतायें हैं कुछ नियमित, कुछ अनियमित, कुछ अच्छा, कुछ बुरा आदि के मिश्रण में इस मिश्रित दुनिया में अपना गाड़ा रडकाते रहने के अभ्यस्त हैं। कुछ प्रतिबद्ध Committed कुछ अप्रतिबद्ध non Committed होने के कारण किसी को अखरते नहीं है। इसलिये सचिवालय में फिट बैठते हैं। कुछ गुमनाम Annonymous, कुछ सपना प्रचार Publicity पाने के इच्छुक, माया और राम दोनों को ही थोड़ा थोड़ा प्राप्त कर लेते हैं। इस मिश्रण का अनुपात कभी कभी बिगड़ जाता है तो इधर से उधर सरक जाते हैं। सन् १९५७ में १९६४ तक सात बरसों में जब अनुपात बिगडन लगा तो निदेशक के पद को छोड़ कर यानी विभाग बदल कर अन्यत्र चले गये। बदलियां क्यों जरूरी है, मेहता जी की मिसाल याद रखने लायक है। एक जगह लम्बे समय तक रहने से चतुर से चतुर आदमी भी अनुपात खो बैठता है। अधिकारी में एक कमजोरी व्यक्ति पकड़ता की Individual bias की होती है। मेहता जी में यह कमजोरी है,पर धीमी और सीमित। सामने नहीं आती।

१९६४ से १९६८ में अनिलजी थे। इनके सारे काम घवे मानो इस नारे से प्रेरित हों :

गांव बिगाड, नगर सुधार,
न सुधरे तो, गावों में, पटक डाल।

अपने आदर्श में इन्हें सफलता भी खूब मिली। चमत्कारिक सफलता Spectacular success, आत्म प्रचार Self publicity का इन्हें शौक था। गुमनामता Annonymity स्थाई अधिकारी का गुण माना जाता है, पर अनिलजी प्रकाश में हिस्सा बटाना चाहते थे। मास्टर की फरयाद सुनकर तुरन्त उसका दुख दर्द दूर करना अनिलजी की विशेषता थी। निदेशकालय के दो सौ क्लर्कों से, पच्चीस अफसरों से,२६ इन्सपेक्टरों से इन्होंने खूब काम लिया। इनके काम में कभी शिथिलता नहीं आई। तन मन से अपने काम के बराबर थे। भरोसे की खाई Credibilty gap होने का ऐसे अफसरों के लिये, प्रश्न ही नहीं उठता। परन्तु राज्य के ७० परसेंट स्कूलों में यानी दूरस्थ ग्रामीण स्कूलों में अनुशासन की क्या दशा थी, यह अनिलजी नहीं जानते थे। वे दूरस्थ विद्यालय किसके थे? निदेशक जी के नहीं थे क्या? अपने तीन सौ बाबुओं और बीस अधीनस्थ अफसरों पर अनुशासन कायम करके खुश हो जाना, टाबरपना है नहीं है क्या?

अनिलजी की बात नहीं। इस दोष के सभी दोषी थे और हैं। अनिलजी कुछ ज्यादा थे। अनिलजी व्यक्ति पकड़ अधिकारी हैं। यह प्रवृति प्रबल है। जल्दी ही चौड़े में आ जाती है। कुछ व्यक्तियों को नजदीक लेकर अकाश पर चढ़ा देते हैं। इनकी सस्ती प्रशंसा और लोक प्रियता के कई कारणों में से यह व्यक्ति पकड़ना भी एक है। लगन वाले अफसर हैं। लगन पूर्ति के लिये सरकारी धन की परवाह नहीं करते।

१९६८–१९७० में हरिमोहनजी रहे। इनके बनाये परिवेश से मालूम पड़ता था कि मानो इनका स्लोगन हो.—

गोष बिगाड़, मास्टर बिगाड़, हैडमास्टर बिगाड़ ;
नहीं बिगड़े तो अनुशासन की, कारवाई कर डाल ;

इनकी प्रशासकीय कमजोरी का कारण यह था कि ये बुद्धिजीवी और दफ्तर जीवी अधिक थे। पढ़ लेना, लिख लेना, यू.डी.सी. का काम कर लेना, इस सीमा के बाहर जाना इन्हें पसन्द नहीं था। लगन की कमी थी। यू. डी. सी. की तरह नियम कायदों से ज्यादा चिपटे रहना, अनियमितताओं से परे रहना, उपद्रव करने की भावना का न होना, आदि बातें मनुष्यों पर राज करने में बाधक हैं। हरिमोहनजी सचिवालय के लिये बहुत फिट है।

१९७०—७१ में सुधीन्द्रजी थे। ये, विभागीय व्यक्ति होने के कारण, कार्य भार सम्भाल नहीं सके। भरोसे की खाई गहरी और चौड़ी हो गई थी। इतने बड़े विभाग को, लाख सवा लाख की जनता को आई. ए. एस. का आदमी ही सम्भाल सकता है।

लक्ष्मीनारायणजी गुप्त

अगस्त १९७१ में लक्ष्मीनरायणजी आये हैं। जगलपुरीवाल बाड़े से बाहर है। सुरज की सीधी किरणें अब उस पर नहीं पड़ती हैं। पर उन्होंने आते ही कहा है :—मास्टरों की दिक्कतें दूर कर दूंगा, क्योंकि मास्टर मुझसे अलग नहीं हैं। विद्यालयों का विकास कर दूंगा। विकास का फोर्मूला यह होगा कि बिखरे धन को बटोरकर कुछ स्कूलों पर लगा दूंगा और फिर इन स्कूलों मे प्रतिभाएं उठेगी। बेशुमार भर्ती से बेकारी फैलती है। इसलिए भर्ती सीमित कर दूंगा। कार्यानुभव यानी क्राफ्ट को बढ़ाकर बेरोजगारी दूर कर दूंगा। शिक्षण सस्थाओं को स्थानीय उद्योगों से जोड़ दूंगा अध्यापक बधुओं के हित को

देखकर स्थानान्तरण करुंगा।

लक्ष्मीनारायणजी पर इस किताब के दूसरे भाग मे लिखा जायेगा। पर इतना कह देना चाहिये कि अनिलजी की तरह लगन वाले और परिश्रमी हैं। विषय वस्तु की जानकारी अनिलजी से ज्यादा है। आकार प्राप्त अफसर हैं। व्यक्तिगत पकडता और लागलपेट वाले नहीं हैं। परन्तु अभी अनुभव प्राप्त न होने से अपनी सीमाओं से और विभागीय परिवेश से परिचित नही है। जंगलपुरीवाले एच. एम. ने देखा था कि पहली जगलपुरी से दूसरी जगलपुरी बिल्कुल ही भिन्न थी। इन दोनो जगलपुरियो से जालोर नाम की बस्ती बिल्कुल भिन्न। जालोर नाम की बस्ती नागोर नाम की बस्ती से भी भिन्न है। गाव, गाव से भिन्न ! बस्ती बस्ती से भिन्न। जालोर बस्ती की बातें चार महीनों मे जंगलपुरीवाले के समक्ष मे आई थी। इन सब बातों पर पूरे विवरण से अगली किताब मे लिखा जावेगा। यहा इतना ही कहना है कि प्रशासकीय विभाग एक दूसरे से भिन्न है। स्थानीय और विभागीय भिन्नताओं का ज्ञान समय पाकर ही प्राप्त किया जा सकता है। जगलपुरीवाला एच एम कहता था नई स्कूल में जाते ही नीति की घोषणा मत करो। स्थानीय परम्पराओं, स्थानीय सबध क्षेत्रो का Relationship areas का अध्ययन करो। अपनी रीति नीति के अनुसार कर्म action करना शुरु कर दो आपके कर्म आपकी रीति नीति की घोषणा आर्थिक रूप में तो कर ही देंगे। रीति नीति की जानकारी घटनावश समय समय पर देते रहो। प्रारम्भिक घोषणा मे वस्तु निष्ठा objectivity हो ही नहीं सकती। इसलिये धीरे धीरे इस घोषणा का थोथापन उघडता जाता है।

इस सदर्भ में एच. एम. स्पष्ट करते थे: ऊपर कही बात का अर्थ यह नही है कि गंगा गये सो गगाराम, जमना गये सो जमना राम, खाई मे पडा सो खेमाराम और शिखर पर चढा सो शेखरचन्द्र। नो, यह नहीं है। यदि ऐसा होता तो नरदमधा नाम की

चीज न होती । सार्वजनिक प्रशासन एक विज्ञान है । इसकी थियोरी हैं । इसके सिद्धांत सर्वव्यापक हैं । अध्यक्ष को अध्यक्षित की राय से, प्रशासक को प्रशासित की राय से संस्था आदि का संचालन करना चाहिये । यह प्रशासन का सामान्य नियम है । अटल नियम है । परन्तु *किन बातों मे और कितनी राय लेनी चाहिये, यह स्थानीय* परिस्थिति पर निर्भर करता है । स्थानीय संबंधो के क्षेत्रो का अध्ययन करना चाहिये, परम्परायें देखनी चाहियें, पिछले प्रशासको की सफलता विफलता देखनी चाहिये आदि आदि । समाज शास्त्र और समाज मनोविज्ञान की भाषा में कह सकते हैं : स्थानीय विकास स्तरो और इतिहासिक परम्पराओं के परिवेश में आम नियमों में जोड़ना, घटाना पड़ता है । खाई में जाओ तो खेमाराम की जगह खेमा रह सकते हो, और घटो तो खेमला रह सकते हो । पूरा नाम नहीं बदल सकते । शिखर पर जाओ तो शेखर की जगह शेखरचंद्र बन सकते हो, आकाशमल नहीं बन सकते । माया तेरे तीन नाम : परसिया, परसा, परसाराम । मूल नाम वैसा ही रहेगा, उपनाम में यानी नाम के उपभाग में थोड़ा चेंज आ जाता है ।

उपनिदेशक

आज तक एक भी उपनिदेशक, संयुक्त निदेशक, योग्यता लेकर नहीं आया । ऐसा मालूम पड़ता है विभाग में योग्य आदमी हैडमास्टरी से ही रिटायर हो जाते हैं । ऊपर वे ही लोग जाते हैं जो संदिग्ध योग्यता और विवाद ग्रस्त गति विधि वाले होते हैं । हैडमास्टरों मे डिप्टी डाइरेक्टर के पदों तक लोग बाग आधे डावर और आधे थोड़ होते हैं । मानव समस्याओं के प्रति दृष्टि, समस्याओं की तरफ पहुंच, समस्याओं की समाधान विधि आदि में मास्टर का वही रोल

होता है जो टाबरों का होता है। २५ बरस तक पढ़ते हैं। फिर पढ़ाते हैं। गुणात्मक अंतर नहीं आया। छोरे रौला मचाते हैं तो मास्टर लोग अगले छोरे को पीट देते हैं या खड़ा कर देते हैं। यह अध्यापकीय समाधान है। अध्यापक जब एच० एम० बनता है तो उसमें गुणात्मक परिवर्तन आ जाता है। चालीस बरस की उमर में हैडमास्टरी मिलती है। इस चालीस बरस के जीवन से पहली बार उस का नाता टूटता है। जो मास्टर, हैडमास्टर बनने से पहले ही रिटायर हो जाता है, वह अधूरा आदमी ही मरता है। जीवन यों ही जिया गया। परन्तु चालीस बरस में जो आदतें पड़ी हैं और एच० एम० बनने के बाद भी जिन आदतों का थोड़ा उपयोग है, उनकी वजह से विभागीय अफसर जन्म भर आधा टाबर और आधा वयस्क रहता है। उचित ही है कि निदेशक के पद पर प्रशासनिक सेवाओं से नियत करके, काम चलाया जाता है।

विद्यालय निरीक्षक

अधिकांश निरीक्षक अधूरे अफसर हैं। जंगलपुरीवाले को केवल दो निरीक्षक जचे हैं। श्री नेहपालसिंह और १९७१ में निरीक्षक बने, चिरंजीलालजी भट्ट। एक अपनी अफसरी के कारण और दूसरा अपनी सज्जनता के कारण। श्री नेहपालसिंह को किसी भी दृष्टि से देखो, योग्य निरीक्षक साबित होंगे। विद्यालयों की सब प्रवृत्तियों, विभागों की तरफ वे समान रूप से सचेष्ट हैं। इनके लिये कोई कार्य कलाप उपेक्षित नहीं और किसी एक की तरफ ज्यादा झुके हुये नहीं। प्रशासन की, अनुशासन की बातों की तरफ सचेष्ट रहते हैं। स्टाफ के, बच्चों के हाजरी रजिस्टर देखना प्रार्थना स्थल पर हाजिर होकर स्कूल की शुरुआत देखना, अंतिम पीरियड्स की गति विधि देखना,

आदि इनकी विशेष बातें हैं। इनकी बुलायी हैडमास्टरों की सभा में बैठो तो आप को लगेगा कि विषय विशेषज्ञ क्लास ले रहा है और उत्सुक छात्र ध्यान मग्न सुन रहे हैं। इनके पास सब तरह की जानकारी का बड़ा भंडार रहता है और ये हैडमास्टरों को, मानो सिखा कर, होशियार बनाना चाहते हैं। स्वभाव से सख्त हैं, पर तनाव की सीमा से पहले ही जहां तहां छोटी छोटी छूट देते रहते हैं, उपयुक्त मौकों पर डोर को ढील देते रहते हैं। परिवेश को चिकना-चुपड़ा रखने के लिये खाने पीने की कोई चीज मंगा देना, कोई चुटकले फेंक देना, इनके कार्य-शैली के अंग हो गये हैं। पैसे की दृष्टि से इनकी इमानदारी भी इनके प्रशासन में इनकी मदद करती है। शिक्षा प्रशासकों और हैडमास्टरों को नेहरानजी से सीखना चाहिये।

चिरंजीलालजी भट्ट राजी रख कर राज करते हैं। कोई भी अधीनस्थ कर्मचारी इनसे नाराज नहीं मिलेगा। इनकी हरएक गति विधि में मितव्ययता मिलेगी। अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करेंगे। आवश्यक हस्तक्षेप से आंख नहीं मीचेंगे। पैसे की इमानदारी और सहयोगियों से इमानदारी, इनके कार्य संचालन में सहायक हैं। घर पर अकेले होते हुये भी आये गयों की भोजन व्यवस्था पूरी करते हैं। खुद दूसरे की रावड़ी रोटी खायेंगे नहीं और अपनी रावड़ी रोटी खिलाने से चूकेंगे नहीं।

एच० एम० इन अफसरों की आलोचना पर बहुत बातें कहा करता था जिनका विवरण दूसरे भागों में दिया जायेगा। एच० एम० कहता : मास्टरों को प्रिविलेज लीव देने के लिये ये अफसर तैयार ही बैठे रहते हैं। सेमिनार में, वर्कशोप में, छोटी मोटी ट्रेनिंग में, ये अफसर लोग मास्टरों को बुलाते ही रहते हैं। टी. ए. डी. ए. का खर्च तो सरकार का बढ़ता है, यह तो बुरा है ही। पर यह

तो सरकार जाने। जगलपुरी वाले की अपने विद्यालय के हित मे एक बड़ी शिकायत थी कि इन सदिग्ध लाभो के लिये मास्टर को प्रिविलेज लीव दी जाती है। मास्टर की १५ कची छुट्टियां हैडमास्टर को परेशान करती रहती हैं। मास्टर के पास छुट्टी क्या है, एक लोडिड गन है जिसकी फायरिंग चाहे जब एच० एम० पर की जा सकती है। स्कूल से चिपका रहने वाला एच० एम०, मास्टर की छुट्टी से जितना घबराता है, उतना विद्यालयी दूसरी कठिनाइयो मे नही घबराता। पीरियड बदलने पर पाच मिनट क्लासें खाली रहती हैं, एच० एम० को दौड कर ओफिस से बाहर आना पडता है। अनुभवी एच० एम० पीरियड बदलते ही बाहर आ जाता है, जिससे कि शोर कम हो और मास्टर लोग जल्दी ही अगले पीरियड मे चले जायें। स्कूलो की कुछ ऐसी प्रैक्टिस होती जा रही है, मानो प्रत्येक पीरियड एच०एम० शुरु करवाता है।

निदेशको, निरीक्षको आदि पर यह एक उचित आक्षेप है कि वे यह भूल जाते हैं कि एक क्लास भी एक मिनट के लिये खाली नहीं रह सकती। ऐसा लगता है, अफसरों को सारी बातें Practices गुप-चुप खो कर की जाती है। दिये जा रहे हैं मास्टरो को पी एल. पर पी. एल.। यहा तक होता है कि निरीक्षक, छुट्टियो मे, मास्टरो को अपने दफ्तर मे बुला लेता है। उन से क्लर्कों का काम करवाता है और एच० एम० को आदेश दे दता है कि इसकी सेवा पुस्तक मे पी. एल. क्रेडिट करदो। एच० एम० मानो फिर अपने ही हाथ मे अपनी ही डाल काटता है। निदेशक महोदय भी कब चूकते है। सीनियोरिटी लिस्ट बनती है, गोपनीय रिपोर्ट सभालनी है, मास्टरो को बुलाते है और पील एल क्रेडित हो जाती है। और फिर एच० एम० पर रिमार्क देते है कि अनुशासन खराब है। एक मिनट क्लास खाली नही रह सकती, विद्यालयों की इस विशेषता को जो अफसर नहीं जानता, वह शिक्षा विभाग का वैरी है। क्रूर शत्रु है। घुम-

पेठिया है। शिक्षाधिकारी वह है जो हर क्षण अपने निर्णयों और कामों में *Practices* में इस कठोर सत्य से *Hard fact* से प्रेरित हो कि क्लासें एक मिनट के लिये भी खाली नहीं रह सकती। मास्टरों को सौ सुभीता दो, पर पी. एल. मत दो। कुछ सिद्धान्तकार चिल्लायेंगे कि पीरियड दूसरे टीचर के लगादो। परन्तु व्यवहार में यह आसान नहीं। यह संयोग Coincidence कहां बैठता है कि टीचर उपलब्ध है, उसी विषय का जानकार है, उसी क्लास के स्टण्डर्ड का है, परिश्रमी भी है, पाठ की तैयारी करने को उत्सुक है, लगन भी है, आदि आदि। नो। सब संयोग नहीं बैठ सकता। इस बात में मास्टर दूसरे कर्मचारियों से भिन्न है। जो बात मास्टरों पर लागू है, वह एच० एम० पर भी लागू है। एच० एम० को चाहे जब बुला लिया जाता है। मास्टर की गैरहाजरी में एक क्लास, दो क्लास बिगड़ती है। पर एच० एम० की गैरहाजरी में सारी क्लासें बिगड़ जाती हैं और ऐसा लगता है जैसे स्कूल में रेसेस है। बीच वाली छुट्टी है। इस सारी शरारत में शिक्षा बोर्ड भी शामिल है। वह एच० एमों० को सुपर वाइजर इन्वीज, मान्यता निरीक्षक आदि बना कर भेज देता है। ये लोग भूल जाते हैं कि शिक्षा कार्य अन्य कामों से भिन्न है। शिक्षा कार्य का ज्ञान लोन नहीं होने से मास्टर लोग कामचोरी की पकड़ में नहीं आते। बस यही सबसे बड़ा रोग है। महारोग की इस दुनिया में निरीक्षक आदि निकलते हैं, फिर भी गलती करते हैं। यह उनके आचरण पर व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी है। शिक्षा बोर्ड से तो उम्मीद ही क्या की जाये? वह तो योजनाओं में मग्न है, और धन विराग में मग्न है।

तीक्ष्ण बुद्धि, चतुर एच० एम० का, मंद बुद्धि, मंद चतुर अधिकारी में कोनफ्लीक्ट है। Intelligent and skilled headmasters are always in conflict with mediocre officers शिक्षा की खबरों में कई प्रकार के कोनफ्लिक्ट दिखाते हैं। इस कार्य

में एक महत्वपूर्ण कोनफ्लीक्ट और भी है। चतुर तथा तेज अकल आदमी मंद बुद्धि और अव्यवस्थित आदमियों से तुरन्त चिढ़ जायेंगे और इनका आपस में कभी मेल नहीं होगा। सरकारी मिनिस्टरों को चाहिये कि पोस्टिंग करते समय और कामों का आवंटन करते समय इन बातों का ध्यान रखें। विद्यालयों में तीक्ष्ण बुद्धि और परिश्रमी छात्रों का चिंतन और आचार विचार मंद बुद्धि छात्रों से कभी मेल नहीं खायेगा। इसे हम बौद्धिक तनाव Intellectual Conflict कह सकते हैं।

टीचर्स

गरिमा और महत्व की दृष्टि से टीचर्स का वर्गीकरण यह है। १. आठवीं क्लास तक के प्राइमरी टीचर्स २. ऊपर ग्यारह तक के सेकण्डरी टीचर्स ३. ऊपर विश्वविद्यालयी टीचर्स, ४. मेडिकल टीचर्स तथा ५. इंजीनियरिंग टीचर्स।

ऊंची पढ़ाई, ऊंचा टीचर। नीची पढ़ाई, नीचा टीचर। घटिया विषय, घटिया टीचर। बढ़िया विषय, बढ़िया टीचर। घटिया विषय, घटिया अनुशासन। बढ़िया विषय, बढ़िया अनुशासन। सेकण्डरी स्कूलों में संस्कृत और क्राफ्ट घटिया विषय हैं। इन दो विषयों की क्लासों में अनुशासन की समस्या बनी ही रहती है। इसमें छात्र भाग जाते हैं। क्लास पूरी होती है तो रौला होता है। ये दोनों विषय यदि अन्तिम पीरियड यानी आठवें में रख दिये जावें तो सब छोरे भाग जायेंगे। सातवें में ये रखे जायेंगे और आठवें में ड्रॉइंग रखा जायेगा तो भी सातवें में भगने का प्रलोभन बना ही रहता है। पहले पीरियड में ये दोनों विषय रखे जायेंगे तो समय पर आते ही छात्र भागेंगे। शनिवार के दिन यदि इन विषयों को तीसरे पीरियड में रख दिया तो रेसेस के बाद कोई नहीं रुकेगा।

इस प्रकार ये दो विषय एच० एम० के लिये समस्यायें हैं। इनके टीचर्स के लिये भी समस्यायें हैं। बहुत से समझदार टीचर अपनी लाज बचाने के लिये, अपने पीरियड में दूसरे विषय पढ़ाते हैं। आर्ट्स के सामने साइन्स बड़ी है। साइंस का मास्टर भी बड़ा है। सीखने में अंग्रेजी कठिन है। हिन्दी आसान है। इसीलिये साइंस क्लासों का अनुशासन, आर्ट्स की क्लासों से अच्छा है। अंग्रेजी का अनुशासन हिन्दी से अच्छा है। अनुभवी एच० एम० साइन्स अंग्रेजी आदि अन्तिम पीरियडस में रखते हैं। घटिया विषय दूसरे, तीसरे और छठे में रखे जाते हैं। सब वर्गों के टीचरों में मौलिक समानता है। यह समानता दुर्भाग्य और सौभाग्य दोनों परिस्थितियों में है। टीचर के दुर्भाग्य की परिस्थितियां ये हैं-

१. टीचर का पब्लिक से काम नहीं पड़ता, इसलिये पब्लिक में टीचर का कोई स्थान नहीं है। छात्र के माध्यम से बहुत ही अप्रत्यक्ष सम्बन्ध गार्जियन से जरूर है पर यह इतना फीका है कि सम्पर्क स्थापना का प्रश्न ही नहीं उठता।

२. प्रत्येक क्लास में एक बड़ा प्रति सैकड़ा छात्रों का ऐसा होता है जो टीचर की पढ़ाई को महत्व नहीं देते। कुछ के समझ में नहीं आता कुछ टीचर से अधिक किताबों को महत्व देते हैं। ऐसे लड़के क्लास में नहीं आते हैं जो टीचर अपमानित फील करता है। आते हैं और बातें करते हैं तो टीचर का अपमान। बहुत से छात्र उत्थान-पतन की दृष्टि से बेंच बजाते हैं। हिलते हैं, कुर्सी रगड़ते हैं आदि

शिक्षा प्रक्रिया के लोकतन्त्रीकरण हो जाने के बाद अब विश्वविद्यालय और महाविद्यालय टीचर भी इस दुर्भाग्य के शिकार हो गये हैं। ज्यादा दुखी वे टीचर हैं जिनके पास साधन नहीं है। या उनमें सिखाने की कला नहीं है। सिखाने

की अनेक कलायें और सिद्धांत आजकल ढूंढे गये हैं। परन्तु सब परिस्थितियों में काम देने वाला तरीका एक ही है। और वह प्राचीनतम तरीका है भाषण के साथ प्रश्न पहले प्रश्न करो, एक सेकण्ड ठहरो और फिर उस प्रश्न पर लेक्चर दो। Lecture Cum Question Method है यह। बिना प्रश्न के लेक्चर कोई नहीं सुनेगा, बिना लेक्चर के प्रश्न बेकार। यह सर्व व्यापक तरीका है। इस पर मास्टरी कर लेनी चाहिये।

प्राचीन काल मे सिखलाई के काम मे गुरू का एकाधिकार था, अब नहीं है। रेडियो, किताबें, पत्र पत्रिकायें, बाजार नोट आदि बहुत हैं। गुरु केवल भाषण कला और प्रश्नों की विविधता से ही छात्रों को खींच सकता है।

अध्यापक का सौभाग्य

जहां टीचर के अंतरस्थापित दुर्भाग्य हैं, वहां टीचर के अंतरस्थापित सौभाग्य भी बहुत हैं।

टीचर काम करना चाहे तो काम बहुत है। और अगर काम करना न चाहे तो कुछ भी काम नहीं है। बिना काम किये अगर किसी को पूरी तनखा मिल सकती है तो वह टीचर ही है। यह सौभाग्य दूसरे किसी भी सरकारी कर्मचारी को प्राप्त नहीं है।

अपने हैडमास्टर से यानी अपने अफसर से सदा लड़ता है और और सदा ही जीत मे रहता है। दूसरा कोई भी सरकारी कर्मचारी इस सौभाग्य का दावा नहीं कर सकता। स्कूल का क्लर्क भी एच० एम० को नाराज करके अपना निभाव नहीं कर सकता।

३. टीचर का काम बिना किये ही हो जाता है यानी बिना पढ़ाये ही छोरे पास हो जाते हैं। पास न भी होवें तो टीचर कहदेता है, छोरों के दिमाग नहीं है। परिश्रमी नहीं हैं। पीछे की कमजोरी हैं।

४. टीचर के काम मे जान माल का कोई जोखिम नहीं है। भूल हो जाने का भी जोखिम नही है। जोग सजोग, घाम आदि का भी जोखिम नहीं है।

५. उसके पास खोने को कुछ नहीं है। पराई जोखिम मे उसके पास छात्रों की उत्तर पुस्तिकायें, कापियां होती है। केवल एक महीने के लिये किसी किसी मास्टर के पास बोर्ड की उत्तर-पुस्तिकायें आती हैं। न उसके पास चाबी है, न सरकारी कागज पत्र हैं, न कोई चार्ज है

६. टीचर कभी गलती, भूल नहीं कर सकता। वह कभी अपराधी नहीं बन सकता। वह सदा-सुहागन नार है।

जो भाषण कला, और लेखन कला का शौक नहीं रखते उन मास्टरों का जीवन नीरस और फीका होता है। इस बोरडम को दूर करने के लिये वे राजनीतिक नेताओं से सम्पर्क करते हैं, आपस में ईर्ष्या, द्वेष करके गुट बाजी तैयार करते हैं और फिर इस मनोविनोद का आनन्द लेते हैं।

टीचर्स अच्छे या बुरे ?

एच० एम० कहता है मेरा स्टाफ खराब है। टीचर कहता है हमारा एच० एम० खराब है। यह सदा ही सुनने को मिलता है

तैर मिलेगा। निष्पक्ष निर्णय यह है कि मास्टर खराब नहीं है। हैड-मास्टर खराब नहीं है। थोड़े थोड़े दोनों वर्गों में ही खराब है। सौभाग्य से स्टाफ का मर्मस्थल Core अच्छा मिल जाता है तो किनारों पर पड़े बुरे मास्टर निष्क्रिय रहते हैं और स्कूल ठीक चलता है। दुर्भाग्य से मर्मस्थल Core खराब मिल जाता है और किनारे पर पड़े अच्छे मास्टर निष्क्रिय रहते हैं और स्कूल बिगड़ जाता है। हैडमास्टर की सब कलायें भी बेकार हो जाती हैं। दिसम्बर १९६८ से अगस्त १९६९ तक नौ महीने जगलपुरी में साइन्स का स्टाफ और एक दो आर्ट्स के मास्टर स्टाफ में मर्मस्थल बन गये थे जिन्होंने स्कूल का सर्वनाश कर दिया। जगलपुरीवाला जब सामने से हट गया तो ये मास्टर स्थानीय जनता से लड़ पड़े और पुलिस केस तक हुआ। जंगलपुरी मे १९६१ से १९६५ तक ऊंचे दर्जे के मास्टर थे। १९६५ से १९६८ तक मध्यम श्रेणी के थे। और दिसम्बर १९६८ से जुलाई १९७० तक निकृष्ट श्रेणी के टीचर थे। स्थिति का सामान्यीकरण करते हुये जगलपुरीवाला कहा करता था :—

सारा स्टाफ सदा ही बुरा नहीं हो सकता। कुछ स्टाफ सदा बुरा रहेगा। अधिकांश स्टाफ सदा अच्छा रहेगा। कुछ समय के लिये सारा स्टाफ अच्छा मिल सकता है। कुछ समय सारा स्टाफ बुरा मिल सकता है। एच० एम० को सब परिस्थितियों के लिये तैयार रहना चाहिये। काबू से बाहर स्थिति हो जाय तो दूसरी जगलपुरी में बदली करवा लेनी चाहिये।

यह भागे सिखाता : बड़े शहरों मे एच० एम० के विरुद्ध कोई टीचर नहीं होता। गांवों में एच० एम० के पक्ष मे कोई नहीं होता। छोटे कस्बों मे टीचर्स मे दो दल होंगे। एक पक्ष में, दूसरा विपक्ष में।

सफल टीचर

पाठन शैली आदि पर विस्तार से अगली किताब में लिखा जायेगा। पर टीचर के सदर्भ में कुछ लिख देना जरूरी है। पढ़ाई का स्तर ज्यों गिरता है त्यों टीचर की ट्रेनिंग पर जोर देते हैं। बस यही सब मुसीबत की जड़ है। टीचर के पास दो चीजें मूल रूप में होनी चाहिये : विषय की जानकारी और परिश्रम। जहा तक संप्रेषण का सवाल है, यह चीज दूसरे कदम के रूप में आवश्यक है। व्याख्यान और इसके बीच बीच में प्रश्न। व्याख्यान के शुरु में प्रश्न और व्याख्यान के अंत में प्रश्न। प्रश्न बनाना, छांटना एक कला है। प्रश्न कई प्रकार के होते हैं :

१. वे प्रश्न जिनके उत्तर की अपेक्षा नही है। श्रोताओं के कान खडा करने के लिये पूछे जाते हैं।

२. हां, ना के उत्तर वाले प्रश्न।

३. एक लाइन से पांच लाइन में उत्तर वाले प्रश्न। लम्बे उत्तर वाले प्रश्न ग्यारहवीं कक्षा तक नहीं होने चाहिये। संप्रेषण के लिये भाषण कला की आवश्यकता है। यह खेद की बात है कि इस आवश्यक गुण की उपेक्षा की जाती है। शिक्षा के लोकतन्त्रीकरण हो जाने से क्लासें बड़ी हो गयी हैं। क्लास एक छोटी सी सभा, असेम्बली बन गई है। जिस टीचर और एम० एम० में भाषण कला नही, अब आजकल सफल नहीं हो सकता। कोलिज टीचर के लिये यह पहली आवश्यकता है। संप्रेषण के सदर्भ मे अगली बात उदाहरण की है। लोकसभा की बात समझाने के लिये ग्राम पंचायत से शुरु करना चाहिये। प्रत्येक विषय को वर्तमान समस्या और नवीनतम जानकारी

से सह-संबंधित Co-relate करना चाहिये । संप्रेषण Communication के संदर्भ में अंतिम और सर्वोपरि बात है, श्रोतागण का पूर्वज्ञान । भाग सिखाने से पहले यह जान लेना चाहिये कि गुणा, बाकी आदि छात्र जानते हैं कि नहीं । भारत और दुनिया के चार चार नक्शे–प्राकृतिक-राजनीतिक हर क्लास में टगे रहने चाहिये जिससे संदर्भ समझाये जा सके ।

टीचर का रुख, आचरण आदि

Teachers Attitude And Behaviour patterns

टीचर को सुधारे बिना पढ़ाई की समस्यायें नहीं सुलझाई जा सकती । इस किताब में विद्यार्थी सम्बन्धों पर बहुत लिखा गया है । बताया गया है कि विद्यालय जगत में छात्र समुदाय एक जनता हैं । मास्टर और हैडमास्टर के लिये छात्र ही जनता है । इसी छात्र समुदाय के प्रति मास्टर अन्त में उत्तरदायी है Accountable है । उत्तरदायित्व के इस सिद्धांत को, Accountability principle के इस पक्ष को, स्वीकार कर लेने से ही टीचर परिश्रम करेगा, अपने रुख और आचरण को यथावश्यक सुधारेगा ।

Student community is the ultimate anthority in the teaching process relations, in the teaching learning production relations, so to say.

एक बात और । कुछ पिछड़े हुये शिक्षा शास्त्री कहते हैं विस्तार बहुत हो चुका है । अब स्तर ऊंचा किया जाय और विस्तार

रोका जाय। ये धान्धी अक्ल के मंच हैं। मझ्या बल में से बुद्धि बल उगता है। बड़ी स्कूल, बड़ी क्लास में से ही प्रतिभायें पैदा होती है। भीड़ में से प्रतिभायें और लीडर निकलते हैं। तथा कथित *पब्लिक स्कूलों से प्रतिभायें और नेता न तो निकलते हैं और न* निकलेंगे। एक क्लास में साठ छात्र होंगे तो उनमें प्रतिभायें भी होंगी और नेता भी होंगे। टीचर का जी मोहरा हो जायेगा। टीचर सावधान भी हो जायेगा। हमारा नारा है : एक क्लास साठ छात्र।

****

२१

जंगलपुरीवाले के प्रशासन की विशेषतायें

उसके प्रशासन का पूरा विवरण, अन्य हैडमास्टरों के साथ ही अगली किताब में किया जायेगा । पर विशिष्ट बातों में से कुछेक यहां गिनाई जा रही हैं । जंगलपुरीवाला सार्वजनिक धन और सम्पति की मितव्ययता पर बड़ा जोर दिया करता था । उसने सरकारी खर्चे पर कभी फर्स्ट क्लास में यात्रा नहीं की । बत्तीस किलोमिटर दूर उपकोष से महीने में केवल एक बार सब बिलों का पैमेंट एक बार ही लाया करता था । यह एक बेजोड़ मिसाल है ।

अपनी तेतीस बरस की नौकरी में उन्होंने कभी भी चिकित्सा खर्च Medical Reimbursement नहीं लिया । अपवाद स्वरूप १९७०-७१ में उनकी पत्नी की बिमारी के एक बार में लगभग दो सौ रुपये लिये । स्कूल संचालन की निरन्तरता के इतने कट्टर

पक्षपाती थे कि उन्होंने अपनी तैंतीस साल की नौकरी में एक दिन की भी छुट्टी नहीं ली। आकस्मिक छुट्टी भी नहीं ली।

शिक्षा बोर्ड की ड्यूटी पर कभी नहीं गया। सेमिनार ट्रेनिंग आदि में कभी नहीं गया। विभाग ने उन्हें कभी भी ड्यूटी पर नहीं बुलाया। वे कभी लेट नहीं रहे। उन्होंने कभी भी स्कूल को बीच में नहीं छोड़ा। उनकी सयमी आदतों का प्रशासन पर अच्छा प्रभाव पड़ता था। उन्होंने कभी चाय नहीं पी, कभी पान नहीं खाया, कभी सिनेमा नहीं देखा। कभी फर्स्ट क्लास में नहीं बैठा। सात आठ बरसों से उन्होंने हुक्का चिलम भी छोड़ दिया। जंगलपुरियों में रहने के कारण उन्होंने आज जनवरी १६७२ तक कभी टेलीफोन से बात नहीं की। फोन को हैंडल करना वह जानता भी नहीं है। उसने लिखित में या जबानी कभी भी अधीनस्थ कर्मचारी की शिकायत अफसर से नहीं की। हां, अधीनस्थ कर्मचारियों ने १९६८ और १९६९ में खूब शिकायत की। अधीनस्थ कर्मचारी से उसने कभी एक पैसे की चीज नहीं ली। सामान सप्लाई करने वालों से एक पैसे की चीज स्वीकार नहीं की। डायरी तक नहीं ली।